गुरु का प्यार

सन्तों के वचन हैं-- पिता स्यों माता सौ गुणा सुत स्यों राखत प्यार।
माता स्यों हरि सौ गुणा हरि स्यों गुरु सौ बार।।

वर्णन करते हैं कि जितना स्नेह और प्यार एक पिता का अपने पुत्र से होता है उससे सौ गुणा अधिक ममता माता को अपने पुत्र से होती है। जितनी ममता माता कोअपने पुत्र से होती है उससे सौ गुणा अधिक प्यार ईश्वर को अपनी जीव सृष्टि से,भगवान को अपने भक्त से होता है।जितना प्यार ईश्वर को संसार के जीवों से होता है उससे सौ गुणा अधिक प्रेम सतगुरु को अपने शिष्यों से,सेवकों से होता है। वो कैसे इसे समझें।

पिता का अपने पुत्र से स्नेह होना स्वाभाविक है क्योंकि वह उसका अपना अंश है। पुत्र के पालन पोषण के लिये दिन रात दौड़ धूप करके परिश्रम करके धन कमाकर उसके खाने पीने की व्यवस्था करता है। पुत्र को सदा सुखी रखने का हर सम्भव प्रयत्न करता है।उसे कुसंगति से बचाकर रखता है।उसमें शुभ संस्कार डालता है। पुत्र अगर मेले में कहीं गुम हो जाये या मित्रों के साथ गया हुआ शाम को घर वापिस न आये या किसीअसामाजिक तत्वों के हाथ पड़ जाये तो कितना चिन्तित बेचैन और परेशान हो जाता है क्योंकि उससे हार्दिक स्नेह है उसकी सारी सम्पत्ति का वारिस है।अपने सारे जीवन की की हुई कमाई अपने पुत्र को सौंपकर प्रसन्नता अनुभव करता है। लेकिन माता की ममता इससे सौ गुणा अधिक होती है।वह सौ गुणाअधिक इसलिये कहा गया है कि बच्चे के जन्म से पहले से ही माता के हृदय में ममता हिलोरें लेने लगती हैं। बच्चे का मुख देखने को लालायित रहती है। अपने अंश से उसे सींचती है कष्ट उठाकर उसे जन्म देती है। उसके सभी सुखों का केन्द्र उसका पुत्र हो जाता है। हर पल हर क्षण उस की सुरति अपने बच्चे में ही रहती है।बाहर बादल गरज रहे हों पानी बरस रहा हो माँ सो रही हो उसे बिल्कुल पता नहीं चलता नींद नहीं खुलती लेकिन बच्चा ज़रा सा कुनमुन कर दे तो उसकी नींद खुल जाती है।आप गीली जगह पर सो लेती है बच्चे को सूखी जगह पर लिटाती है।बच्चे के ज़रा से रोने पर घर के सारे काम काज छोड़ कर उसे गोद में उठा लेगी चाहे बच्चा मिट्टी से कितना ही लथपथ हो मैला कुचैला हो उसे गोद में उठा लेगी उसे ज़रा हिचक्चाहट या गुरेज नहींहोता।पिता की गोद में देने के लिये उसे नहलायेगी धुलायेगी साफ सुथरा करेगी। पिता बच्चे को गोद में लेना चाहता है लेकिन तब,जब वह साफ सुथरा हो। जब तक माँ उसे साफ न करदे। लेकिन माँ ऐसा नहीं कर सकती।पुत्र अगर पिता की आज्ञा नहीं मानता उसके विचारों के अनुसार नहीं चलता या कुसंगति में पड़ गया हो तो वह पुत्र को त्याग भी सकता है पुत्र पिता के स्नेह से वंचित भी हो सकता है। पिता अपने स्नेह और सम्पत्ति से वंचित भी कर सकता है लेकिन माता का हृदय ऐसा नहीं कर सकता। पुत्र चाहे बुद्धिहीन हो, विक्षिप्त हो या कहीं कुसंगति में भी पड़ जाये तो भी मां की ममता में कुछ भी फर्क नहीं पड़ता।वह पुत्र को सही रास्ते पे लाने का हर सम्भव प्रयत्न करती है। माता की ममता अपने पुत्र से कितनी होती है उसके लिये प्राचीन समय की एक घटना का वर्णन मिलता है।

एक परिवार में केवल दो प्राणी थे माँ और बेटा। बेटे का बाप मरने से पहले काफी धन छोड़ गया था।बेटा माँ के लाड़ प्यार और अधिक धन के मिल जाने के कारण कुसंगति में पड़कर धन का अपव्यय करने लगा। कुसंगति में पड़ जाने के कारण वह एक वेश्या के प्रेम जाल में फँस गया। मां के समझाने बुझाने पर भी वह सही रास्ते पर न आया।माँ उसे समझाती बुझाती कुमार्ग पर जाने से रोकती तो कुछ समय तक तो माँ के स्नेहवश उसके कहने पर रुक जाता लेकिन फिर भी कुमार्ग पर उसका मन उसे ले ही जाता।एक दिन वेश्या ने देखा कि इसका सब धन तो खत्म हो चुका है अब उससे छुटकारा पाने के लिये उसने उससे कहा कि अब तुम्हारा मुझसे प्रेम पहले जैसा नहीं रहा तभी तो कई कई दिनों बाद आते हो। तुम्हारा प्रेम झूठा है।तुमअगर मुझसे वास्तव में प्रेम करते हो तो मुझे अपनी माँ का कलेजा लाकर दो तब मैं मानूँगी कि मुझसे तुम्हें वास्तव में प्रेम है। वह उसके प्रेम के जाल में इतना फँस चुका था कि उसे सत्य असत्य का,अच्छे बुरे का विवेक नहीं रहा था उसने कहा कि मुझे तुमसे हार्दिक प्रेम है मैं इसके लिये माँ के प्यार की कुर्बानी कर सकता हूँ।उस दुर्बुद्धि ने ऐसा ही किया माँ को मार कर उसका कलेजा निकाला। जब वह माँ का कलेजा लेकर जा रहा था तो रास्ते में उसे ठोकर लगी वही भी गिर पड़ा और माँ का कलेजा भी ज़मीन पर गिर पड़ा। तो कहते हैं कि उस माँ के कलेजे से आवाज़ आई कि बेटा कहीं चोट तो नहीं लगी? बच्चा कुसंगति में पड़कर कुमार्ग पर जा रहा है माँ को मारकर। तो भी मां का हृदय कहता है बेटा कहीं चोट तो नहीं लगी? ये है माँ का प्यार।इसलिये कहा है कि पिता स्यों माता सौ गुणा सुत स्यों राखत प्यार।

माता स्यों हरि सौ गुणा।परमात्मा का अपनी जीव सृष्टि से प्रेम होता है। वह कैसे?हम नित्य प्रति श्री आरती पूजा में गाते हैं किः-हरि किरपा कर जन्म दियो जग मात पिता द्वारे।उनसे अधिक गुरुजी हैं जो भवनिधि से तारें।सबसे पहले ईश्वर ने अपनी कृपा करके हमें माता पिता के घर जन्म दिया। ये जीवन प्रदान किया फिर हमें जीवित रखने के लिये आक्सीजन, जल,तरह तरह की वनस्पतियां खाने पीने के लिये।और सूर्य चाँद सितारे।ये सब इतनी मात्रा में दिये कि इन वस्तुओं से पूरा ब्रह्माण्ड भरपूर कर दिया है।अगर जीव

को एक दो मिनट के लिये भी आक्सीजन न मिले तो उसका जीवित रहना कठिन है। कुछ घन्टों तक अगर पानी पीने को न मिले तो जीवित रहना असम्भव है। नगरों में देखते हैं कि जब अधिक जनसंख्या के कारण या पानी का उचित प्रबन्ध न होने के कारण पानी की व्यवस्था लड़खड़ा जाती है कितनी कठिनाई से पानी उपलब्ध हो पाता है उस समय ही पानी की कीमत का पता चलता है। परमात्मा ने हमारे लिये कितनी नदियाँ बनाई,समुन्द्र बनाये,झरने बनाये,बादल बना कर जगह जगह पर पानी बरसाकर सबको शीतल कर देता है ये उस की कितनी अपार कृपा और प्यार है।शरीर का तापक्रम सही बनाये रखने के लिये चाँद और सूर्य बनाये हैं इन में सेअगर एक भी न रहे तो प्राणी जीवित नहीं रह सकते।सूर्य अगर केवल आठ मिनट के लिये ठन्डा हो जाये तो विश्व का एक भी प्राणी जीवित नहीं रह सकता।ये परमात्मा का प्यार ह म पर असीम प्यार है।वह अपने जीवों से संसार के सभी प्राणीयों से अथाह प्रेम करता है वह जीव के हमेशा ही संग साथ भी रहता है उसकी हर माँग को पूरा करता है।गुरवाणी का वाक है।

बहुता करम लिखया न जाई।

वडा दाता दिल न तमाई।।

सतपुरुष श्री गुरुनानकदेव जी महाराज फरमाते हैं कि उस परमात्मा की हम पर इतनी कृपा है इतना करम है उसका हम पर इतना प्यार है कि लिखने में नहीं आ सकता उस की महान कृपा का और प्यार का वर्णन नहीं हो सकता। वडा दाता। वह सबसे बड़ा दाता है सबको दिये जाता है। हज़ारों लाखों हाथों से। युगों युगान्तरों से दिये चला आ रहा है। दाता एक भिखारी सारी दुनियाँ।सबको देता है लेकिन बदले में कुछ भी पाने की तिल मात्र भी आकांक्षा नहीं तमन्ना नहीं। वडा दाता तिल न तमाई। माता पिता को तो हो सकता है उनके हृदय के किसी कोने में अपने पुत्र से कुछ पाने की कामना हो उनके हृदय में ये विचार आ सकता है ये आकांक्षा हो सकती है कि पुत्र हमारे बुढ़ापे की लाठी बनेगा।हमारी सेवा करेगा, हमारा नाम रोशन करेगा या हमारा वंश चलेगा। लेकिन परमात्मा को बदले में किसी भी वस्तु की तमन्ना नहीं होती वह देता है हमसे कुछ पाना नहीं चाहता हमारे पास है भी क्या उसे देने के लिये उसका दान बेशर्त है निःस्वार्थ है। वह हज़ारों लाखों हाथों से देता है लेने वाले हमारे केवल दो ही हाथ हैं।

बाबा फरीद की माँ ने कहा बेटा घर में शक्कर नहीं है। बाज़ार से शक्कर ले आ।बाबा फरीद जी ने पूछा,माँ कितनी शक्कर ले आऊँ?माँ ने कहा, एक पाव ही काफी है एक पाव शक्कर ले आ। बाबा फरीद परमात्मा के ध्यान में ऐसे बैठे कि शक्कर लाना ही भूल गये और सारी रात बैठे ही रह गये। माँ ने भी उन्हें ध्यान से उठाना उचित न समझा और दरवाज़ा बन्द करके सो गई।फरीद जी सारी रात बैठे रहे सुबह हुई माँ ने दरवाज़ा खोलना चाहा दरवाज़ा खुले ही नहीं। दरवाज़ा बाहर की तरफ खुलता था। बाहर आँगन शक्कर से भरा पड़ा था और शक्कर दरवाज़े की झीरी में से कमरे में आने लगी थी। कठिनता से दरवाज़ा खोला। माँ ने देखा आँगन सारा ही शक्कर से भरा पड़ा है। बाबा फरीद जी समाधी से उठे तो माँ ने कहा मैने तो एक पाव शक्कर लाने को कहा ता इतनी सारी शक्कर क्या करनी थी। बाबा फरीद जी ने जवाब दिया माँ मैने तो अल्लाह से, परमात्मा से पाव के लिये ही कहा था लेकिन मैं क्या करूँ भगवान का पाव ही बहुत बड़ा है। उसने तो अपने हिसाब से पाव ही दी होगी।परमात्मा का हम जीवों के साथ इतना प्यार है वह हमारी हर माँग को पूरा करता है इसलिये ये कहा है कि माता से हरि सौ गुणा। आगे वर्णन करते हैं हरि से गुरु सौ बार। ईश्वर के प्यार से सतगुरु का प्रेम अपने शिष्य से,प्रिय सेवक से,सौ गुणा अधिक होता है। सतगुरु का शिष्य से आत्मिक नाता है। सतगुरु शिष्य का आत्मिक पिता भी है माता भी है स्वयं ईश्वर भी और सतगुरु भी।सतगुरु में चारों रूप समाये हुये हैं।मात पिता सतगुरु मेरे शरण गहूं किसकी।गुरू बिन और न दूसरा आस करूँ जिसकी।सतगुरु पिता की तरह पालक और माता की तरह शिष्य की हर गल्तियों को नज़र अन्दाज़ करता है।इसलिये उन्हें सबसे अधिक प्रेम करने वाला कहा गया है। सतगुरु करूणा और प्रेम का स्वरूप हैं। सतगुरु को ईश्वर से सौ गुणा अधिक प्यार करने वाला इसलिये कहा है ईश्वर ने जीव की हर इच्छा को पूरा करना है चाहे वह उचित है या अनुचित। जीव की इच्छा चाहे माया की दलदल में फँसाने वाली है चाहे चौरासी में ले जाने वाली है या उसे नरक में ले जाने वाली है या उसे स्वर्ग तक पहुँचाने वाली है उसे ईश्वर ने पूरा करना है उसे आप की अच्छी या बुरी माँग से कोई सरोकार नहीं।जो माँगोगे मिलेगा क्योंकि वह हमारी स्वतन्त्रता में रूकावट नहीं डालता भले ही जीव कितना दुःखी औरअशान्त हो लेकिन सतगुरु का हृदय मक्खन से कोमल होता है।श्रीरामायण में वर्णन हैः- सन्त हृदय नवनीत समाना। कहा कविन्ह पर कहई न जाना।

निज प्रताप द्रवहिं नवनीता।परहित द्रव्हिं सो सन्त पुनीता।।

सतगुरु का हृदय मक्खन से भी कोमल होता है। मक्खन तो जब स्वयं को सेक(गर्मी) पहुँचता है तो वह पिघलता है। लेकिन सन्तों का हृदय दूसरों के दुःख को देखकर पिघल जाता है।

एक बार का ज़िक्र है कि अमरीका के राष्ट्रपति अब्राहीम लिंकन साधु प्रवृति के सज्जन पुरुष थे। एक बार वे भाषण देने के लिये जा रहे थे। कि रास्ते में उन्होंने

अचानक देखा कि एक सुअर दलदल में फँसा हुआ दुःखी हो रहा है जितना वह अपने आप को निकालने का प्रयत्न करता वो उतना ही और दलदल में फँसता जा रहा था।उसे देखकरअब्राहीमलिंकन ने अपनी कार रुकवाई और स्वयं उस सुअर को निकालने का प्रयत्न करनेलगे।अन्त में कुछ देर पश्चात परिश्रम से उसे दलदल से निकालने में सफल हो गये लेकिन उन्हें जहाँ भाषण देने जाना था वहाँ पहुँचने में देरी हो गई औरउनके कपड़े भी कुछ कीचड़ से खराब हो चुके थे।वह इसीअवस्था में स्टेज़ पर पहुँचे तो एनाउन्सर ने उनके पी.ए.से देरी सेआने का कारण पूछा तो उन्होने सुअर को दलदल से निकालने वाली सारी वार्ता बता दी। एनाउन्सर ने जनता को राष्ट्रपति के देर से आने का कारण बताया और राष्ट्रपति की तारीफ की कि हमारे राष्ट्रपति की आम जीवों पर भी कितनी दयालुता है। जब राष्ट्रपति महोदय भाषण देने लगे तो उन्होने कहा इन्होने जो मेरीतारीफ की है ये इनकी अपनी भावना है लेकिन मैंने कोई तारीफ का कार्य नहीं किया है आप कहेंगे कि किसी को दुःख से छुटकारा दिलाना उसे सुख पहुँचाना एक महान कार्य है तारीफ के योग्य है।लेकिन नहीं इसे आप समझें जब मैने सुअर को दलदल में फँसते देखा तो उसे देखकर मुझे दुःख हुआ जब मैंने उसे दलदल से निकाल दिया तो मेरा दुःख दूर हो गया।मैंने अपना ही दुःख दूर किया है। ये है सन्त हृदय नवनीत समाना। दूसरे के दुःख को देखकर पिघल जाना।

सन्त सतगुरु जीव को जब माया की दलदल में फँसा हुआ देखते हैं चौरासी के आवागमन के चक्र में पड़े हुये जीवों को दुःखी देखकर उनका हृदय पसीज उठता है तब वे अपना अनामी लोक छोड़कर सतगुरु बनकर इस धराधाम पर अवतरित होते हैं और अपनी रूहों को संसार रूपी समुन्द्र से यानि भवसागर से उबारकर वापिस अपने सुख के धाम को ले जाते हैं। सतगुरु अपनी रूहों को चौरासी में भटकते नहीं देख सकते।जीवों की कोई अनुचित इच्छा को पूरा नहीं होने देते जो कि चौरासी में ले जाने वाली हो कष्टकारी हो।सन्त सहजो बाई जी ने कहा है किः-

राम तजूँ पै गुरु न विसारूँ। गुरु के सम हरि को न निहारूँ।
हरि ने जन्म दियो जग माहिं। गुरु ने आवागमन छुटाहिं।।
हरि ने पाँच चोर दिये साथा। गुरु ने लियो छुटाये अनाथा।।
हरि ने कुटम्ब जाल मे गेरी। गुरु ने काटी ममता बेरी।।
हरि ने रोग भोग उरझायो। गुर जोगी कर सभे छुटायो।।
हरि ने करम भरम भरमायो। गुरु ने आत्म रूप लखाये।
हरि ने मौ सूँ आप छुपायो। गुरु दीपक दे आप लखायो।।

सन्त सहजो बाई जी ने यहां तक कह दिया है कि हरिऔर गुरु मे से किसी एकको चुनना हो तो हरि को तज दूँगी लेकिन सतगुरु को नहींभूल सकती। क्योंकि हरि ने संसार में जनम देकर आवागमन के चक्र में डाला है।लेकिन सतगुरु नेअपनी कृपा करके मुझेआवागमन के चक्र से छुटकारा दिला दिया है। हरि ने करम भरम और कुटम्ब परिवार के जाल में जाने दिया है जाने से नहीं रोका ब्लकि कुटुम्ब जाल में डाल दिया लेकिन सतगुरु ने मेरी मोह ममता की बेड़ी हथकड़ियां बन्धन सब तोड़ दिये। सन्त धनी धर्मदास जी सतगुरु की हरि से श्रेष्ठता और महिमा का वर्णन करते हुये फरमाते हैं।

गुरु से श्रेष्ठ और जग माहि। हरि विरंची शंकर कोई नाहीं।
सुहृद बन्धु सुत पितु महतारी। गुरु सम को दूजा हितकारी।।
जाके रक्षक गुरु धनी सके कहा करि और।
हरि रूठे गुरु शरण है गुरु रूठे नहीं ठौर।।

फरमाते है कि गुरु से श्रेष्ठ जग में कोई नहीं, ब्रह्मा विष्णु महेश कोई नहीं संसार के मित्र बन्धु पिता माता सतगुरु के समान कोई भी हितकारी नहीं। ब्रह्मा,विष्णु,महेष,माता पिता,हरि,जीव से प्रीति रखते हैं हितकारी हैं लेकिन सतगुरु के समान हितकारी नहीं है। हरि रूठे गुरु शरण है।अगर हरि ईश्वर किसी कारणवश या जीव की किसी भूल,गल्ती,अपराध से रूठ भी जायें तो भी चिन्ता की बात नहीं सतगुरु अपनी शरण में ले लेते हैं।

रामायण में एक प्रसंग मिलता है काकभुशुण्डि जी गरूड़ जी को अपने पिछले जन्म की कथा सुनाते हैं कि ऐ गरूड़ जी कलयुग में मैं अयोध्या में वास करता था एक बार भारी अकाल पड़ा तो मैं दुःखी होकर अयोध्या छोड़कर परदेस के चला गया। उज्जैन में जाकर रहने लगा कुछ दिन वहां रहकर मैने थोड़ी सी सम्पत्ति पाई जिससे मेरा निर्वाह होने लगा। उज्जैन में रहते हुये मैं नित्य प्रति शिवजी के मन्दिर में जाकर शिवजी की पूजा करने लगा। वहां पर मुझे एक महान उत्तम ब्राह्मण अर्थात ब्रह्म के जानने वाले तत्तवेता महापुरुष के दर्शन हुये।वे महापुरुष परमसाधूऔर परमार्थ के ज्ञाता थे।उन्होनें मुझे शिवजी का मन्त्र दिया। शिवनेत्र खोलने की दीक्षा दी और उसके अभ्यास की युक्ति बताई मैं उस अभ्यास को तो करने लगा परन्तु गुरु का सेवन सच्चाई से नहीं कपट से करता था।किन्तु मेरे गुरुदेव अति दयालु और नीति निधान थे। वे मुझको बाहर से नम्र देखकर पुत्र की न्याईं पढ़ाते और प्यार करते थे। हे गरूड़ जी मैं गुरु के बताये हुये मन्त्र को शिव मन्दिर में बैठकर जपता था परन्तु हृदय में बड़ा पाखण्डऔर अहंकार रहता था मेरी बुद्धि ऐसी मलिन थी कि ब्राह्मण और हरि भक्तों को देखकर जलता था। मैं शिवजी महाराज

का तो भक्त बना हुआ था परन्तु विष्णु भगवान का द्रोह और खण्डन करता था। मेरे इस प्रकार के दुखितआचरण को देख गुरु नित ही समझाते थे मेरी बुद्धि इतनी मलिन थी कि इनका उपदेश सुनकर मुझे क्रोध उत्पन्न होता था।एक बार मुझे गुरु ने बुलाया पास बुलाकर नीति समझाई और कहा कि हे पुत्र शिवजी की उपासना का ये फल है कि श्री भगवान के चरणों में अचल भक्ति हो। तुम नहीं जानते कि श्री राम जी को तो शिव और ब्रह्मा भी भजते हैं।साधारण मनुष्यों की तो बात ही क्या है। जिनके चरणों में शिवजी और ब्रह्मा भी प्रेम करते हैं ऐ अभागे उनसे द्रोह करके तू सुख चाहता है। ऐ गरूड़ जी जब गुरु जी ने शिवजी को भगवान का सेवक कहा तो सुनते ही मेरा हृदय जल उठा और जैसे साँप को दूध पिलाने से तथा प्यार करने से वह डंक ही मारता है ऐसे ही मैं भी नीच जाति खोटे भाग्यों वाला अभिमानी गुरु के साथ द्रोह करने लगा।किन्तु गुरु महाराज अति दयालु ते वे फिर भी उत्तम ज्ञान का उपदेश ही देते रहते थे मेरे हित की कहते थे। मुझे उनकी बात अच्छी नहीं लगती थी। एक बार मैं शिव मन्दिर में बैठकर शिवजी की उपासना कर रहा था उसीअवसर में गुरु महाराज आये किन्तु मैने अभिमान वश उठकर उनको प्रणाम नहीं किया विचार यह था कि इससमय तो मैं शिवजी के मन्दिर में बैठकर शिवजी का तप कर रहा हूँ।इस समय गुरु को प्रणाम करने की क्या आवश्यकता है।

गुरु दयालू नहीं कहेऊ कछु उर न रोष लवलेश।
अति अघ गुरु अपमानता सहि नहिं सकेउ महेश।।

गुरुमहाराज तो बड़े दयालु थे उन्होने तो कुछ न कहा और नाहीं उनके हृदय में क्रोध आया। परन्तु हे गरुड़ जी निरादर करना तो महाघोर पाप है।उसको शिवजी महाराज सहन न कर सके।क्रोध से भरी हुई मन्दिर सेआकाशवाणी उतरी अरे नीच अभिमानी हतभाग्य। यद्यपि तेरे गुरु को कुछ भी क्रोध नहीं उपजा क्योंकि ये दयामय सन्त हैं और पूर्ण ज्ञानी हैं। मूर्ख मैं तुझे शाप देता हूँ। क्योकि नीति के विरुद्ध चलने वाला मुझे अच्छा नहीं लगता। तुझे मैं दण्ड नहीं दूँगा तो मेरी नीति का मार्ग भ्रष्ट हो जायेगा। गुरु का अपमान करना वेद शास्त्रों की निति के विरूद्ध है तू गुरु को आते देख कर अजगर की भांति जमकर बैठा रहा इस कारण मेरा शाप है तू अजगर हो जा। तू सर्पयोनि की महान नीच गति को पाकर किसी बड़े पुराने पेड़ की जड़ के नीचे भयानकअन्धेरी खोड़ में जाकर निवास कर। इस प्रसंग में विचारने योग्य बात ये है कि जिस देवता कीआराधना गुरु को पीठ देकर कर रहे थे वही देव उनके विरुद्ध हो गया।शाप दे डाला।शिवजी का कठिन शाप सुनते ही मेरे गुरु महाहराज सहन न कर सके और मुझे काँपता हुआ देखकर बहुत दया आई।

हाहाकार कीन्ह गुरु सुनि दारूण शिव शाप।
कम्पित महि विलोक अति उर उपजा परिताप।।

शिवजी का शाप सुनकर मन में अति दुखित होकर गुरुमहाराज जी ने भगवान शिव से प्रार्थना की कि हे देवों के देव कलयुग के जीव मन माया के अधीन सदा भूलते हैं इन पर दया होनी चाहिये और भूल चूक को क्षमा कर देना चाहिये साथ ही साथ उनकी स्तुति की।तब मन्दिर सेआवाज़ आई। ऐ परोपकारी महात्मन यद्यपिआपके शिष्य ने दारूण पाप किया है मैने क्रोध में शाप दिया है। फिर आपके दयामय परोपकारी साधू स्वभाव को देखकर इस पर विशेष कृपा करता हूँ मेरा शाप व्यर्थ तो नहीं जा सकता हज़ार जन्म तो यह अवश्य पायेगा किन्तु जन्मते मरते समय जो जीव को दुःख होता है वह इसको किंचित मात्र भी न व्यापेगा । जिस जन्म में यह जायेगा उसमें इसका ज्ञान नहीं मिटेगा सारे जन्मों की सुधि रहेगी और अन्त में इसे भगवान की भक्ति प्राप्त होगी। भगवान ने तो काकभुशुण्डि के अपराध के कारण नीच योनि में जाने का शाप दे डाला लेकिन सतगुरु के हृदय ने उसे गँवारा न किया उनकी कृपा से ही उसके जन्म मरण कट गये और प्रभु भक्ति की भी प्राप्ति हुई। इसलिये कहा है हरि से गुरु सौ बार।

संसार में अगर किसी का रूमाल गिर जाता है तो कोई उसे उठाकर दे देता है तो उसे धन्यवाद देता है उसका शुक्रियाअदा करता है।जिस माता पिता ने हम पर अपना स्नेह प्यार लुटाया हो अपने तन पर दुःख सह कर हमें सुख पहुँचाया हो हमारा पालन पोषण किया और भगवान के हम पर असीम उपकार और प्यार है हमारी हर माँग को उसने हज़ारों हाथों से पूरा किया और सतगुरु के अनन्त उपकार जो हम पर हैं जिसका बदला हम जन्म जन्मान्तरों तक भी नहीं चुका सकते। हमारा परम कर्तव्य हो जाता है। अपने माता पिता की आज्ञा का पालन करें उनकी सेवा करें। भगवान को नित्य प्रति भजन की व नाम की भेंट अर्पित करें। और सतगुरु के बताये निर्देशों आदेशों तथा श्री आज्ञा और मौज में चलकर उनकी प्रसन्नता हासिल करें इसमें प्रसन्नता महापुरुषों को होती है हमारा कल्याण होता है।।

लाखों सिर तू दे चुका

महापुरुषों के वचन हैंः-

लाखों सिर तू दे चुका यमराजा की भेंट।
एक सीस अब खुशी से कर सतगुरु की भेंट।।

सन्त महापुरुष जीव की भलाई और कल्याण के लिये सतमार्ग दर्शाते हुये वर्णन करते हैं कि ए जीव जिस सच्ची खुशी और शाश्वत आनन्द को प्राप्त करने के लिये तूने लाखों शरीर यमराज केअर्पित कर दिये हैंऔर अब तक तुझे सच्ची खुशी और आनन्द प्राप्त नहीं हुआ,दुःख और अशान्ति ही नसीब हुई है। अब भी अगर तू अपना ये जीवन सतगुरु के अर्पण कर दे,खुशी से भेंट कर दे तो तू निश्चय ही सच्ची खुशीऔर आनन्द को प्राप्त कर सकता है।लाखों सिर ?जीव के पास सिर तो एक ही है फिर इसने लाखों सिर कब अर्पण कर दिये?महापुरुष फरमा रहे हैं तू लाखों सिर दे चुका।महापुरुषों के वचन तो सत्य होते हैं उन्हें झूठलाया नही जा सकता इसलियेअवश्य ही इस जीवन से पहले जीव ने लाखों शरीर धारण किये हैं।सदग्रन्थऔर सदशास्त्रों की वाणियां इस बात की साक्षी हैं। गुरुवाणी में वर्णन हैः-

कई जन्म भये कीट पतंगा। कई जन्म गज मीन कुरंगा।
कई जन्म पंछी सरप होईयो। कई जन्म हैवर वृच्छ जोईयो।
मिल जगदीश मिलन की बरिया। चिरंकाल ऐह देह संजरिया।
कई जन्म सैल गिरी करिया। कई जन्म गर्भ हिरी खरिया।
कई जन्म साख कर उपाईया। लख चौरासी जोनि भरमाया।
साध संग भयो जन्म परापत। कर सेवा भज हर हर गरु मत।
त्याग मान झूठ अभिमान। जीवत मरे दरगह परवान।

फरमाते हैं कि ऐ जीव इस जीवन से पहले तूने कई बार कीड़े,पतंगों, हाथी मछलियों की योनियों में भरमता रहा है कई बार पक्षी,सर्प,हिरन के शरीर तूने धारण किये कई बार वृक्ष और पहाड़ों की योनि भरमता रहा है।अब तुझे ईश्वर से मिलने की बारी है ये देहि तूझे चिरकाल के बाद मिली है

इसलिये ऐसा यत्न कर कि तुझे फिर नीच योनियों में न जाना पड़े। इससे सिद्ध होता है कि जीव ने लाखों शरीर धारण किये हैं।वे सब यमराज की भेंट कर चुका है।यमराज की भेंट करने का क्या अर्थ है?यम काअर्थ होता है कैद करना,अधीन करना,बन्द करना।कैद करने वाले को,अधीन करने वाले को या बन्द करने वाले को यमराज कहते हैं।योग शास्त्र के अनुसार जो करने योग्य कर्म हैं उन्हें यम कहा जाता है।जैसे पातंजलि योग शास्त्र के अनुसार यम पाँच कहे गये हैं। अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्य अपरिग्रह यमाः। इन्हे यम कहा गया है अर्थात मन वचन कर्म से किसी की हिंसा न करना। किसी के प्रति मन में बुरा विचार न लाना,वचन से कोई अपशब्द कह कर किसी का दिल न दुखाना या कर्म से किसी की हिंसा न करना अहिंसा है। इसी तरह सत्य बोलना झूठ न बोलना,सत्य का पालन करना सतवस्तु की चाह करना सत्संग करना,सत्य है।अस्तेय का अर्थ किसी पराई वस्तु को अपने अधिकार में न लेना,चोरी न करना। ब्रह्मचर्य है आठ प्रकार के मैथुन से पहेज़ करना।अपिरग्रह का अर्थ है अपने जीवन की आवश्यकताओं के अतिरिक्त संसार के सामानों का संग्रह न करना। ये सब यम हैं। मतलब ये है कि शास्त्रों के अनुसार जो करने योग्य कर्म हैं उनको न करके जो मानव निषिद्ध कर्मों को करता है उसके कर्मों का फलदेने वाली शक्ति को यमराज कहा जाता है। जिस प्रकार इस संसार में देश में या किसी समाज में सुख और शान्ति की व्यवस्था बनाये रखने के लिये कानून बनाये जाते हैं जो व्यक्ति उन कानूनों का पालन नहीं करता उनके विपरीत आचरण करता है उसके लिये सरकार द्वारा दण्ड का विधान है। उसके लिये न्यायालय और जेलखाना की व्यवस्था है।इसी तरह ही जो जीव शास्त्रों में बताये गये निषिद्ध कर्मों को करता है मानव धर्म का पालन नहीं करता अधर्म पर चलता है उसके लिये भी कुदरत की तरफ से दण्ड का विधान है।धर्मअधर्म का निर्णय करने वाली शक्ति को धर्मराज भी कहते हैं और दण्ड देने वाले को यमराज कहते हैं।मानव धर्म क्या है?धर्म का अर्थ ये नही कि हिन्दु, मुस्लिम,सिख,ईसाई,जैन,बौद्ध,नहीं। मानव धर्म का अर्थ है जीवात्मा को चौरासी लाख योनियों से छुड़ाकर अपने कुल मालिक परमात्मा के साथ मिलाना मानव का धर्म है। अर्थात मानव हमेशा ऐसे कर्म करे जिससे परमात्मा की प्राप्ती हो।जो कर्म जीवात्मा को परमात्मा से दूर करने वाले हैं चौरासी में डालने वाले हैं वो सभी कर्म निषिद्ध कर्म हैं वो अधर्म है।

एक कारण ये भी है कि जीव चूंकि ईश्वर का अंश है। ईश्वरीय अंश जीव अविनाशी चेतन अमल सहज सुखराशी। ईश्वर सुख और आनन्द का भण्डार है जीव ईश्वर का अंश होने के कारण स्वाभाविक ही सुख राशी है लेकिन अपने अंशी परमात्मा से बिछुड़ जाने के कारण की जन्मों से दुःखी और अशान्त है। इसलिये वह हमेशा सच्चे आनन्द को,अपनी पहले वाली अवस्था को प्राप्त करना चाहता है लेकिन जीव अपनी समझ बुद्धि और नादानी के कारण संसार के पदार्थों में सुख और आनन्द की तलाश करता है।वो यह समझने लगता है कि वह सच्ची खुशी और सच्चा आनन्द संसार के पदार्थों इन्द्रियों

की तुष्टि में प्राप्त हो सकता है। इसलिये संसार के झूठे पदार्थों को अधिक से अधिक एकत्र करने की ख्वाहिश करने लगता है। ये इच्छायें कामनायें और वासनायें ही जन्म मरण,बन्धन और दुःख का कारण हैं।अपनी इच्छाओं और कामनाओं को पूरा करने के लिये ही जीव को विभिन्न शरीर धारण करने पड़ते हैं।क्योंकि कुदरत का कानून है जो माँगोगे मिलेगा कुदरत हरएक की इच्छा को पूरा करने की व्यवस्था करती है।जहाँ आस तहां वास।इसलिये जीव की इच्छायें पूर्ण होकर रहेंगी।परन्तु ये ज़रूरी नहीं है कि ये इच्छायें इसी जन्म में ही पूरी हों। हो सकता है किसी खास इच्छा को पूरी करने के लिये इस जन्म में परिस्थिती अनूकूल न हो वह इच्छायें जिस शरीर द्वारा पूरी हो सकती हैं कुदरत उसे वह शरीर प्रदान कर देती है।जैसे किसी के सिर पर शिकारऔर हिंसा का भूत सवार है माँस खाने की ख्वाहिश हमेशा रहती हो तो कुदरत उसे हिंसक जानवर जैसे शेर बाघ चीता का शरीर दे देगी ताकि वह अपनी मांस खाने की ख्वाहिश को और भूख को आसानी से मिटा सके।अगर वह शाकाहारी भी हैअगर उसे अच्छेअच्छे लज़ीज़ और चटपटे खाने की ही ख्वाहिश रहती है उसने केवल मुख और पेट को ही सन्मुख रखा हुआ है केवल पेट भरना हीअपने जीवन का ध्येय मान रखा है केवल खाने पीने को ही सुख का केन्द्र मान रखा है तो कुदरत उसे किसी शाकाहारी पशु जैसे बैल,हाथी जैसा शरीर प्रदान कर देगी। खाते रहो बच्चू जितना मर्ज़ी। अगर किसी को हमेशा नशा करने की आदत है किसी को नशीली वस्तुओं के ही सेवन की खाहिश रहती है वो ये समझता है शायद मैं नशा करके दुनियां के दुःखऔर गमों को भूल जाऊँगा सच्चा सरूर मिलेगा तो कुदरत उसे अजगर जैसे शरीर प्रदान कर देगी पड़े रहो यूं ही नशे में वर्षों तक कोई नहीं हिलायेगा।किसी को सारी उम्र सन्तान की खाहिश रही तो कुदरत उसे पूरा करने के लिये उसे ऐसा शरीर दे सकती है जैसे कूकर,सूकर बिल्ली का शरीर जिसमें एक ही बार में पाँच पाँच छः छः बच्चे उत्पन्न हो जाते हैं।

हमारे आराध्यदेव श्री चौथी पातशाही जी के समय की बात है। श्री आनन्दपुर में श्री मन्दिर के सामने सड़क के किनारे कुछ पपीतों के पेड़ लगे हुये थे।उनमें से एक पपीते का पेड़ जो कि लगभग चारपांच फुट ऊँचा होगा उस पर बड़े बड़े पपीते के फल लगे थे और वह नीचे से ऊपर तक फलों से लदा पड़ा था।किसी ने श्री गुरुमहाराज जी के श्री चरणों में विनय की कि प्रभो कुदरत का क्या करिश्मा है कि यह छोटा सा पेड़ बड़े बड़े पपीतों के फलों से लदा पड़ा है।श्री गुरुमहाराज जी ने फरमाया कि इसने किसी जन्म के अन्दर सन्तान प्राप्ति की बहुतअधिक खाहिश की थी कुदरत इसकी इच्छा को इस वृक्ष की योनि में पूरा कर रही है।

कहने का तात्पर्य ये है कि जीव की इच्छा को पूरा करने के लिये जीवात्मा को विभिन्न शरीरों में कैद कर देना यमराज का कार्य है जिसे सन्तों की भाषा में काल भी कहते हैं। इसलिये जीवात्मा अपनी इच्छाओं वासनाओं के कारण ही बन्धन में पड़कर दुःखी रहती है। संसार को महापुरुषों ने इसीलिये जेलखाना भी कहा है ये चौरासी योनियां जेल की कोठरियाँ हैं जिसमें जीवात्मा जन्म जन्मान्तरों से कैद है इसीलिये दुःखी है क्योंकि जेल में रहकर कोई भी सुखी नहीं हो सकता। इसलिये महापुरुष फरमाते हैं कि एक सीस अब खुशी से कर सतगुरु की भेंट।ऐसा न हो कि पहले जन्मों की तरह ये जीवन भी यमराज की भेंट हो जाये और तू सच्चे आनन्द से वंचित रह जाये।

परमात्मा की दो शक्तियां हैं एक काल दूसरा दयाल।काल का कार्य है जीव की इच्छा या वासना को पूरा करने के लिये विभिन्न शरीर प्रदान करके चौरासी में कैद करना। वह तटस्थ शक्ति है न्यायकारी है। आपकी क्या ख्वाहिश है उस से उसे कोई सरोकार नहीं उसका तो कार्य केवल उसे पूरा करना। लेकिन दूसरी शक्ति है दयाल। जिसे सन्त सतगुरु कहते हैं। उसका कार्य है जीव को चौरासी की कैद से छुड़ाकर परमात्मा से मिलाना। इस चौरासी की कैद से छुड़ाने के लिये ही वह परमात्मा समय समय पर सन्त सतगुरु के रूप में प्रकट होता है।अपनी रूहों को इस कैद से छुड़ाकर अपने संग मिलाने के लिये ही इस युग में दया के साक्षात स्वरूप श्री प्रथम पातशाही जी महाराज श्रीपरमहँसदयाल जी नेअवतार लिया है जो जगतारण हैं। यम के त्रास का निवारण करने वाले हैं।

ॐ जै श्री जगतारण। शुभ मग के उपदेशक यम त्रास निवारण।

श्री परमहँस दयाल जी की जीवन झलकियों में से एक पावन लीला का वर्णन मिलता है कि एक बार एक भक्त के तीन ऊँट गुम हो गये। उन्हें ढूँढने के लिये उसने बहुत प्रयत्न किया। कई दिन तक तलाश करने पर भी उन्हें न ढूँढ सका।आखिर निराश हो गया। जब मनुष्य सब तरफ से निराश हो जाता है तब फिर उसे अपने मालिक सतगुरु की याद आती है।उन दिनों श्री गुरुमहाराज जी टेरी में विराजमान थे।उसनेअपने इष्टदेव श्री गुरुमहाराज जी को मन ही मन याद किया और श्री चरण कमलों में विनय की कि ऐ प्रभो अगर मेरे ऊंट आपकी कृपा से मिल जायें तो मैं 21/- रूपये सेवा में भेंट करूँगा। इतना कह कर जब वह अपने घर पहुँचा तो ऊंटो को अपने स्थान पर बँधा पाया।उसने अपनी पत्नि से पूछा कि ये ऊँट कौन बाँध गया है? उसकी पत्नि ने जवाब

दिया मुझे तो मालूम नहीं मैं तो घर के कार्य में व्यस्थ थी। भक्त ने कहा कि ज़रूर ही श्री गुरु महाराज जी की कृपा से ही ये ऊँट हमें मिले हैं उन्होने हमारी विनय को स्वीकार किया है। चलो पहले श्री गुरु महाराज जी के अब श्री दर्शन कर आयें। दोनों पति पत्नि श्री दर्शन के लिये श्री चरणों में उपस्थित हुये दण्डवत वन्दना की और श्री चरणों में 21/-की बजाय11/-भेंट कर दिये। मन हमेशा ही जीव को धोखा देता है। भक्त ने सोचा ऊंट तो मिल ही गये हैं अगर11/-ही भेंट कर दें तो क्या हर्ज़ है? मैंने प्रत्यक्ष में तो कोई वायदा किया नहीं था कि21/-भेंट करूँगा। भले आदमी ने ये नहीं सोचा कि घट घट की जानने वाले अन्तर्यामी सतगुरु ने तेरी मन ही मन की हुई विनती को सुनकर तेरी मनोकामना पूर्ण की है तो क्या 21/-का किया हुआ वायदा नहीं सुना होगा?लेकिन जीव बुद्धि मन के गलबे में आ जाती है। श्री गुरुमहाराज जी ने अन्तर्यामी होते हुये भी उससे कुछ न कहा कि भाई तू21/-कहकर11/-क्यों भेंट कर रहा है?पत्नि सहित वह भक्त श्री दर्शन करके जब वापिस अपने गाँव जा रहा था अभी फर्लांग दो फर्लांग ही गया होगा कि रास्ते में उसे कुछ पठान लुटेरे मिल गये।उनसे छीना झपटी करने लगे। उसकी पत्नि ने सोने की जंजीर पहन रखी थी उसे छीन कर ले गये।वह दोनों फिर श्री चरणों में उपस्थित हुये सारी घटना कह सुनाई कि पठानों ने हमें लूट लिया।श्री गुरुमहाराज जी ने पूछाभाई क्या लूट कर ले गये?उसने जवाब दिया कि भक्तानी की सोने की जंज़ीर छीनकर ले गये हैं।फिर पूछा कि कितने रूपयों की थी?उसने जवाब दिया लगभग10/-की होगी। उस समय सोना चार पांच रूपये तोला हुआ करता था।श्री गुरु महाराज जी ने फरमाया ठीक ही तो हुआ अपना हिस्सा ही तो ले गये हैं अधिक तो नहीं ले गये।तुमने जो 21/-का वायदा किया था और11/-ही भेंट किये। भाई अगर दयाल से बचा कर रख लिया है काल तो ज़बरदस्ती ले ही जायेगा।वो तो नहीं छोड़ेगा।उस समय श्री गुरु महाराज जी ने फारसी का एक शेयर उच्चारण किया।

जाँ बजाना बिदह वगरना अज़ तो बिस्तानल अज़ल।
खुद ही मुन्सिफ बास ऐ दिल ई नीको या आँ नीको।।

अपना जीवनअपने सच्चे मित्र सन्त सतगुरु दयाल को खुशी सेअर्पण कर दे अन्यथा तुझसे काल छीन लेगा ऐ मन तू स्वयं ही सोच समझ कर निर्णय कर कि काल तुझसे ज़बरदस्ती छीन कर तुझे चौरासी की कैद में डाल दे ये उत्तम है या अपने मालिक को अर्पण करके चौरासी की कैद से छूट कर परमात्मा को प्राप्त कर सच्चे आनन्द को प्राप्त कर ले ये उत्तम है।

जीव के सुख शान्ति और आनन्द रूप ऊंट कई जन्म जन्मानतरों से गुम हो चुके हैं उन्हें तलाश करने के लिये निम्नकोटि की योनियों के चक्र काटता रहा है लेकिन खुशी और आनन्द प्राप्त नहीं हुआ अन्त में दुःखी परेशान होकर निराश होकर परमात्मा से प्रार्थना करता है कि है प्रभो मुझे इस दुःख से छुड़ा मुझे मानुष चोला प्रदान कर मैं वायदा करता हूँ अपने जीवन का एकएक स्वाँस तेरेअर्पण करूँगा तेरी याद मेंही जीवन बिताऊँगा। संसार के पदार्थों की कामना नहीं करूँगा लेकिन जीवअपने किये हुये वायदे को फिर फिर भूल जाता है।

काफ कौल करके मालिक नाल आयों तेरा भजन मैं सदा कमावंगा।
मैंनूं बाहर कढ दे इस नरक विचों तेरी बन्दगी दे विच चित लगावांगा।।
तेरा बन के रहसां संसार अन्दर किथे होर न मन अटकावांगा।
तेरी बन्दगी करसां कबूल हरदम कदी दिलों न तैनूं भुलावांगा।।
ऐत्थे आ के बन्या दुनियाँ दा बन्दा दासन दास ए गल शर्म दी ए।
कोई दोष न मालिक दा जान इस विच सारी मार ए अपने कर्म दी ए।।

जीवअपने किये वायदे को भूल जाता है महापुरुष दया करके दयाल रूप धार कर जीव को उसके किये वायदे को याद दिलाते हैं उसे चेतावनी देते हैं सुजाग करते हैं कि ईश्वर की कृपा से कई बार याचना करने के बाद मानव शरीर मिला है अपने वायदे को याद कर सांसारिक इच्छाओं कामनाओं को त्याग कर मालिक की भक्ति में जीवन लगा।अपना एक एक स्वांस मालिक के अर्पण कर ताकि पहले शरीरों की तरह ये मानव जीवन भी यमराज के समर्पित न हो जाए।ये अवसर मत गँवाअपना जीवन सतगुरु केअर्पित करके सच्चे आनन्द को प्राप्त कर ले।एक सीसअब खुशी से कर सतगुरु की भेंट।यमराज तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगा।जीवन अर्पण करने का मतलब ये नहीं कि संसार के कार्य व्यवहार रिश्ते नाते सम्बन्धी सब छोड़कर कहीं चले जाना है। महापुरुष संसार के कार्य व्यवहार करते हुये मालिक का सुमिरण करते रहने के लिये ही फरमाते हैं। करना केवल ये है कि संसार की कामनाओं की बजाय मालिक की भक्ति की कामना करे। सतगुरु की कृपा से गुरुमुखों को जो सच्चे नाम की प्राप्ति हुई है उसका चलते फिरते उठते बैठते खाते पीते संसार के सब कार्य व्यवहार करते हुये स्वांस स्वांस में नाम जपना है।ये दम हीरा लाल है गिन गिन गुरु को सौंप।भगवान श्री कृष्ण अर्जुन से फरमाते हैं कि ए अर्जुन तू युद्ध भी करऔर मेरा सुमिरण भी कर तू निश्चय ही मुझको प्राप्त होगा। जब युद्ध जैसा कर्म करते हुये भी सुमिरण हो सकता है तो संसार के कार्य व्यवहार करते हुये क्यों नहीं हो सकता।हत्थ कार वल ते दिल यार वल। इसलिये स्वांस

स्वांस मालिक के अर्पण करना है यमराज कुछ न बिगाड़ सकेगा।छू भी नहीं सकता धर्मरायअब का करेगो जब फाटयो सगलो लेखा।

श्री प्रथम पादशाही जी महाराज जी के पावन वचन हैं कि एक मुसलमानों की किताब है दलीलुलआरफीन।उसमें वर्णन है कि एक बार अजमेर के ख्वाजा साहिब हज़रत मुईउद्दीन चिश्ती जी के गुरु भाई का देहान्त हो गया। जब हज़रत ख्वाजा साहिब गुरु भाई की कब्र के पास बैठ कर उनकी आत्मा की शान्ति के लिये मालिक से दुआ करने के लिये ध्यान अवस्थित हुये तो उनके एक शिष्य ने उनके चेहरे पर (ध्यान अवस्था में)पहले तो दुःख और मलाल नज़र आया कुछ देर बाद प्रसन्नता के भाव प्रकट हुये।इस पर उनके शिष्य ने विनय की कि हज़रत अगर आप उचित समझें मुझे इस योग्य समझें तो मुझे बताने की कृपा करें किआप जब ध्यान अवस्था में थे तो पहले आपके चेहरे पर दुख और मलाल नज़र आया कुछ देर बाद आपके चेहरे पर प्रसन्नता दृष्टिगोचर हुई।इसका क्या कारण है? हज़रत ख्वाजासाहिब ने फरमाया कि जब हम गुरु भाई कीआत्मा की शान्ति के लिये मालिक से दुआ करने लगे तो देखा कि गुरु भाई को एक भंयकर और विकराल फरिश्ता अजाब(यातना)देता है ये देखकर हमें दुःख हुआ लेकिन थोड़ी देर में हमारे पीरो मुर्शिद(हज़रत उसमान हारूनी रहमतुल्ला अलिया) प्रकट हुये और उन्होंने उस फरिश्ते से कहा कि इसे क्यों अजाब देता है? इसे छोड़ दे।उसने कहा इसनेअपनी ज़िन्दगी में कोई भी शुभ कार्य नहीं किया है। इसलिये अजाब देता हूं। इस पर महापुरुषों ने फरमाया कि इसने कोई भी शुभ कार्य भले ही नहीं किया लेकिन इसने हमारा दामन तो पकड़ा है?इसे छोड़ दे। इतने पर जब न माना तो हमारे पीरो मुर्शिद ने उस फरिश्ते को एक चाँटा मारा।जिससे वह फिरश्ता भाग गयाऔर उसके स्थान पर एक सौम्य रूप फरिश्ता प्रकट हुआ जो गुरु भाई को लेकर जन्नत चला गया। ये देखकर हमें प्रसन्नता हुई।

सोना काई न लगे लोहा घुन नहीं खाये।
भला बुला शिष्य गुरु का कबहुँ नरक नहीं जाये।।

जब केवल दामन पकड़ने से ही यमराज जीव का कुछ नहीं बिगाड़ सकता तो फिर जो एक एक स्वांस मालिक की भक्ति में नाम में लगायेंगे तो उनके कल्याण में शक ही क्या है?वह निश्चय ही सच्चे आनन्द को प्राप्त सकेंगे। हम सब सौभाग्यशाली हैं जिन्हें ईश्वर की कृपा से मानुष जन्म मिला यम त्रास निवारण,जगतारण श्री परमहँसदयाल जी की शरण प्राप्त हुई,उनकी सच्ची राहनुमाई नसीब हुईऔर उनसे सच्चे नाम की प्राप्ति हुई है हमारा कर्तव्य है कि इस सुनहरी अवसर का लाभ उठाते हुये महापुरुषों के वचनों केअनुसार अपने जीवन के एक एक स्वांस को मालिक केअर्पित करते हुये अपनी आत्मा को आवागमन के चक्कर से,चौरासी की कैद से छुड़ाकर परमात्मा से मिलाना है।और मालिक से यही प्रार्थना करें कि प्रभो

कई जन्मो के बिछुड़े थे माधो ये जन्म तुम्हारे लेखे।
कहे रविदास आस लग जीवां चिर भयो दरसन पेखे।

प्रभो कई जनमों से आपसे बिछुड़े थे ये जीवन आपके लेखे लग जाये मन धोखा न दे इसी आस पर जीऊं कि आपके दर्शन पाकर जीवन सफल करूँ।

सीस दिये जो गुरु मिलें

महापुरुषों के वचन हैंः- ये तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।

सीस दिये जो गुरु मिलें तो भी सस्ता जान।।

ये वचन परमसन्त भी कबीर साहिब जी के हैं उन्होने ये वचन उस समय फरमाये थे जब एक जिज्ञासु श्री कबीर साहिब जी से नाम दीक्षा लेने और उन्हें अपना गुरु धारण करने के लिये उनके श्री चरणों में उपस्थित हुआ था। जब वह श्री कबीर साहिब जी के घर गया तो वे उस समय घर पर नहीं थे। घर में माता लोई जी थीं।माता लोई जी को उसने प्रणाम किया और अपने आने का कारण बताया कि मैने सत्संग में श्रवण किया है और सदशास्त्रों में भी पढ़ा हैं कि-

दुधां बाझ न रिझदी खीर जिवें मुर्शिद बाझ न मिलें रहमान भाई।
लिखया विच हदीसां दे आया ऐ हुक्म अल्लाह दा विच कुरान भाई।।
पीर पैगम्बर औलिया काजी मुल्ला हाफिज आलिम ते होर शेख बेली।
बाझ मुर्शिदां अपने अल्लाह ताईं दास कोई न सकया बेख बेली।।
जामन मुरीद दा जिचर न होवे मुर्शिद हिसाब जन्मां दा हुंदा बेबाक नाहीं।
कर्म धर्म करे अपनी मौज अन्दर रूह ओसदी होंदी पाक नाहीं।।
बाझ उस्ताद इल्म न कोई जान सके जिचर मुर्शिद बनदा कोई गाहक नाहीं।
ऐसे तरह ही रुहानियत न जान सके उस्ताद मल्लाह बिन होंदा तैराक नाहीं।
ऐसे तरह ही मुर्शिद दी लोड़ तैंनूं ढूँढना चाहिए कोई मुर्शिद जा के ते।
दास ताईं अनमोल समय मिलया कुझ न बनसी वक्त लँघा के ते।।

मैंने सुना है कि जिस प्रकार दूध के बिना खीर नहीं बनती इसी तरह ही सतगुरु के बिना परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती।नाही परलोक मे जीव की सदगति होती है । श्री कबीर साहिब जी की बड़ी महिमा सुनी है कि वे परमात्मा से मिलाने वाले हैं,भवसागर से पार लगाते हैं। इसलिये उनसे नाम दीक्षा लेने और उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरु बनाने के लिये उपस्थित हुआ हूँ। माता लोई ने कहा कि वे अभी घर पर नहीं हैं देर से आयेंगे। आपको अगर जल्दी हो तो नाम दीक्षा मैं भी दे सकती हूँ क्योंकि उनकी मुझे आज्ञा है नाम देने का अधिकार उन्होंने मुझे दे रखा है। उस जिज्ञासु ने विनय की कि ठीक है आप ही नाम दीक्षा दे दीजिए आपकी अति कृपा होगी। माता लोई अन्दर गईं।एक तराजू और छुरी लेकर बाहर आईंऔर उस जिज्ञासु के सामने बैठकर छुरी तेज़ करने लगी।वह जिज्ञासु ये देखकर बड़ा हैरान भी हुआ और भीतर भीतर भयभीत भी हो रहा था और सोचने लगा कि नाम दीक्षा देने में छुरी तेज़ करने का क्या काम है? कहीं मैं गल्त जगह पर तो नहीं आ गया?उसने माता लोई से कहा कि पहले आप मेरा काम करदें तो अति कृपा होगी?माता लोई ने कहा कि आपका ही काम कर रही हूँ। उसने कहा कि मेरा ही काम कर रहीं हैं? मैं समझा नहीं। माता लोई ने कहा इस छुरी से तुम्हारा सिर काटा जायेगा और उसे इस तराज़ू के एक पलड़े में रखा जायेगा।दूसरे पलड़े में गुरुमन्त्र(प्रभु का सच्चा नाम) रखा जायेगाअगर तुम्हारा सिर नाम के बराबर वज़न में तुल गया तो नाम दे दिया जायेगाऔर वज़न में अगर कम रहा तो नाम नहीं मिलेगा। यह सुनते ही वह भयभीत होकर वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया और मन में कहने लगा जो मैं विचार कर रहा था कि मैं कहीं गल्त जगह पर तो नहीं आ गया?मेरा विचार ठीक ही निकला। जब सिर ही कट जायेगा तो नाम कौन लेगा? नाम तो क्या मिलना था जान से और हाथ धो बैठता। वह डर के भागा जा रहा था और श्री कबीर साहिब जी के बारे में भला बुरा कहता जा रहा था।आगे से रास्ते में श्री कबीरसाहिब जी मिल गये।उन्होंने उसे रोक कर उससे पूछा कि भाई श्री कबीरसाहिब ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?जो उन्हें भला बुरा कह रहे हो? श्री कबीर साहिब जी को वह व्यक्ति पहचानता नहीं था।उसने अत से इति तक सब वृतान्त कह सुनाया कि उनकी बड़ी महिमा सुनी थी परन्तु वहाँ तो सब कुछ उसके विपरीत ही पाया। बड़ी मुश्किल से जान बचा कर आया हूँ नहीं तो आज काम तमाम हो जाता। जान बची सो लाखों पाये।श्री कबीर साहिब जी ये सुनकर मन ही मन मुस्कायेऔर सोचने लगे ये बेचारा कच्चा जिज्ञासु है।इसे शरीर की नश्वरता और सतगुरु के नाम की कीमत,महत्व और प्रभाव का पता नहीं है। इसीलिये ऐसा कह रहा है।तब उन्होंने वचन उच्चारण किये।

ये तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।

सीस दिये जो गुरु मिलें तो भी सस्ता जान।।

कि ये तन विष की बेल के समान है इस पर विषय वासनाओं के काम, क्रोध,मोह,लोभ,अहंकार,राग द्वेष,ईर्ष्या तृष्णा रूपी कई विषैले फल ही लगते हैं जिनके सेवन करने से जीव हमेशा दुःखी परेशान और विपदाओं से घिरा रहता है।जिनके कारण चौरासी के बन्धन औरआवागमन के चक्रमें फँसकर दुःख के झूले झूलता रहता हैऔर ये शरीर क्षणभंगुर भी है जिसका पल का भी भरोसा नहीं है इस शरीर को जिसे तुम बचाना चाहते हो इसकी हैसियत भी क्या है?

आदमी का जिस्म क्या है जिस पर शैदां है जहाँ।
एक मिट्टी की इमारत एक मिट्टी का मकाँ।

खून इसमें गारा है और ईंटें हड्डियाँ।
चन्द स्वाँसों पर खड़ा है ये ख्याली आसमाँ।।
मौत की पुरज़ोर आँधी जब इससे टकरायेगी।
देख लेना ये इमारत टूट कर गिर जायेगी।।

आदमी का शरीर है ही क्या जिस पर सारा जहान ही दीवाना है इसे सजाने सँवारने खिलाने पिलाने में ही दिन रात मुब्तिला है। ये एक मिट्टी की इमारत ही तो है पाँच तत्व का पुतला जो खून के गारे और हड्डियों की ईंटों से तैयार किया गया है ये मकान।चन्द स्वाँसों की बुनियाद पर ही खड़ी है ये इमारत। मौत की आँधी के एक ही झटके से यह इमारत गिर जाने वाली है।फिर इस सिर की कीमत ही क्या है? जिसे तुम बचा कर रखना चाहते हो?(कथा-एक राजा जो सबके सामने सिर झुकाता था--मन्त्री का एतराज़--राजा ने एक मुज़रिम का सिर बाज़ार में बेच लाने को कहा--
जिसकी बाज़ार में कोई कीमत नहीं पड़ी-----)

खुदी का वहमें बातिल दूर कर कि ये जिस्म फानी है।
नहीं इसको बका यह चीज़ वह जो आनी जानी है।।
नहीं मालूम कितने जिस्म तेरे हो चुके पहले।
नहीं मालूम क्या आगे को सूरत पेश आनी है।।
न कर जिस्मे कसीफे अनसरी से इश्क ऐ नादां।
अब हो या कि फिर अंजाम मर्गे नागहानि है।।
अतिब्बा,औलिया, शाहो-गदा को इक दिन आखिर।
फक्त दो गज़ जमीं पर चादर-ए-राहत बिछानी है।।
न कोई भी बचा है दस्ते अजल से मुझे हैरत है।
कि तुझको सादगी से क्यों उम्मींदे ज़िन्दगानी है।।

अपने दिल से ये वहम निकाल दे कि ये तेरा शरीर सदा कायम रहेगा।ये कायम रहने वाला नहीं है नाशवान है।तेरे पहले भी कितने ही शरीर हो चुके हैं और आगे भी न जाने कैसी सूरत पेश आयेगी?इसलिये इससे इतनी मुहब्बत न रख क्योंकि इसका अंजामअब हो या कि फिर इसे मौत तोआनी ही है।चाहे कोई भी हो औलिया फकीर राजा रंक सबको आखिर में कब्र में ही लेटना पड़ता है।इस मौत के पन्जे से आज तक जब कोई न बचा तो तू सदा ज़िन्दगानी की उम्मींद कैसे कर रहा है?फिर इसे बचा कर करोगे भी क्या?इससे हासिल भी क्या करोगे?वही कुछ जोआज तक करते आये हो? संसार का मोह,धन का लोभ,मैं मेरी,अहंकार,सांसारिक कामनाओं और ख्वाहिशों की पूर्ति और क्या प्राप्त करोगे?सांसारिक मोह और कामनाओं की पूर्ति से तुम्हें मिला भी क्या?यही कि चौरासी का बन्धन आवागमन का चक्र सदा के लिये दुःख चिन्ता कलह कल्पना, अशान्ति। इस सब के लिये ही शरीर बचाना चाहते हो?इतने जन्म माया की भेंट किये ते एक जन्म मालिक के निमित्त,सन्त सतगुरु की सेवा में और भजन भक्ति में लगा के तो देख।जिसे वास्तविक ज्ञान हो चुका है वह एक तो क्या लाखों सिर भी कुर्बान करने को तैयार रहता है। अगर करता है तो वह भी कम है।

सौ सौ वारी कटिये सीस कीजै कुर्बान।
नानक कीमत न पवे परिया दूर मकान।।

अगर एक ही सिर देने से नाम के अमृत की प्राप्ति होती है, अमृत के स्रोत सतगुरु मिलते हैं जिसे पाकर जीव सदा के लिये इन दुःखों से छुटकारा पा कर सच्चे आनन्द और मोक्ष को प्राप्त कर लेता है, सदा के लिये शाश्वत आनन्द प्राप्त होता है तो अगर सौ सौ बार भी सीस कुर्बान करना पड़े तो समझो सौदा सस्ता ही है। बल्कि सत्य तो यह है कि जिसने भी अपने आप को बचाने की कोशिश की वह मृत्यु को प्राप्त हुआ है,जन्म मरण को प्राप्त होता है और कई कई बार मरता है।जिसने अपने को सतगुरु पे कुर्बान कर दिया है सतगुरु की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिये अपना सब कुछअर्पण कर दिया है उसने सब कुछ पा लिया है। वह सदा के लिये अमर हो गया है। इतिहास में ऐसे बहुत से उदाहरण मिलते हैं जिसने भी प्रभु भक्ति की राह में अपने जीवन को लगाया उनके नाम आज रोशन हैं। वे अमर हो गये हैं। मीराँ ने अपने जीवन को सतगुरु की भक्ति,प्रभु के प्रेम में लगाया तभी तो हमसब उनका नाम श्रद्धा से लेते हैं।मीरां न होती तो राणा को कौन जानता था। ऐसे राणा सैंकड़ों हज़ारों हो चुके उसका अगर नाम है तो वह भी मीरां के कारण। महात्मा बुद्ध के कारण ही उनके पिता शुद्धोदन का सबको पता है।नहीं तो उस समय भारत में दो हज़ार राज्य थे।जिनके अपने अपने राजा थे शेष का नाम तो कोई नहीं जानता अगर शुद्धोदन का नाम जानते हैं तो केवल महात्मा बुद्ध के कारण। इतिहास भरा हुआ है ऐसे उदाहरणों से। उनमें से बाबा फरीद जी का आदर्शमयी जीवन हमारे लिये एक प्रेरणा का स्रोत है, अनुकरणीय है।

बाबा फरीद जी की माता ने उन्हें बचपन से ही परमात्मा की भक्ति में लगा दिया था। ब हुत कम ऐसी माताएं संसार में हुई जिन्होंने अपने प्रिय बच्चों को इस त्यागमयी जीवन यानि प्रभु भक्ति में लगाया है उन माताओंमें अधिकतर मदालसा,ध्रुव की माँ सुनीति,गोपीचन्द की माता एवं बाबा फरीद की माता का नाम लिया जाता है।रानी मदालसा सतयुग में हुईं। राजा मान्धाता की रानी थी।रानी मदालसा के चार पुत्र थे तीन

को उसने सन्यासी बना दिया था।पलने में हीअपने बच्चों को जब लोरी देती थीं तो यह कहती थी कि तुम शरीर नहीं हो आत्मा हो तुम्हारा संसार में आने का मकसद परमात्मा की प्राप्ति करना है। संसार नाशवान है केवल परमात्मा का नाम सत्य है इत्यादि।इस प्रकार जब उसने एकएक करके तीनों पुत्रों को सन्यासी बना दिया तो राजा मान्धाता ने कहा कि ये क्या कर रही हो ये राजपाट कौन सँभालेगा?कोई ऐसा भी तो होना चाहिये जो राजपाट सँभाले। तब मदालसा ने चौथे पुत्र को निष्काम कर्मयोग का पाठ पढ़ाया कि किस प्रकार संसार के कार्य व्यवहार करते हुये साथ साथ अपनी आत्मा को परमात्मा से भी मिलाना है चौथे पुत्र का नाम अलर्क था जो बाद में निर्मोही राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।गोपी चन्द की माता ने भीअपने पुत्र को गुरु की शरण में भेज दिया था। ध्रुव की माता ने भी ध्रुव को जो केवल पाँच वर्ष का ही था तो जंगल में तपस्या के लिये भेज दिया। इसी प्रकार ही बाबा फरीद की माता ने भी फरीद जी को बचपन से ही परमात्मा की भक्ति में लगा दिया। उन्हें नमाज़ पढ़ने के लिये प्रेरित करती और बाबा फरीद जी की चौकी के नीचे शक्कर रख देती कि अल्लाह की इबादत करने से अल्लाह खाने को शक्कर देता है।बाबा फरीद जी नमाज़ पढ़ने के पश्चात शक्कर पाकर प्रसन्न होते। एक दिन उन की माता शक्कर रखना भूल गई लेकिन बाबा फरीद जी को नमाज़ के बाद उस दिन शक्कर मिली और उस शक्कर का स्वाद कुछ अधिक था तो माता को भी चखाई कि आज की शक्कर तो बहुत स्वादिष्ट है। माता ने समझ लिया कि बच्चे में भक्ति के संस्कार प्रबल हैं। इसलिये उसने किशोर अवस्था में ही फरीद जी को परमात्मा की प्राप्ति के लिये भेज दिया।बाबा फरीद जी बारह वर्ष जंगली फल,पेड़ों के पत्ते आदि खाकर गुज़ारा करते रहे।बारह वर्ष बाद जब घर आये तो माता ने पूछा कि परमात्मा मिला?बाबा फरीद जी ने जवाब दिया किनहीं।जंगली फल व पत्ते खाकर गुज़ारा किया लेकिन परमात्मा फिर भी नहीं मिला। माता ने फरीद जी के सिर में तेल लगाते समय उनका एक बाल खींचा तो फरीद जी को दर्द हुआ।माता ने पूछा कि जिस पेड़ के तुमने पत्ते तोड़े क्या उनको दर्द न होता होगा जब किसी को तुम तकलीफ दोगे तो परमात्मा कैसे प्रसन्न हो सकता है और तुम्हे कैसे मिल सकता है?इसलिये जाओ दोबारा तपस्या करो।फरीद जी फिर घोर तपस्या में लग गये। तपस्या करते करते एक दिन जिस वृक्ष के नीचे बैठे थे उस वृक्ष पर चिड़ियां शोर मचा रही थीं अपने भजन में विघन समझ कर बाबा जी ने कहा क्यों मेरे भजन में विघन डाल रही हो जाओ मर जाओ।इतना कहना था कि चिड़ियां फड़ फड़ करके नीचे गिरींऔर निष्प्राण हो गईं ये देखकर फरीद जी ने सोचा कि इन बेचारियों ने मेरा क्या बिगाड़ा था नाहक इन्हें मार दिया और मां ने कहा था कि किसी को दुःख देने से परमात्मा नाराज़ होता है।इसलिये उन्होने कहा कि जाओ उड़ जाओ।इतना कहना था कि चिड़ियां फुर्र से उड़ गईं यह देखकर फरीद जी ने समझ लिया कि मुझ में मारने और जिन्दा करने की शक्ति आ गई है परमात्मा मुझ पर प्रसन्न है। मेरी तपस्या पूरी हो गई है मैं पूर्णता को प्राप्त हो चुका हूँ।अपनी माता को बताने के विचार से घर की तरफ चल पड़े। रास्ते में उन्हें पयास लगी गाँव के एक कूँएं पर गये जहाँ एक स्त्री जिसका नाम रंगरतड़ी था कूँए में से पानी निकाल कर बाहर गिरा रही थी।बाबाजी ने उससे कहा कि दरवेश को प्यास लगी है पानी पिलाओ। स्त्री ने बाबा जी की तरफ देखा और कहा ज़रा ठहरो मैं अपना काम कर लूं फिर आपको पानी पिलाती हूँ।फिर कूँए से पानी निकालकर बाहर गिराने लगी।फरीद जी ने कहा कि पानी निकाल कर गिराये जा रही होऔर दरवेश खड़े हैं ज़रा भी ख्याल नहीं दरवेश को पानी नहीं पिलाती। ये बात उन्होने ज़रा कड़े शब्दों में कही तो वह स्त्री बोली साईं ये चिड़ियां नहीं हैं जिन्हेंआप मार दोगे और जिन्दा कर दोगे यदि आपकेअन्दर इतनी शक्ति है तो देख लो मैं पानी क्यों बिखेर रही हूँ। फरीद जी सुन कर बड़े हैरान हुये कि यहां से लगभग बारह मील की दूरी पर मैने चिड़ियाँ मारी और जिन्दा की हैं उसे किसी ने देखा भी नहीं इसे कैसे मालूम हो गया।जब वह स्त्री अपना काम कर चुकी तो उसने कहा साईं जीअब मेरा काम हो गया है अब आप पानी पिओ हाथ मुँह धोवो और घर चलें भोजन तैयार है भोजन करके जाना। फरीद जी ने कहा बेटी कि अब मैं पानी बाद में पिऊँगा पहले मुझे ये बता कि तुझे कैसे पता चला कि मैनें चिड़ियां मारी और जिन्दा की हैं और तेरा ऐसा कौन सा ज़रूरी काम था जो पानी निकालकर बाहर फैंक रही थी।उस औरत ने जवाब दिया कि मेरी बहन का घर यहाँ से बीस मील की दूरी पर है उसके घर में आग लग गई है और वह सत्संग सुनने के लिये गई हुई है मैं उसके घर की आग को बुझा रही थी।अब वह बुझ चुकी है।बाबा फरीद जी ने कहा बेटी ये ताकत तुमने कैसे प्राप्त कर ली है तेरे हाथों की मेंहदी भी अभी नहीं उतरी इतनी छोटी उम्र में तूने ये ताकत कहाँ से पाई है।रंगरतड़ी ने कहा आप दरवेश लोग हैं। धूनी रमा सकते हो कठिन तपस्या कर सकते हो उल्टे लटक सकते हो जंगली फल फूल खाकर गुज़ारा कर सकते हो लेकिन हम ऐसा नहीं कर सकतीं।परमात्मा ने हमें पुरुषों की सेवा बख्शी है। मैं अपने पति को परमात्मा रूप समझकर उनकी सेवा करती हूँ उसके प्यार में जीवित रहती हूँ और वह श्रेष्ठ पुरुष मेरा पति भी हमेशा परमात्मा के भजन में लीन रहता है उसकी निष्कामसेवा से मुझे ये शक्तियाँ सहज ही प्राप्त हो गई हैं।मैं पति वाली हूँआपका कोई पति या मालिक नहीं है।एक बात मैं आप से पूछती हूँ कि घरबार छोड़ कर गये तो परमात्मा की प्राप्ति के

लिये थे पर शक्तियों के चक्र में फँस गये हो।मैंअपने पति के साथ अपने सतगुरु के दरबार में जाती हूँ वहाँ सुनती हूँ कि करामात करना कुफ्र है परमात्मा इससे नाराज़ होता है करामात करने का फल दरगाह में भुगतना पड़ता है आपने शक्तियों के चक्र में पड़कर समय बर्बाद कर दिया। बिना मुर्शिद के परमात्मा का पता नहीं चलता उसका भेद नहीं मिलता। इसलिये अगर परमात्मा को पाना चाहते हो तो कोई अल्लाह रूप मुर्शिद की तलाश करो उनसे मुहब्बत करो उनकी खिदमत करो जिससे तुम्हें अल्लाह से मिलाप हो जायेगा।मुर्शिद की कृपा से घट मेंअल्लाह का नूर प्रकट होगा। फरीद जी ने कहा जब तुम्हें इतना ज्ञान है तो मुझपर एक कृपा और कर ये बता दे कि मेरा मुर्शिद मुझे कहाँ मिलेगा?कहते हैं तब उस रंगरतड़ी नेकहा किआप अज़मेर शरीफ चले जाओ वहां कामिल मुर्शिद हज़रत मुईउद्दीन चिश्ती के अनन्य मुरीद हज़रत कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी जी को अपना मुर्शिद बना लो उन्हीं से तुम्हें अल्लाह का भेद मिलेगा। उसके मार्गदर्शन से बाबा फरीद जी अज़मेर गये। मुर्शिद की शरण में गये उनसे नाम दीक्षा ली और नित्य प्रति अपने मुर्शिद को गर्म पानी से स्नान करवाया करते। अपने मुर्शिद की सेवा करते करते बारह वर्ष बीत गये परीक्षा की घड़ी भीआ गई। एक दिन बरसात बहुत अधिक होने के कारण जो आग उन्होने सँभाल कर रखी थी वह बुझ गई।आजकल की तरह माचिस नहीं हुआ करती थी।आग को दबा कर रखा जाता था उन्हें फिक्र हुई कि सुबह पानी कैसे गर्म होगा? आधी रात को ही उठेऔर नगर में आग लेने के लिये चलने को तैयार हुये अपनी ऋद्धि सिद्धि सेआग जला सकते थे लेकिन ऋद्धि सिद्धि से परमात्मा नाराज़ होता है उसकी नाराज़गी के कारण सिद्धि से आग न जलाई।सर्दी के दिन थे बरसात हो रही है सब नगर सो रहा है क्या किया जाये। दूर किसी घर में दिया जलता नज़र आ रहा है जायें तो कैसे। सोचने लगे।

जाये मिलाँ तिनां सजना मेरा टूटे नाही नेहु।
फरीदा गलियाँ चिक्कड़ घर दूर नाल प्यारे नेहु।।
चलाँ ताँ भिज्जे कम्बली रहाँ ताँ टूटे नेहु।
भिजो सिजो कम्बली अल्लाह बरसो मेहु।।
जाये मिलां तिना सज्जनां मेरा टुटे नाहिं नेहु।।

कहने लगे गलियों में कीचड़ हो रहा है बरसात हो रही है सर्दी का मौसम आधी रात का समयअगर जाता हूँ तो कम्बल भीगता है ठन्ड लगती है वृद्ध शरीर है अगर नहीं जाता तो मुर्शिद से प्यार का नाता टूटता है खड़े सोचते रहेआखिर फैंसला किया कि इस शरीर को रखकर क्या करेंगे।अगर मुर्शिद की राह में कुर्बान होता है तो होने दो एक न एक दिन तो इसे छोड़ना ही है। मेरी कम्बली भीगती है तो भीगने दो यदि शरीर जाता है तो जाये चाहे रहे।मुझे तोआग लाकर पानी गर्म करकेअपने प्यारे मुर्शिद को स्नान कराना है। मेरा उनसे मुहब्बत का नाता नहीं टूटना चाहिये।आखिर चल दिये। एक मकान में दीपक जलता देखा तो आवाज़ लगाई कि अल्लाह के वास्ते मेरी बात सुनों में बहुत सन्ताप में हूँ मुझपर रहम करो।आवाज़ सुनकर एक स्त्री ने अन्दर से ही कहा(वह घर वेश्या का था)उसने कहा।तू कौन है इससमय सभी सोये पड़े हैं तू क्या चाहता है?बाबा फरीद जी ने कहा कि मेरा नाम फरीद है मैने अपने मुर्शिद को स्नान कराना है मेरे पास जो आग थी वह बुझ चुकी है मुझे थोड़ी सी आग दे दे।मुझपर रहम कर तेरा एहसान मैं कभी नहीं भूलूँगा।खुदा तेरे पर बख्शिश करे। खुदा के वास्ते थोड़ी सी आग दे दे।वह बोली फरीदा यह घर पीरों फकीरों मुरीदों के लिये नहीं है यहाँ तो दोज़ख के टिकट बिकते हैं जिस घर के आगे तू खड़ा है आप पीर, मुरीद लोग इसे नफरत की निगाह से देखते होअति बुरा मानते हो यहाँ सब कुछ मोल बिकता है तू भी मोल दे के ले सकता है।आग मुफ्त नहीं मिलेगी तुझे उसके बदले मेंअपने शरीर का कोईअंग देना पड़ेगा।बाबा फरीद जी ने कहा

ये तन गंदगी की कोठड़ी हरि हीरियों की खान।
सिर दित्यां जे हरि मिले ताँ भी सस्ता जान।।

यदि तू मेरा सिर भी माँगे तो मैं तेरे चरणों में रख दूँगा पर मुझे आग दे दे। उस समय उस औरत ने कहा तू अपना सिर नहीं केवल अपनी एक आँख निकाल कर दे दे।और आग लेजा।बाबा फरीद जी ने कहा मुझे बहुत खुशी हुई कि तूने मुझपे रहम करके मेरा सिर नहीं माँगा केवल एक आँख ही माँगी है मैं तेरे हक में दुआ करता हूँ कि अल्लाह तुझे शान्ति बख्शे और अपने प्यार मुहब्बत का एक कण तेरी झोली में भी डाल दे।बाबा फरीद जी ने अपनी आँख निकाल कर उसके हवाले कर दी अपनी पगड़ी फाड़ी और दर्द पीकर अपनी आँख पर बाँध ली आग ले जाकर पानी गर्म किया सुबह हुई जब मुर्शिद को स्नान कराने लगे तो मुर्शिद ने पूछा कि फरीद आँख पर पट्टी क्यो बाँध रखी है?फरीद जी ने कहा आँख आ गई है।(आँख आ गई का मतलब होता है दर्द करती है) तब मुर्शिद ने बड़ी प्रसन्नता के लहज़े में फरमाया कि आ गई है तो फिर बाँध क्यों रखी है?जब आ गई है तो आ ही गई है पट्टी खोल दे।पट्टी खोली तोआँख को पहले जैसी ठीक पाया। तब मुर्शिद ने अपने अंक में भर कर उन्हें अहम् ब्रह्म अस्मि बना दिया उनके हृदय में परमेश्वर ऐसे प्रकट हो गये जैसे अन्धेरी रात के बाद प्रकाश प्रकट होता है।परमात्मा का रूप उनके हृदय में झलकने लगा वे मुर्शिद की कृपा से।स्वयं परमात्म रूप हो गये।

जो कुर्बानी देने से घबरा गया भय खा गया शरीर का जिसने मोह रखा। अपने आप को बचाने का जिसने प्रयास किया वह तो मृत्यु को प्राप्त हो गया आज उसका नाम पता भी नहीं मिलता कई बार मरता जीता होगा। लेकिन जिसने शरीर का मोह त्यागकर सांसारिक कामनाओं को एक ताक पर रख कर अपने सतगुरु की प्रसन्नता का,सच्चे नाम का सौदा कर लिया सतगुरु की मुहब्बत मेंअपने जीवन को लगा दिया वे अमर हो गये। अनेकों जीवों के अमर बनाने वाले बन गये।इसलिये कहा है कि--

ये तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिये जो गुरु मिलें तो भी सस्ता जान।।

आप कहेंगे कि हम तो कलयुगी जीव हैं इतनी कठिन तपस्या साधना और कुर्बानी नहीं दे सकते।लेकिन आजकल वर्तमान युग के समय को देखते हुये महापुरुषों ने भक्ति का सौदा और भी सस्ता कर दिया है सिर देने,आँख निकाल कर देने की कोई आवश्यकता नहीं और नाही संसार को छोड़कर जंगलों में जाने की ज़रूरत है और नाही कोई कठिन तपस्या करनी है। श्री गुरु महाराज जी ने हम जीवों पर दया और उपकार करके अपना प्यार बख्शिश करने के लिये बड़े ही सरल साधन बना दिये हैं जिन्हें संसार का प्रत्येक व्यक्ति चाहे छोटा है या बड़ा,वृद्ध है या जवान,स्त्री है या पुरुष,अमीर है या गरीब सभी संसार के सब कार्य व्यवहार करते हुये भी बड़ी सुगमता से इन साधनों का पालन करके अपने जीवन को सुखी एवम सफल बना सकते हैं वो साधन हैं।

श्री आरती पूजा सेवा सतंसग सुमिरण और ध्यान।
श्रद्धा से जो नित करे निश्चय हो कल्याण।।

इसलिये गुरुमुखों का कर्तव्य है इन पांचों नियमों का पालन करते हुयेअपने मालिक सतगुरु का प्यार व आशीर्वाद प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनायें और परलोक सँवार लें।।

सतगुरु की आवश्यकता

जिन सौभाग्यशाली जीवों के अपनी ज़िन्दगी सुखी एवम् सफल बनाने के लिये सच्चे राहनुमा सन्त सतगुरु की प्राप्ति हो जाती है और जो उनकी राहनुमाई में चलकर उनके वचनों अनुसार अपने जीवन को ढाल लेते हैं ऐसे जीव अपने ज़िन्दगी के मकसद को प्राप्त करके जीवन को सफल बना जाते हैं। गुरुवाणी का वाक है। जिस मस्तक भाग तिन सतगुरु पाया। पूरी आसा मन तृप्ताया। जिनके ऊँचे भाग होते हैं जिनके मस्तक पर विधाता ने लेख लिखा होता है उन्हें ही निर्गुण निराकार परमात्मा केसर्गुण साकार रूप सन्त सतगुरु की चरण शरण प्राप्त होती है। जिनके सीस पर सतगुरु का साया है जो सतगुरु के चरण कमलों की निर्भय छाया में अपना जीवन बिताते हैं,जिन्हें सतगुरु की भक्ति व प्रेम हासिल है,जिनके हृदय में सतगुरु का ध्यान तसव्वर बस गया है सहीअर्थों में वही सौभाग्यशाली गुरु मुख जन ही होते हैं उनके दोनों लोक सँवर जाते हैं उनका जन्म सार्थक हो जाता है। लेकिन जिन्होंने अपने जीवन में अपनी आत्मा की उन्नति के लिये कोई आध्यात्मिक गुरु धारण नहीं किया है जो जीव सतगुरु की भक्ति से वंचित हैं जिनके सीस पर सतगुरु का वरद हस्त नहीं है और जो अपने अमुल्य जीवन को संसार के मोह में, इन्द्रियों के रस भोगों में व्यतीत कर देते हैं उनका जीवन व्यर्थ हो जाता है। ऐसे जीवों के प्रति सन्त कथन करते हैं-

सतगुरु की भक्ति जिसे हासिल नहीं,सर पे दस्ते मुर्शिद कामिल नहीं।
उस बशर की ज़िन्दगी है इस तरह,सल्तनत हो बेहुक्मराँ जिस तरह।
रात हो जैसे बगैर अज़ मेहताब।दिन में न हो जैसे तुलुअ आफताब।

याजैसे हो कोई लावरिसऔर सुनसाँ मकां,ज़ीं नफस न रहता हो कोई वहाँ। फरमाते हैं कि जिन्हें सतगुरु की भक्ति प्राप्त नहीं जिनपर सतगुरु की कृपा का हाथ नहीं जो बिना सतगुरु के जीवन बिताते हैं ऐसे जीवों का जीवन उसी प्रकार है जिस प्रकार कोई सल्तनत बेहुक्मराँ हो। किसी देश का कोई राजा न हो तो उस देश की प्रजा किसी दूसरे देश के राजा के अधिकार में आकर गुलामी का जीवन बिताने पर मज़बूर हो जाती है जो गुलामी की जंज़ीरों में बँधा हुआ बेगार ही ढो रहा हो तो उसे जीवन में सुखशान्ति कैसे प्राप्त हो सकती है। बिना चाँद के जैसे रात अन्धेरी होती है या दिन में सूर्य के उदय न होने से अन्धेरा छा जाता है अन्धेरे में हमेंशा ही ठोकरेंखाने का भय रहता है और मानुष अपनी मन्ज़िले मकसूद पर कुशलपूर्वक नहीं पहुंच सकता।आगे वर्णन करते हैं कि या कोई लावारिस औरसुनसान मकान हो जहाँ वर्षों से कोई भी न रह रहा हो तो उस मकान में भूत,प्रेतों,साँप,बिच्छु आदि हिंस्र जानवरों का डेरा हो जाता है इसी प्रकार ही जिसके

हृदय के आसन पर सतगुरु का शासन नहीं तो वह जीव काल और माया के अधीन हुआ सारा जीवन माया की बेगार ही ढोता रहता है।अज्ञान के अन्धेरे भटकता रहता है और सारी आयु दुःखों और परेशानियों में ही व्यतीत हो जाती है और मृत्यु उपरान्त भी दुःख उठाता है।जीवन में सतगुरु का होना कितना महत्वपूर्ण है उसके लिये सन्त महापुरुषों ने यहाँ तक कह दिया है।

खाक के पुतले की कीमत खाक है मुर्शिद बगैर।
सर बसर मिट्टी का माधो राख है मुर्शिद बगैर।
लाख तीर्थ हज करे रोज़ा नमाज़ और बन्दगी ।
फिर भी तू नापाक है मुर्शिद बगैर ।।

आज तक जितने भी साधक,साधु सन्त ऋषि मुनि योगी हुये हैं उन सभी ने सतगुरु की शरण ग्रहण करके सतगुरु की भक्ति व प्रेम प्राप्त करके सतगुरु के चरणों में अपनेआपको समर्पित करके ही उच्च कोटि को प्राप्त किया। जन्म मरण के बन्धन से मुक्त होकर ब्रह्मज्ञान और मोक्षपद के अधिकारी हुये और संसार के लिये पुज्यनीय बने। सतगुरु रुपी पारस से छूकर के वे स्वयं पारस रूप हो गये और उनके सम्पर्क में आने वाले संसारी जीव रूपी लोहे उनसे छूकर कंचन बन गये। उन साधु भक्तों सन्तों के जीवन चरित्र कथा पढ़ने सुनने से उनके कदमों पर चलकर अपने लिये मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करते हैं। संसार में आकर जिसने भी सतगुरु की भक्ति की उसकी कीमत का अन्दाज़ा नहीं लगाया जा सकता। इसके विपरीत जिनके जीवन में सतगुरु का प्रवेश नहीं जो अपने जीवन को केवल शरीर के रस भोगों में ही व्यतीत कर देते हैं या मनमति अनुसार भले ही जप तप नियम रोज़ा, नमाज़ या बन्दगी करते हों तो भी,लाख तीर्थ हज करे रोज़ा नमाज़ और बन्दगी वह मुर्शिद बगैर नापाक हैं।गुरु भक्ति के बगैर ये सब निष्फल हैं।

गर्भ योगेश्वर गुरु बिना लागा हरि की सेव।
कहें कबीर वैकुण्ठ से फेर दिया शुकदेव।।
जनक विदेही गुरु किया लागा हरि के सेव।
कहें कबीर वैकुण्ठ में फेर मिला शुकदेव।।

शुकदेव जी गर्भयोगेश्वर कहे जाते हैं लेकिन गुरु के बिना उन्हें वैकुण्ठ से वापिस भेज दिया गया। जब उन्होने विदेह जनक जी को गुरु धारण किया उनके चरणों में अपने आपको समर्पित किया तब वे बैकुण्ठ के अधिकारी हुये। देवर्षि नारद जी ब्रह्मा जी के मानस पुत्र कहे जाते हैं।वे अपने जप तप योग साधना के प्रभाव से तीनों लोकों में विचरण कर सकते थे।जब जब वे विष्णु लोक में जाते थे वहाँ उनका स्वागत सत्कार तो होता लेकिन उनके जाने के पश्चात जहां वे बैठते थे उस जगह को साफ करके पवित्र किया जाता था। एक दिन अचानक नारद जी ने ऐसा करते देखा तो उन्होने भगवान विष्णु जी से प्रार्थना की कि भगवन एक तरफ तो मेरा इतना सत्कार किया जाता है दूसरी तरफ मेरे जाने के पश्चात मेरा अपमान किया जाता है कृप्या इसका कारण बतायें?भगवान ने कहा नारद तुमने अपने योग बल से जप तप से वैकुण्ठ तो प्राप्त कर लिया है लेकिन अभी कोई गुरु धारण नहीं किया इलिये निगुरे हो और जो निगुरा है वह नापाक है। लाख तीर्थ हज करे रोज़ा नमाज़ और बन्दगी फिर भी तू नापाक है मुर्शिद बगैर।निगुरे होने के कारण आप नापाक हैं इसलिये तुम्हारे जाने के पश्चात जगह को पवित्र किया जाता है।-------- ।नारद जी द्वारा धीमर को गुरु धारण करना,गुरु में संशय के कारण भगवान द्वारा चौरासी का शाप

और गुरु द्वारा बताई युक्ति से ही चौरासी से छुटकारा प्राप्त करना------- गुरु के वचन हुए अब तुम पाक हो तुम्हें कोई नापाक नहीं कहेगा।

जीवन में सतगुरु का होना कितना महत्वपूर्ण है उसके लिये भक्त नामदेव जी के जीवन का एक प्रसंग अति शिक्षाप्रद है।जैसा कि सब जानते ही हैं कि भक्त नामदेव जी ने बचपन में ही भगवान श्री कृष्ण जी को (विट्ठल भगवान)अपनी प्रेमाभक्ति के प्रताप से प्रकट कर लिया था।भगवान स्वयं उसके साथ लीला करते थे उसके साथ वार्तालाप करते थे। इस कारण नामदेव जो को भक्त रूप में सभी सम्मान और आदर करते थे।नामदेव जी के समकालीन हुये हैं चार बहन भाई,सन्त ज्ञानेश्वर, निवृतिनाथ,सोपानदेव और उनकी छोटी बहन मुक्ताबाई। ये चारों भाई बहन और नामदेव ये सब बालक होते हुये भी भक्ति के कारण सभी से सम्मानित थे इसकी बाल क्रीड़ाओं में ईश्वर बोध का सौन्दर्य भलकता था।ये चारों भाई बहन और नामदेव जी ये पाँचों भक्तों में शिरोमणी गोरा कुम्हार के पास गये इन पाँचों के आते ही सबने उठकर स्वागत किया। गोरा कुम्हार के बारे में भी थोड़ी सी जानकारी दे देना उचित है। गोरा कुम्हार संसार के कार्य व्यवहार करते हुये भी हमेशा भगवान के नाम सुमिरण उनके ध्यान में मग्न रहते। एकदिन वह अपने पैरों से मिट्टी रोंद रहे थे।इतने में उनका छोटा बच्चा उनके पास आया और उनकी गोद में बैठने का उत्सुक था लेकिन गोरा तो भगवान के नाम में इतने मस्त थे विट्ठल विट्ठल करते करते मिट्टी रोंदते रहे। उसी अवस्था में उनकी समाधी लगी हुई थी।बच्चे का उनको तनिक भी आभास न था। बच्चा उस मिट्टी में दबकर ऊपर पैरों से रोंदा गया और मर गया। लेकिन ये भगवान के कीर्तन में मस्त थे।थोड़ी देर के बाद बच्चे

की माँआई उसने मिट्टी में खून देखा तो उसका माथा ठनका उसने देखा कि बच्चा मिट्टी में रौंदा जा कर मर चुका है। उसने अपने पति गोरा को झिंझोड़ा गलियाँ दीं और जोर से रोने लगी कि तुमने मेरे बच्चे को मार डाला। गोरा को जब होश आया तो वो भी देखकर विस्मित हुये लेकिन उन्होंने कहा। ज़रूर इसमें भगवान विट्ठल की अपनी ही मौज है।उसकी पत्नी ने कहा इतना ही भगवान के भक्त बने फिरते हो तो मेरे बच्चे को जिन्दा करो नहीं तो मैं भी अभी अपनी जान देती हूँ। गोरा द्वारा वितनी करने पर भगवान की कृपा से वह बच्चा फिर जीवित हो गया था। ये थे गोरा कुम्हार।

जब ये पाँचों गोरा कुम्हार के पास आये तो बर्तनों को ठोंक पीट रहे थे। मुक्ताबाई ने सहज ही उनसे पूछ लिया। काका यह क्या ठोंका पीटी कर रहे हो।गौरा कुम्हार ने कहा बेटी कच्चेऔर पक्के घड़ों की पहचान कर रहा हूँ। मुक्ताबाई ने बाल सुलभ चपलतावश बर्तन गढ़ने की थापी उठा ली और कहने लगी काका हम सब भी तो मिट्टी के घड़े हैं ज़रा देखो तो हमारे इन घड़ों में किसका घड़ा कच्चा है?गौरा जी ने थापी उठाई और लगे सभी की पीठऔर सिर ठोंककर थपथपाने।इस क्रम में एक एक करके सभी की बारी आती वह सिर झुकाकर मौन धारे थापी की चोटें सहता लेकिन मुख से उफ न करता। इस प्रक्रिया के दौरान जब नामदेव के सिर पर थापी की पहली चोट पड़ी तो उनके मन में छुपाअभिमान जाग पड़ा वे सोचने लगे यहकाका तो कर्म से ही नहीं मन से भी कुम्हार गँवार है ये इतना भी नहीं जानते कि सन्त जनों पर कहीं ऐसी चोटें मारी जाती हैं। गोरा कुम्हार को नामदेव जी की महिमा का भी ज्ञान था।फिर भी उनपर थापी से चोटें लगाये जा रहे थे नामदेव जी झुँझलाते रहे। सबके थापी की चोटें पड़ चुकी थीं। मुक्ताबाई निर्णय जानने को उत्सुक थी।काका बताओ न क्या परिणाम रहा। काका ने संयत स्वर में कहा इतनों में इस नामदेव का घड़ा कच्चा है।नामदेव केसिर पर तो घड़ों पानी फिर गया। सब अवाक रह गये। नामदेव जी इस अपमान को सहन न कर सके।प्रभु की लीला विचित्र है खेल खेल में ही धारा पलट देतें हैं। यहां भी भगवान विट्ठल की माया थी। मुक्ताबाई ने पूछा। काका बताओ न यह घड़ा कब और कैसे पकेगा? मुक्ताबाई के सवाल में नामदेव के प्रति गहरी संवेदना थी।गोरा जी पुनः बोले।नामदेव निगुरा हैजब विसोबा जी के समक्ष शिष्यवत उपस्थित होकर उनके पाद पदमों में मान सम्मान अहंकार और सर्वस्व समर्पित करेगा तब इसमें पकावट आयेगी अन्यथा यह हमेंशा कच्चा ही रहेगा।चाहे कुछ भी क्यों न करे।भक्तमण्डली में सन्नाटा छा गया।नरहरि सुनार,साँवता जी माली,सोपानदेव, निवृतीनाथ,ज्ञानेश्वर सब के सब चुप थे।गोरा जी कभी कटुवचन नहीं बोलते थे।वे तो बोलते ही कम थे तिस पर एक महान सन्त के प्रति निगुरा शब्द आश्चर्यजनक था। गोरा जी का एक एक शब्द तीर की तरह नामदेव जी को बींध गया।मन ही मन सोचने लगे वह दीन हीन बूढ़ा बिसोबा।जिनकी सन्त मण्डली में मात्र एक सेवक की तरह गिनती है उसे अपना गुरु बनाऊं कैसे हो सकता है?वे रोष में भूल गये कि साधना का सार तत्व अहंकार का समूल नाश है औरआज वह उसी को बचाने की चेष्टा कर रहे हैं। गोरा जी इतना कह कर चुप हो गये।

गुरु को जो गाहिला निगुरा न राहिला।
गुरु बिन ज्ञान न पाईला रे भाइला।।

नामदेव जी ने अपने आराध्यदेव के सामने पहुँचकर रो रो कर अपनी मनोव्यथा निवेदित की। प्रभुआपकी मुझपर इतनी करूणा कि आप प्रत्यक्ष प्रकट होकर मुझे प्यार करते हैं पुचकारते हैं,गोद में बिठाकर बहलाते हैं। साथ खेलते,बोलते चलते हैं फिर भी सन्तमण्डली में मेरा ऐसा घोर अपमान तिरस्कार। आप कहते थे नामदेव तुझसा प्यारा मेरा कोईअन्य भक्त नहीं। क्या यह सब झूठ था। भगवान विट्ठल प्रकट हुये बोले,नामदेव जो कुछ मैने कहा था वह भी सत्य है तुम मुझे इतने ही प्रिय हो परन्तु जो गोरा जी ने कहा है वह भी उतना ही सत्य है बिना गुरु की शरणागति के अन्य कोई उपाय नहीं। ब्रह्मा विष्णु महेश भी बिना गुरु के आत्मज्ञान प्राप्त करने में असमर्थ रहे। तुम्हें बिसोबा जी के पास जाना ही चाहिये।इसे तुम मानो या न मानो यह तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।अब उनके पास कोई चारा न था। वे बिना मन से बिसोबा जी के गाँव पहुंचे। वे घर पर नहीं मिले। उन्हेंढूँढते ढूँढते वे एक शिवालय में पहुँचे।वहां जाकर क्या देखते हैं कि बिसोबा जी एक मैली कुचैली फटी सी चादरओढे सो रहे थे। उनके दोनों पाँव शिवलिंग पर टिके हैं।यह देखकर उन्हें उनकी नासमझी,कुबुद्धि पर घृणा हुई बुद्धि पर तरस आया। सोचने लगे गोरा जी और भगवान ने एक अज्ञानी व्यक्ति को गुरु बनाने का आदेश कैसे दे डाला।इधर नामदेव के मन में कुविचार पनप रहे थे और उधर विसोबा जी ने पुकारा औ नाम्या तू आ गया?इसे सुनकर वह हतप्रभ रह गये।मन में क्रोध हुआ कोई नाम्या कहकर क्यों उसे पुकारे। उनको केवल आम जनता ब्लकि बिसोबा जी स्वयं भी उन्हें भगवान नामदेव के नाम से सम्बोधित करते थे।आज नाम्या कहकर पुकार रहे हैं। कहीं यह सन्नीपात ग्रस्त तो नहीं।उसकेअहंकार को चोट करते हुये बिसोबा जी ने कहा नाम्या मैं रोग ग्रस्त हूँ शक्तिहीन वृद्ध हूँ मुझे ध्यान नहीं रहा कि पाँव कहां रखने चाहियें।तू ऐसा कर कि पाँवों पिण्डी से हटाकर ऐसी जगह रखदे जहां शिव की पिण्डी न हो। नामदेव ने ऐसा ही किया। दोनों हाथों से पाँवों पकड़ कर ऐसे स्थान पर रख दिया जहाँ शिवलिंग नहीं था और तभी विसमय से देखने लगे कि जहां बिसोबा जी के पांव रखे उस भूमि में से प्रकट

होकर शिवलिंग ने पुनः बिसोबा जी के चरणों कोअपने ऊपर धारण कर लिया है। तीन बार ऐसा हुआ अन्त में श्री चरणों को हाथों से उठाने के प्रभाव से उनके हृदय के कपाट खुल गये। अहंकार चूर चूर हो गया। उनके मुख से स्वतः ही शब्द निकल पड़े। शिव,विट्ठल तुम्हीं हो गुरुदेव।पारब्रह्म परमेश्वर आप ही स्वयं हो धन्य हैंआपके पाद पदमों का प्रताप जिन्हें शरीर पर धारण करने हेतू स्वयंभू स्वयंआतुर हैं।वास्तव में मैं अज्ञानी हूँ आप में संशय वृति रखी। मुझे शरणागति दो प्रभु मैं जैसा हूँ तैसा हूँ।अब उन्हें लगा बिसोबा जी और भगवान विट्ठल एकाकार हैं।उन्हें निजस्वरूप कीअनूभूति हुई।गा उठे।

सफल जन्म मोकऊ गुरु कीन्हा।दुःख विसार सुख अन्तर लीन्हा।
ज्ञान अन्जन मोकऊ गुरु दीन्हा।राम नाम बिन जीवन मन हीना।
नामदेव सिमरन कर जाना। जग जीवन सिउ जीव समाना।।

इस प्रसंग में एक विचारणीय तथ्य है कि भक्त नामदेव जी भगवान ----

सतसंग की महिमा

जिन सौभाग्यशाली जीवों पर प्रभु की किरपा होती है उन्हें ही सतगुरु की चरण शरण उनकी संगति व सतसंग की प्राप्ति होती है सतपुरुषों के वचन हैं- हरि के सन्त सदा थिर पुजहु जो हरिनाम जपात।।

जिन पर किरपा करत हैं गोबिन्द ते सतसंगति मिलात।।

फरमाते हैं कि सन्त सतपुरुषों का सतगुरु का हमेशा पूजन करो सेवा करो जो मालिक प्रभु से मिलाने वाला प्रभु का नाम प्रदान करते हैं। जिन पर गोबिन्दअर्थात परमात्मा किरपा करते हैं उन्हें ही सतसंग की प्राप्ति होती है। आप सब सौभाग्यशाली हैं जिन्हें सतपुरुषों की चरण शरण सतसंग की प्राप्ति हुई है। क्योंकि वेदों शास्त्रों व सदग्रन्थों में सतसंग की बड़ी महिमा गाई गई है।सतसंग में आने से ही जीव को सत असत की परख होती है। भले बुरे का ज्ञान होता है आत्मा की पहचान होती है अपनी ज़िन्दगी के असली मकसद का पता चलता है और उसे प्राप्त करने का मार्ग मिलता है। इसलिये यदि कोई अपनी ज़िन्दगी को सुन्दर, शानदार,सुखी व सफल बनाना चाहता है तो वह नित्यप्रति सतपुरुषों का सत्संग श्रवण करें।सत्संग में आने से ही जीव की हालत सुधर जाती है। सतसंग की महिमा का वर्णन करते हुये सन्तों ने बड़े ही सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है।

ख्वाह कोई होवे बदकार पापी सुधर जाये जो सतसंग आ जांदा।।
गंदा जल भी गर मिल जाये गंगा उह भी नाम गंगोदक रखा जाँदा।।
ज़ंग मारेया लोहा चढ़े सान ऊपर नवीं चमक ते दमक बना जांदा।।
ओही लोहा गर पारस नाल खाये टक्कर सोना बनके कीमत है पा जांदा।।
लकड़ी ढ़ाक दी चन्दन दा संग करके चन्दन वांगू ओ खुशबूदार हो जाये।।
ऐसे तरह ही सन्तां दा संग करके दास पापी दा वी निस्तार हो जाये।।

अगर कोई कितना भी दुराचारी हो जीवन में उसने अनेकों पाप किये हों अगर वह सतसंग में आ जये तो वह भी सदाचारी, पुण्य आत्मा बनकरसुधर जाता है। जिस तरह अगर गंदा जल अगर गंगा में मिल जाये तो वहभी गंगा जल कहलाने लगता है जिस जल से लोग घृणा करते थे वह जबगंगा में मिल गया तो लोग उसे श्रद्धा से पान करने लग जाते हैं। ज़ंग लगा हुआ लोहा सान पर चढ़कर साफ होकर जब पारस से छू जाता है तो वह सोना बन जाता है।उसकी कीमत बहुत बढ़ जाती है।ढाक की लकड़ी जिस में न तो कोई इमारती वस्तु बन सकती है नाही उसमें खुशबू है उसकीजगह केवल चुल्हे में है।वह लकड़ी भी अगर चन्दन का संग कर लेती है तो वह भी चन्दन की तरह खुशबूदार हो कर कीमती बन जाती है।इसी तरह चाहे कोई जैसा भी व्यक्ति हो सतपुरुषों की संगत में आ जाता है उनके सतसंग में आ जाता है तो उसकी हालत बदल जाती है,सुधर जाती है। जैसे कोई सतपुरुषों के चरणों में,भगवान के चरणों मेंअर्पित करने के लिये सेब केला अनारआदि फल या कोई मिठाई लेकर आता है।जब तक वह प्रभु केअर्पित नहीं हुई तब तक वह सेब,केला,अनार आदि फल या मिठाई ही कहलाती है लेकिन ज्यों ही वह वस्तु श्री प्रभु के चरणोंमें समर्पित हुई उसका रूप,नाम और प्रभाव बदल कर श्री भोग प्रसाद हो जाती है।जिसे सभी श्रद्धा से ग्रहण करते हैं। आम संसारी जीव भी जब भी सतपुरुषों की संगत में सतसंग में आ जाता है त्यों ही उसे गुरुमुख कहकर पुकारते हैं। ये तो प्रत्यक्ष प्रमाण है ज्यों ही श्री चरणों में दण्डवत वन्दना की तो हुक्मनामा मिलता है श्री गुरु महाराज जी का हुक्म है गुरुमुखो उठो।आते ही गुरुमुख कहलाने लगता है। सतपुरुषों के ज़रा से सतसंग के प्रभाव से ही जीव का निस्तार हो जाता है। सतपुरुषों के वचन हैं ।

एक घड़ी आधि घड़ी आधि से पुनि आध।।
तुलसी संगत साध की कटे कोटि अपराध।।

सतपुरुष श्री गुरुनानक देव जी की जन्म साखी में एक साखी का वर्णन मिलता है कि एक बार श्री गुरुनानकदेव जी महाराज बाला और मरदाना के साथ एक गाँव के बाहर पेड़ के नीचे विराजमान थे।प्रभु कीर्तन हो रहा था सर्दियों के दिन थे शाम का समय था एक सौदागर अपने कम्बल व खेस लेकर उधर से निकला। प्रभु कीर्तन की ध्वनि सुनकर समीप पहुँचा। सतपुरुषों के दर्शन किये उन्हें दण्डवत प्रणाम करके वहीं प्रभु कीर्तन श्रवण

करने का आनन्द लेने लगा।जब कीर्तन समाप्त हुआ तो उसने श्री चरणों में विनय की हे सच्चे पादशाह सर्दी बहुत पड़ रही है ये कम्बल ग्रहण करें। मेरी सेवा स्वीकार करें। श्री गुरुनानक देव जी ने फरमाया कि प्रेमी इन कम्बलों को हम कहाँ उठाते फिरेंगे हमें इनकी आवश्यकता नहीं है लेकिन उसके बार बार आग्रह करने पर कम्बल ले लिये वह सौदागर कम्बल भेंट करके नाम दीक्षा व आशीर्वाद प्राप्त करके चला गया। थोड़ी ही देर में एक दुर्जन व्यक्ति आया उसने देखा कि ये साधु लोग हैं इनके पास नयेऔर बड़े कीमती कम्बल हैं। इनसे छीन लेने चाहिये। संसार में हर प्रकार के जीव होते हैं दुर्जन भी सज्जन भी।महापुरुषों को तो सभी का निस्तार करना होता है उनका रूप ही परमार्थ रूप होता है। जगत कल्याण के लिये ही संसार में आते हैं उस दुर्जन व्यक्ति ने उनसे कहा कि आप ये कम्बल मेरे हवाले कर दो नहीं तो उचित नहीं होगा।रोब दाव जमाने लगा।श्री गुरुनानक देव जी ने फरमाया भाई।कम्बल तो तू भले ही ले ले परन्तु तुझे मालूम है देख कितनी सर्दी पड़ रही है कम से कम हमें कहीं से आग तो ला दे ताकि हम आग जलाकर ताप कर ही गुज़ारा कर लेंगे।पहले तो वह न माना कि आप चले जायेंगे मुझे धोखा दे रहे हैं। फिर भी उसने कहा अगर आप आग चाहते हैं लेकिन मैं आग कहाँ से लाऊं?आग इस समय अब कहाँ से मिलेगी। सत पुरुष श्री गुरुनानकदेव जी ने हाथ का इशारा करके फरमाया कि वो सामने देख एक चिता जल रही है उसी में से आग ले आओ। जब आग लेने के लिये जलती चिता के पास गया तो उसने देखा कि विष्णु पार्षदों मेंऔर यम दूतों में झगड़ा हो रहा है।यमदूतों का कहना था कि इसने(जिसकी चिताजल रही थी)अपनी ज़िन्दगी में कोई शुभ कर्म नहीं किया कभी सतसंग श्रवण नहीं क्या इसलिये ये यमलोक ले जाने के योग्य है इसे हम ले जायेंगे परन्तु विष्णु पार्षदों का कहना था कि इसकी तरफ अभीअभी सतपुरुषों ने इशारा किया है इसलिये ये विष्णु लोक में जाने का अधिकारी है इसे आप नहीं ले जा सकते हम ले जायेंगे। जब उन दोनों का झगड़ा उसने सुना तो सोचने लगा कि जिन सत्पुरुषों केएक इशारे से ही देह त्याग के पश्चात भी आत्मा ये रूह विष्णुलोक को जा रही है।तो अगर इन महापुरुषों की शरण में जाने से उनका सतसंग श्रवण करने से कितना लाभ प्राप्त होगा?मैं भी कितना अधम हूँ जो ऐसे महापुरुषों की सेवा न करके उल्टा उनसे कम्बल छीनकर उन्हें कष्ट देना चाहता हूँ।धिक्कार है मुझे।वह अपनेआप में पश्चातापकरता हुआ वापिस लौट आया श्रीचरणों में दण्डवतप्रणाम कर अपने अपराधों की क्षमा माँगने लगा।विनय करने लगा कि प्रभो मैने अपनी ज़िन्दगी मे कोई शुभ कर्म नहीं किया मेरा निस्तार कैसे होगा। आप अगर कृपा करें तो मेरा निस्तार हो सकता है।मुझपर कृपा करके सतमार्ग दर्शायें सतपुरुषों नेउसकी अचल निष्ठा देखकर उसे नाम दान दियाऔर फरमाया किअब तो समय बहुत कम रह गया है।तेरी ज़िन्दगी के केवल दो दिन शेष है।इसमें नाम का सुमिरण करते रहना जब इस संसार को छोड़कर धर्मराज के दरबार में उपस्थित होगा तो वह तुम्हें कहेंगे कि पहले वैकुण्ठ में जाना चाहते हो या नरक में।उस समय कहना कि मुझे वैकुण्ठ में भेज दो उसके बाद नरक भुगत लूँगा।जब यमदूत तुम्हें वैकुण्ठ में पहुँचायेंगे हम तुम्हें वहीं मिलेंगे।

ऐसा ही हुआ दो दिन बाद वह मृत्यु को प्राप्त हुआ उसकी आत्मा धर्मराज के दरबार में उपस्थित हुई उसका लेखाजोखा करके उसे कहा गया कि तुमने अपनी ज़िन्दगी में कोई शुभ कर्म नहीं किया केवल एक घड़ी सतसंग किया है इसलिये तुम्हें चार घड़ी वैकुण्ठ वास दिया जाता है।शेष तुम्हें नरक भुगतना पड़ेगा। पहले नरक में जाना चाहते हो या वैकुण्ठ में। उसे सतपुरुषों के वचन याद आ गये। उसने कहा कि पहले मुझे वैकुण्ठ में भेज दो। यमदूतों ने उसे वैकुण्ठ के दरवाज़े तक छोड़ दिया। वे अन्दर नहीं जा सकते थे।वैकुण्ठ में उन्हें सतपुरुषों के दर्शन प्राप्त हुये उनकी आज्ञा अनुसार वहाँ वह सेवा करने लगा। जब चार घड़ी व्यतीत हो गईं तो यमदूतों ने उसे आवाज़ लगाई चलो वापिस आपका समय हो चुका है। वह वापिस जाने को उद्दत हुआ। तो महापुरुषों ने फरमाया कि वापिस जाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि वह अन्दर नहीं आ सकते।केवल उन्हें ये कह दो जो अभी अभी मैने चार घड़ी सतपुरुषों का सतसंग किया है पहले उसका फल दे दो। कहने का तात्पर्य ये कि वह चार घड़ी का सोलह घड़ी सोलह घड़ी का 32 करते करते वहीं वैकुण्ठ में निवास करने लगा। महापुरुषों की एक घड़ी के सतसंग में संगत से उसे हमेशा के लिये वैकुण्ठ वास मिल गया।महापुरुषों के एक इशारे से ही जब मृत्यु को प्राप्त हुये जीवआत्मा का कल्याण हो सकता है तो जो नित्यप्रति उनका सतसंग श्रवण करता है जिन्हें उनकी चरण शरण प्राप्त है उनकी सेवा का सौभाग्य मिला हुआ है और जो गुरुमुख नित्यप्रति सतसंग में आकर सतपुरुषों के बताये रास्ते पर चलकर उनके उपदेश अनुसार अपने जीवन को ढालेंगे तो उनके निस्तार में सन्देह ही क्या है?वे सतगुरु की कृपा से निश्चय भी भवसागर से पार हो जाते हैं।

अपने सतगुरु के हम आभारी है जो उन्होने हमें ऐसा शुभ अवसर प्रदान किया है हमारा कर्तव्य है कि नित्य प्रति सतसंग का लाभ प्राप्त करें इस दात को अपनी झोली में भर कर अपने जीवन को सुखी एवं सफल बनायें। इसी में सतपुरुषों की प्रसन्नता है और हम सबका कल्याण है।

महापुरुषों के वचन हैं।

लाख चौरासी जून में मानुष देह प्रधान।
बिना भजन भगवान के चली अकारथ जान।।

सभी सन्त महापुरुषों ने सदग्रन्थों और सदशास्त्रों ने इस मानव जीवन की श्रेष्ठता,विशेषताऔर महानता का वर्णन अपनीअपनी वाणियों में किया हैकि परमात्मा ने इस सृष्टि में जो चौरासी लाख योनियां बनाई हैं,पशु पक्षी कीट पतंग,पेड़ पौधे इत्यादि सभी योनियों में से इस मानुष जीवन को श्रेष्ठता प्रदान की है इसे सर्वश्रेष्ठ बनाया है। श्री रामायण में भी वर्णन है।

नर तन सम नहीं कवनिउ देहि। जीव चराचर याचत तेहि।

कि इस नर तन के समान और कोई देह नहीं है जितने भी चर अचर जड़ चेतन स्थावर जंगम यहाँ तक कि देवी देवता इस मानव शरीर को प्राप्त करने के लिये मालिक से हमेशा याचना किया करते हैं नर तन पाने के लिये हमेशा लालायित रहते हैं।

इस मानुष जीवन में ऐसी कौन सी विशेषता है?किस बात के कारण ये महान है?ऐसा कौन सा विशेष कार्य है जिसे अन्य योनियाँ या देवी देवता नहीं कर सकते। वह विशेष कार्य प्रभु का भजन सुमिरण है। केवल मनुष्य शरीर में ही अपने हृदय में प्रभु का नाम बसाकर स्वांस स्वांस में सुमिरण करके जन्म जन्मान्तरों से बिछुड़ी हुई अपनी आत्मा को परमपिता परमात्मा से मिलाकर तदरूप हुआ जा सकता है।क्योंकि अन्य योनियां और देवी देवता भी केवल भोग योनियां हैं अपने किये हुये शुभ या अशुभ कर्मों के फलस्वरूप सुख या दुःख,नरक या स्वर्ग का उपभोग किया करते हैं। ये कर्म योनि न होने के कारण मोक्ष केअधिकारी नहीं हो सकते।केवल मानव शरीर में ही ये कार्य सम्पादन हो सकता है। इसलिये महापुरुष फरमाते हैं

लाख चौरासी योनि में मानुष देह प्रधान।
बिना भजन भगवान के चली अकारथ जान।।

अगर इसमें मालिक का भजन नहीं किया हृदय में नाम नहीं बसाया तो यह जीवन यूं ही व्यर्थ चला जायेगा। श्री रामायण में वर्णन है।

ते नर इस संसार में उपज भये बेकाम ।
जेहि घट प्रीति न प्रेम रस मुख रसना नहीं नाम।।

फरमाते हैं कि वो मनुष्य इस संसार में बेकार ही पैदा हुये उनका इस संसार में आना न आना एक ही बराबर है जिनके हृदय में प्रभु का प्यार नहीं प्रभु का सच्चा नाम नहीं है।सन्त दादूदयाल जी भी इसी बात की पुष्टि करते हैं।

जग में जीना है भला जब लग हृदय नाम।
नाम बिना जो जीवना से दादू किस काम।।

महापुरुषों ने उसका जीवन श्रेष्ठ, सफल और धन्य नहीं कहा जिसके पास अरबों खरबों की सम्पत्ति हो,बड़े बड़े सुन्दर भव्य महल हों,राज हकूमत हो, रूतबा हो। नहीं महापुरुषों ने उनका जीवन श्रेष्ठ सफल और धन्य कहा है जिनके हृदय में प्रभु का नाम बसा हो।जिनके हृदय में प्रभु का नाम नहींवह किसी काम का नहीं।प्रभु नाम के बिना इस हाड़ माँसऔर चाम केशरीर का मुल्य ही क्या है?जिस प्रकार एक मामूली सी गत्ते की डिब्बी की कुछकीमत नहीं होती लेकिन अगर उसमें अमुल्य हीरा रख दिया जाये तो वही गत्ते की डिब्बी अमुल्य बन जाती है।उसकी हर पल हर समय सँभाल की जाती है अल्मारी या तिजोरी में सँभाल कर रखी जाती है हमेंशा उसका ध्यान लगा रहता हैअगर उस डिब्बी में हीरा नहीं तो वह बाहर से कितनी ही देखने में सुन्दर क्यों न हो उसकी कुछ भी कीमत नहीं रहती उसे कोई सँभाल कर नहीं रखता कभी इधर पड़ी रहती है कभी उधर पड़ी रहती है क्योंकि मुल्य डिब्बी का नहीं,हीरे का है।इसी प्रकार यदि मानव के हृदय में प्रभु नाम रूपी हीरा नहीं तो उसकी भी कोई कीमत नहीं चाहे वह कितना ही सुन्दर,रूपवान क्यों न हो करोड़ोंपति बल्कि सृष्टि का राजा ही क्यों न हो नाम के बिना महापुरुषों की दृष्टि में उसका जीवन तुच्छ है।अपने मन के माध्यम से सन्त महापुरुष जीव को सन्मार्ग दर्शाते हुये बड़े सुन्दर उदाहरण देकर सपष्ट

करते हैं।सुमिरण कर ले रे मना तेरी बीते उमर हरि नाम बिना।

जैसे पँखी पँख बिना हस्ती दन्त बिना नारी कन्त बिना।।
जैसे तरूवर फल बिनहिं न। ऐसे नर हरिनाम बिना।।
कूप नीर बिना धेनू क्षीर बिना धरणी मेघ बिना।
जैसे पण्डित वेद विहीना तैसे पुरुष हरिनाम बिना।।
देह नैन बिना, रैन चन्द्र बिना मन्दिर देव बिना।
जैसे पुत्र पिताहि बिन न तैसे पुरुष हरिनाम बिना।।

ऐ जीव हर पल प्रभु का सुमिरण कर ले नहीं तो तेरी उम्र बिना भजन के यूं बीती जा रही है भजन बिना तेरा जीवन इसी प्रकार व्यर्थ है जैसे पक्षी के पँख न हों तो वह उड़

नहीं सकता बल्कि पंख न होने के कारण एक ही जगह पड़े रह जाने से वह अन्य पक्षियों का भोजन भी बन सकता है। हस्ती दन्त बिना। कहते हैं जीता हाथी लाख का मरा हुआ सवा लाख का क्यों? क्योंकि हाथी कि शोभा और कीमत उसके दाँतों से है अगर हाथी के दाँत नहीं तो उसकी कोई शोभा और कीमत नहीं जीते हुये हाथी को तो मनों अनाज ही खिलाना पड़ता है।नारी कन्त बिना।जिस नारी का कन्त नहीं जिस स्त्री का पति नहीं समाज में उसकी कैसी प्रतिष्ठा है किसी से छिपी हुई नहीं।तरूवर फल बिना।जो पेड़ फलदार न हो तो उसकी लकड़ी काट कर जला दिया जाता है फलदार पेड़ को कोई नहीं काटता बल्कि सरकार की तरफ से भी फलदार पेड़ का काटना अपराध माना जाता है। फल से ही पेड़ की कीमत है।बिना फल के पेड़ की कदर नहीं इसीतरह ही हरिनाम से ही इन्सान की कीमत और श्रेष्ठता है।आगे वर्णन करते हैं कूप नीर बिना। जिस कूँएं में पानी न हो वह किस काम का?सिवाय उसमें गिरने के खतरे से क्या उपलब्ध होने वाला है?धेनू क्षीर बिना।धेनू कहते हैं गाय को। गाय अगर दूध न दे तो उसे घर में कौन रखना पसन्द करता है उसे जंगल में यूं ही छोड़ दिया जाता है।दैह नैन बिना।जिस देह में नैन न हों उसका जीवन नीरस और फीका हो जाता है नैनों के बिना देह की क्या अवस्था होती है जीवन जीना ही दूभर हो जाता है।

एक बार बीरबल अकबर के महल में गये पान खाते खाते बीरबल ने महल की दीवार पर पान की पीक थूक दी।एक व्यक्ति जो बीरबल से ईर्ष्या और द्वेष रखता था उसकी एकआँख ही थी यानि उसे एकआँख से दीखता था दूसरी आँख से बिल्कुल नज़र नहीं आता था।उस व्यक्ति ने अवसर देख कर बादशाह से बीरबल की शिकायत करदी कि देखिये कितना सुन्दर भव्य महल है उसकी दीवार बीरबल ने गन्दी कर दी है।कोई जगह भी नहीं देखते जहाँ तहाँ थूक देते हैं।बादशाह ने बीरबल से कहा भई बेकार जगह देखकर पान की पीक फैंका करो।अगले दिन जब बीरबल बादशाह के महल मेंआया ते उसने पान की पीक उस व्यक्ति कीआँख में फैंक दी जिसआँख से उसको नज़र नहीं आता था। इस पर उस व्यक्ति ने बादशाह से फिर शिकायत की कि देखिये आज फिर बीरबल ने मेरे साथ ऐसी हरकत की है। बादशाह ने बीरबल से पूछा तुमने ऐसा क्यों किया? बीरबल ने जवाब दिया बादशाह सलामत कलआपने ही तो फरमाया था कि बेकार जगह देखकर थूका करो तो कृप्या आप ही बतायें जिस आँख से नज़र नआता हो तो वह किस काम की?बेकार ही तो हैअगर मैनेआपके हुक्मअनुसार इस बेकार जगह पर थूक दिया तो कौन सा गलत कार्य किया है?(नोट-आप किसी नेत्रहीन बेचारे की आँख में थूकने मत चले जाना)कहने काआशय ये नहीं है बल्कि जितना हो सके उस बेचारे नेत्रहीन की सहायता करना। उसे सहयोग देना उसे सहारा देना। कथा कहानियाँ तो केवल समझाने के लिये हुआ करती हैं। इन सब उदाहरणों से ये स्पष्ट है कि जो वस्तु जितनी भी कीमत रखती है केवल अपने विशेष गुण के कारण ही अगर उसमें वह गुण नहीं है तो उसकी कुछ भी कीमत नहीं रह जाती।सन्त ईसामसीह फरमाया करते थे कि नमक अगर अपना नमकीनपन त्याग दे तो उसे नमक कौन कहेगा चन्दन मेंअगर
खुशबु न हो तो उसे चन्दन नहीं कहा जा सकता नाही उसे कोई मस्तक पर धारण करेगा उसकी जगह आम ईंधन की तरह चुल्हे में होती है।इसी प्रकार ही जीव के हृदय में प्रभु का प्यार परमात्मा का सच्चा नाम नहीं है तो उस की कोई कीमत नहीं है।

संसार में आज तक जितने भी महान सन्त,प्रभु के प्रेमी भक्त,सिद्ध साधक,ऋषि मुनि योगी हुये हैं उन्होने प्रभु का नाम सुमिरण किया है प्रभु के सच्चे नाम को हृदय में बसाया है तभी वे महान कहलायेऔर जगत के लिये वन्दनीय और पूज्यनीय हुये हैं। ऐसे भक्तों और प्रेमियों के और सन्तों की गाथाओं से इतिहास भरे पड़े हैं।भले ही वो सांसारिक दृष्टि से निर्धन थे, छोटी जाती के थे या गुण चतुराई से हीन थे लेकिन वो सच्चे नाम की बदौलत अपना नाम रोशन कर गये।नाम की बदौलत ही वे श्रेष्ठऔर महान हुये। सन्त तुलसीदास जी रामायण में वर्णन करते हैं।

नाम प्रसाद शम्भु अविनाशी । साज अमंगल मंगलराशी।
शुक सनकादिक सिद्ध मुनि योगी।नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी।।
नारद जानेऊ नाम प्रतापु। जग प्रिय हरि, हरि हर प्रिय आपु।।
ध्रुव सग्लानि जपेऊ हरिनाम । पायो अवचल अनुपम ठाम।।
सिमर पवन सुत पावन नाम । अपने वश कर राखे राम।।
अपर अजामिल गज गणिकाऊ।भये मुक्त सब नाम प्रभाऊ।।
कहौं कहाँ लग नाम बड़ाई । राम न सके नाम गुणगाई।।

भगवान शिव शम्भु नाम के प्रताप से ही अविनाशी पद के मालिक हुये हैं। यद्यपि उनकी वेशभूषा अमंगलकारी अर्थात अशुभ है यानि डरावनी सी है। कानों में बिच्छु लटकाये रहते हैं गले में सर्पों का हार है भूत गणगादि सेवितम,भूतप्रेत आदि गण उनकी सेवा में रहते हैं उनके आगे पीछे घूमते हैं इन सबके बावजूद भी वे नाम के प्रताप से आनन्द और कल्याण केभण्डार माने गये हैं शिव का अर्थ ही कल्याणकारी होता है।शुक्देव,सनक सनन्दन सनत कुमार सनातन ये चारों बाल ऋषि और भी सिद्ध योगी सभी नाम के प्रसाद से ही ब्रह्म सुख में रमण किया करते हैं।नारद जी नाम के प्रताप का जानकर ही जगत के प्रिय हुये सब जगत में नारायण को देखते हैं और नारायण में सब जगत को

देखते हैं। ध्रुव नाम जपकर ही अविचल पद कोप्राप्त हुये। गज,अजामिल जो पहले ब्राह्मण था बाद में कुसंगति में पड़ गया फिर भी अन्तिम समय भगवान नाम के उच्चारण मात्र से मुक्ति को प्राप्त हुआ।गणिका आदि सब नाम के प्रताप से ही मुक्त हो गये।सुमिर पवन सुत पावन नाम। अपने वशकर राखयो राम। पवन सुत श्री हनुमान जी ने नाम सुमिर कर ही भगवान श्री राम को अपने वश में कर रखा है।

श्री रामायण में बड़ी सुन्दर रोचक,शिक्षाप्रद और मीठी व प्यारी कथा मिलती है कि जब भगवान श्री राम लंका पर विजय प्राप्त करके श्री सीता जी को रावण की कैद से आज़ाद करा के चौदह वर्ष बनवास की अवधि समाप्त होने पर अयोध्या में वापिस आये थे तो उनके साथ भगवान के परमभक्त श्री हनुमान जी,विभिषण,सुग्रीव,अंगद,नल,नील एवम् जामवन्त आदि सब अयोध्या में आये थे।जब राजतिलक की रस्म अदा की गई उस समय रिवाज़ के अनुसार सभी प्रेमियों ने अपनी अपनी श्रद्धा भावनानुसार भगवान श्रीराम जी के चरणों में भेंट पूजा की।उस समय विभीषण जी ने एक बहुमुल्य मोतियों की माला जो रावण को समुन्द्र ने दी थी रावण की मृत्यु के पश्चात विभीषण को प्राप्त हुई वही बहुमुल्य मोतियों की माला विभीषण जी ने भगवान श्री राम जी के चरणों में भेंट की। वह माला श्री राम जी ने श्री सीता जी को दे दी। श्री सीता जी ने सामने चरणों में बैठे परमभक्त श्री हनुमान जी को दे दी।सच्चे मोतियों की वह बहुमुल्य माला श्री सीता जी के हाथों से पाकर हनुमान जी उसकोअच्छी तरह देखने लगे माला को उलट पलट कर देखा फिर सूँघा,कानों से लगाया,फिर चखा।जब उनकी किसी प्रकार से भी तसल्ली न हुई तो एक मनका निकाल कर तोड़ डाला। जब उसमें से उन्हें कुछ न मिला तो दूसरे मनके की भी यही दुर्गति करदी। हनुमान जी के इस कौतुक को सभी उपस्थित राजा लोग बड़े ध्यान से देख रहे थेऔर मन में विचार कर रहे ते कि जिस वस्तु का पात्र हो उसे ही वह वस्तु देनी चाहिये भला वानर जाति के ये इन बेशकीमती माला की कीमतक्या जानते हैं?किसी राजा को दी होती तो वह इसकी कदर भी करता। अपात्र को दी गई वस्तु की तो यही दशा होनी ही थी।हनुमान जी जबतीसरा मनका तोड़ने लगे तो एकराजा से रहा न गया उसने हनुमान जी से कह ही दिया कि हनुमान जीआप ये क्या कर रहे हैं?हनुमान जी ने कहा कि मैं इस में भगवान का नाम ढूँढ रहा हूँ पहले ध्यान से देखा कहीं भगवान का नाम नज़र न आया फिर सूँघा शायद भगवान के नाम की सुगन्ध आ जाये फिर कानों से लगाया शायद इसमें भगवान का नाम उच्चरित गुँजायमान हो रहा हो फिर चखा जब मुझे कहीं भी भगवान का नाम नहीं मिला तो इसे तोड़ डाला।जिस चीज़ में श्री भगवान का प्यारा नाम नहीं है वह चाहे जड़ हो चैतन्य भला वह किस काम की भगवान के नाम के बिना वह बेकीमत है बेरसऔर फीकी है फैंक देने योग्य है तोड़ देने योग्य है रेज़ा रेज़ा कर देने योग्य है उसकी यही कदर और कीमत है। इस पर राजा ने दोबारा पूछा कि आपके अन्दर भी भगवान का नाम समाया हुआ है?यह सुनकर हनुमान जी ने अपने नाखुनों से अपना सीना चीर कर दिखलाया और सब यह देखकर चकित हुये कि उन के रोम रोम में भगवान का प्यारा नाम समाया हुआ है।

इस कथा से यही अभिप्राय है कि भगवान के नाम के बिना दुनियाँ की हर चीज़ बेकार बेरस और फीकी है उसकी कोई कीमत नहीं।अब प्रश्न ये होता है कि वह प्रभु का नाम कौन सा है? जिसे जप कर शिव शम्भु अविनाशी पद के मालिक हैं जिस नाम की महिमा स्वयं भगवान श्री राम भी न गा सके। राम न सकें नाम गुणगाई। वह कौन सा नाम है जिसे जप कर जिस नाम के प्रताप से हनुमान जी ने भगवान श्री राम जी को अपने वश में कर रखा है?क्योंकि संसार में भगवान के नाम तो करोड़ों हैं। कोटि नाम संसार में।वैसेभगवान का नाम दो प्रकार का है एक सिफ्ती नाम दूसरा ज़ाति नाम। सिफ्ती नाम उसे कहते हैं जिसमें भगवान का किसी सिफ्त अर्थात विशेषता का वर्णन हो जैसे दया करने वाला है तो दयालु,कृपा करने वाला है तो कृपालु,भव से तराने वाला है तो तारनहार,अवगुणों को बख्शने वाला है तो बख्शनहार,दीनों का सहारा है तो दीनबन्धु कल्याण करने वाला है तो शिव इसी तरह श्री राम,कृष्ण,विष्णु,गोपाल,गोबिन्द ,मुरलीधर, बंसी वाला आदि अनेकों ही नाम भक्तों और प्रेमियों ने अपनी अपनी भावना अनुसार रखे हैं। इन्हे सिफ्ती नाम कहा जाता है दूसरा नाम है जाति नाम। वह एक ही है जाति से मतलब भगवान की ज़ाति। वह नाम हमारे तुम्हारे सब के सभी जीवों में पूरे ब्रह्माण्ड के कण कण में समाया हुआ है उसी से ही सब ब्रह्माण्डों की रचना हुई है जिसे श्री गुरु नानकदेव जी ने फरमाया है नाम के धारे सगले जन्त,नाम के धारे सकल ब्रह्माण्ड। वह नाम एक ही है इसी के सिमरण से ही मोक्ष की प्राप्ती होती है।

कोटि नाम संसार में ताते मुक्ति न होये।
आदि नाम जो गुप्त जप बुझे विरला कोये।।

संसार में तो करोड़ों नाम हैं लेकिन उनसे मुक्ति सम्भव नहीं है।लेकिन जो आदि नाम है जो गुप्त है उसे कोई विरले विरले गुरुमुख ही जान पाते हैं वो भी जिन्हें सौभाग्य से सतपुरुषों की चरण शरण प्राप्त हो जाता है उन सौभाग्यशाली गुरुमुखों को ही उसका भेद पता चलता है और उसके जपने की विधी भी उन्हें सतगुरु से ही प्राप्त होती है वह नाम बिना सतगुरु की कृपा से नहीं मिलता उसका भेद नहीं मिलता।

सतगुरु बिन हरिनाम नाम न लभई जे लख कोटि कर्म कमाये।

नाम अमोलक रतन है पूरे सतगुरु पास।

संसार में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं है जिसने पूर्ण सतगुरु से नाम का भेद लिये बिना नाम की कमाई की हो और वह मोक्ष को प्राप्त हो गया हो।

राम कृष्ण से को बड़ा तिन्ह तो गुरु कीन्ह।
तीन लोक के हैं धनी गुरु आगे आधीन।।

जब भगवान राम,श्रीकृष्ण ने गुरु से भेद प्राप्त किया है जबकि वो तीनों लोक के मालिक कहे जाते हैं तो आम साधारण जीवों की तो बात ही क्याहै?इसलिये जब भी भेद मिलेगा इस गुप्त नाम का वह समय के सतगुरु से ही प्राप्त होगा।इसलिये वे सौभाग्यशाली हैं जिन्हें सतगुरु की चरण शरण प्राप्त हो गईऔर उन्हे उस गुप्त नाम का भेद पता चल गया है और जो उस सच्चे नाम की कमाई करते हैं और उस नाम को अपने हृदय में बसाते हैं। वह प्रभु का ही रूप बन जाते हैं।जो प्राणी निशदिन भजे राम रूप तेहि जान तेहि नर हरि अन्तर नहीं नानक साची जान।जो निरन्तर प्रभु भजन मेंध्यान में मगन हैं उसे प्रभु का ही रूप जानना चाहिये क्योंकि उसमें और प्रभु में कुछअन्तर नहीं रह जाता।इसी सच्चे नाम की निधी प्रदान करने के लिये ही महापुरुष संसार में आते हैं।और इस युग में इस वक्त लासानी श्रीआनन्दपुर दरबार के रूहानी तख्त पर विराजमान हैं।नाम की दात से झोलियाँ भर रहें हैं।आप सब भाग्यशाली गुरुमुख हैं जिन्हें सतगुरु की चरण शरणऔर सच्चे नाम की प्राप्ति हो गई है जग में उत्तम काढिये विरले केहि केई। हम सबका ये कर्तव्य है कि सतगुरु द्वारा प्रदत्त सच्चे नाम का पल पल सुमिरण करें ताकि ये जीवन अकारथ ना चला जाये।ऐसा न कहना न पड़े कि बिना भजन भगवान के चलीअकारथ जान।संसार के सुख ऐश्वर्य में अपनाअमुल्य जीवन न खो दिया जाये क्योंकि संसार तो रेत की दीवार के समान है।

रेत की दीवार सम नश्वर सकल संसार है।
थिर तो कुछ भी है नहीं जो कुछ है सो चालनहार है।
इक प्रभु का नाम ही सच्चे सुख का सार है।
जिसके दिल में बस गया फिर उसका बेड़ा पार है।।

जिन सौभाग्यशाली जीवों पर ईश्वर की कृपा होती है वो ही नाम कासुमिरण करते हैं नाम के रंग में रंगे होते हैं दुनियाँ के झूठे पदार्थों में नहीं फँसते झूठी ख्वाहिशों को दिल से हटाते हैं वो मालिक का प्यार पाते हैं परमात्मा उनसे प्यार करता है वो परमात्मा के मन को भाते हैं और अपना जीवन सफल बनाते हैं हमारा कर्तव्य है प्रभु के नाम का सुमिरण स्वाँस स्वाँस करते हुये सतगुरु की प्रसन्नता प्राप्त कर अपने जीवन को सफल बनायें और अपना परलोक भी सँवार लें।

सच्ची खुशी

संसार में अगर किसी से पूछा जाये कि तुम्हें सबसे अधिक ख्वाहिश किस चीज़ की है तो वह कहेगा मुझेअपार धन चाहिए,कोई कहेगा कि मेरी संसार में खूब मानइज़्ज़त हो,कोई कहेगा कि मेरे पास सब तरह के ऐशो इशरत के सामान हों,किसी को अपने शरीर के तन्दरूस्त,सुन्दर व निरोग होने की ख्वाहिश होगीऔर कोई ये भी कहेगा कि मुझे ईश्वर या परमात्मा की तलाश है। अब अगर इनसे पूछा जाये कि तुम्हें धन दौलत चाहिए तो किसलिये? मान और इज़्ज़त प्राप्त करने की ख्वाहिश है तो किसलिये? ऐशो इशरत के सामानों की इच्छा और शरीर के सुन्दर और निरोग होने की चाहना है तो क्योंकर?और अगर प्रभु को पाने की दिल में तमन्ना है तो आखिर क्यों? बहुत से व्यक्तियों से तो इसका जवाब शायद ही बन पाये। लेकिन इसका जवाब है,वो जवाब है खुशी। इन्सान अगर धन दौलत चाहता है तो खुशी के लिये,जायदाद मकान बनाता है तो खुशी को लिये,मान सम्मान चाहता है तो खुशी के लिये,ऐशो इशरत के सामानों की खाहिश है तो खुशी के लिये, अगर इन्सान भक्ति भी करता है तो खुशी के लिये। गौर करने से मालूम होता है दुनियां में खुशी से बढ़कर कोई भी चीज़ नहीं है। धन दौलत हो खुशी न हो तो कुछ भी नहीं, मान इज़्ज़त हो शरीर तन्दरुस्त और सुन्दर हो,ऐशो इशरत के सब सामान मौजूद हों सब कुछ हो पर खुशी न हो तो कुछ भी नहीं मिला।फिलफरज़ अगर किसी को परमात्मा भी मिल जाये पर खुशी न हो तो कुछ भी नहीं मिला। कहने का तात्पर्य ये है कि जीव संसार में जो कुछ भी कार्यव्यवहार करता है,खाना पीना,उठना बैठना, नौकरी,खेती व्यापार आदि धन कमाने के लिये करता हैअर्थात जो भी कार्य करता है केवल खुशी के लिये ही।इससे सिद्ध होता है कि प्रत्येक मनुष्य की ज़िन्दगी का मकसद खुशी को हासिल करना

है। जाने या अन्जाने में हर इन्सान अपनी अपनी समझअनुसार खुशी को हासिल करने के लिये प्रयत्नशील है। लेकिन अब ये देखना है कि कितने व्यक्ति ऐसे हैं जिन्हें खुशी नसीब है।

आमतौर पर संसार में दुःख की ही शिकायत हुआ करती है।बड़े बड़ेविद्वानों ने,सन्तों महापुरुषों ने व सदग्रन्थों की वाणियों ने इस संसार को दुःखसागर का नाम दिया है। एक भी आदमी ऐसी नहीं है जो इसे वैकुण्ठ सागर या सुखसागर कहता हो।क्योंकिअगर हम संसार की तरफ गौर करके देखें तो मालूम होगा बल्कि हर इन्सान देखता भी है कि सभी को,बीमारी, बुढ़ापा दुर्घटनाओं और मौत के शिकार होने का डर हमेशा सिर पर बना रहता है। कोई बीमारी के हाथों तंग है कोई गरीबी का मारा परेशान है। बड़े बड़े व्यापारी,राजा महाराजा,धनवान सब अपनी अपनी चिन्ताओं की चक्की में पिसे चले जा रहे हैं। जब धनवानों का ये हाल है तो गरीबों की तो बात ही क्या है।हस्पतालों में जाकर देखो कैसे लोग तड़फ रहे हैं। जेलों में सख्त सजाएं हो रही हैं।मतलब क्या कि संसार में धनवान,बलवान प्रतिष्ठावान, किसी से भी पूछा जाये कि क्या उसे खुशी प्राप्त है,क्या वह सुखी है? तो वहअपने दुःखों की कहानी शुरु कर देगा।आप कहेंगे कि उसके पास अपार धन है,कुटुम्ब परिवार है नौकर चाकर हैं उसे और क्या चाहिये उसके पास सब कुछ है वह ज़रूर सुखी होगा।उसे ज़रूर खुशी प्राप्त होगी।उससे पूछने पर आप उसके दिल में भी एक निराशा,चिन्ता उदासी या खिन्नता के भाव ही पायेंगे। सन्त सहजो बाई जी का कथन है-:

धनवन्ते सब ही दुःखी निर्धन दुःख का रूप।

फरमाती हैं कि धनवानों और अमीरों को मैने दुःखी और पीड़ा में कराहते हुये पाया है और निर्धन तो दुःख का रूप ही हैं। संसार का प्रत्येक प्राणी संसारिक पदार्थों में खुशी की तलाश करता है लेकिन गौर करने से,विचार करने से ये ही मालूम होता है कि खुशी न दौलत में है,न इज़्ज़त में,ना ही किसी और सांसारिक पदार्थों में खुशी है। किसी पंजाबी सन्त ने कहा है। विषय वासना विच गल्तान बन्दा दीन दुःखी आजीज़ सुबह शाम रहंदा।
नित लोड़दा सुखां ते खुशियाँ नूं अफसोस मगर नाकाम रंहदा।
सुख मूल नहीं विषयाँ विच दासा ना ही सुख दा नाम निशान हरगिज़।
जिन्हां चीज़ां विच खुशी लभदा तूँ खुशी वाले ऐ नाहीं सामान हरगिज़।

अब प्रश्न होता है कि जब सांसारिक पदार्थों में खुशी नहीं है तो आखिर वह कहाँ से और किस प्रकार प्राप्त हो सकती है। महापुरुष फरमाते हैं कि जीव को सच्चा सुख व सच्ची खुशी तब ही मिल सकती है जब वह अपना रूख परमात्मा की तरफ मोड़े क्योंकि जिस चीज़ का जहाँ भण्डार हो वहीं से मिल सकती है किसी को कपड़ों की आवश्यकता है और वह बर्तनों की या मिठाई की दुकान पर तलाश करे तो उसे कैसे मिल सकते हैं। कपड़े खरीदने के लिये उसे कपड़ों की दुकान पर ही जाना होगा।अगर उसे सोना चाँदी की ज़रूरत है तो वह सुनार की दुकान पर ही उपलब्ध होगा न कि गाजर मूली या सब्ज़ी की दुकान पर।

एक मनुष्य दरिया के किनारे पर खड़ा है उसकी नज़र पानी में एक मणी पर जाती है वह कपड़े उतार कर दरिया में डुबकी लगाता है परन्तु बार बार गोता लगाने से गहरे पानी में जाने पर भी उसके हाथ नहीं आती। दुःखी हो जाने पर भी बार बार डुबकी लगाने से नहीं हटता। इतने में वहाँ कोई अनुभवी महात्मा स्नान करने आते हैं और उस व्यक्ति को बार बार डुबकी लगाते दुःखी देखते हैं। उन्होने उससे पूछा क्यों भाई दरिया में बार बार डुबकी क्यों लगा रहे हो? किन्तु वह भेद खोलना नहीं चाहता उसे आशंका है कि कहीं बाबा जी मणी को निकाल कर ले न जायें। इसलिये वह बात टाल देता है किन्तु महात्मा जी की दृष्टि उस मणी पर पड़ जाती है उसे देख कर वह समझ गये और बोले क्यों भाई तुम उस मणी को लेने के लिये ही बार बार डुबकी लगा रहे हो? भेद खुला देख उसे स्वीकार करना पड़ा। बाबा जी ने कहा डुबकी लगाते कितना समय हो गया उसने कहा जब से आया हूँ तब से डुबकी लगा रहा हूं। बाबा जी ने कहा कुछ हाथ भी लगा?उसने कहा कुछ भी नहीं। तो फिर क्यों डुबकी लगा रहा है?

उसने कहा इसलिये कि डुबकी लगाते लगाते कभी न कभी तो मणी हाथ आ ही जायेगी। बाबा जी ने कहा इस प्रकार सारी आयु डुबकी लगाते रहोगे तो भी मणी तुझे नहीं मिल सकती क्योंकि जो मणी तुझे दिखाई दे रही है वह वहां पर है ही नहीं तो मिलेगी कैसे? उसने कहा आप कैसी बात कर रहे हैं वह तो साफ दिखाई दे रही है। बाबा जी ने हँस कर कहा कुछ देर ठहर तुझे अभी सारा भेद मालूम हो जायेगा। जब जल ठहर गया तो बाबा जी ने कहा तुझे जहाँ मणी दिखाई दे रही है वहाँ और भी कुछ दिखाई दे रहा है? उसने कहाँ हाँ एक वृक्ष दिखाई दे रहा है। बाबा जीने कहा डुबकी लगाते वक्त पेड़ की कोई डाली या पत्ता हाथ लगा? अगर वहाँ वृक्ष होता तो ज़रूर उसकी टहनी या पत्ता हाथ में आता मगर वहां वृक्ष है नहीं केवल दिखाई दे रहा है। ऐसा कहकर महात्मा जी ने वृक्ष की डाली हिलाई जल में दिखाई देने वाला वृक्ष भी हिला देखकर उसने कहा आपका कहना सत्य है। कृप्या मणि के मिलने का भी उपाय भी बतलाईये। बाबा जी ने कहा यदि तुझे मणी प्राप्त करना है तो वृक्ष पर चढ़ जा इसी वृक्ष पर तुझे मणी मिल जायेगी। तब उसने वृक्ष पर चढ़कर मणी व लाल प्राप्त किया। कहने का तात्पर्य ये है कि यह संसार

ही दरिया है विषय ही उसमें जल है। विषयों में जो सुख भासता है वह मणी की परछांईं है। जीव ही डुबकी (जन्ममरण) लगाने वाला मनुष्य है।सतगुरु ही महात्मा हैं।दृढ़ वैराग्य किनारे का वृक्ष और अभ्यास का साधन उस पर चढ़ना है और परमानन्द परमात्मा का स्वरूप ही सच्ची मणी है।इस प्रकार जल में परछाईं की भांति यहां विषयों में आनन्द प्रतीत होता है वह उस परमात्मा का ही प्रतिबिम्ब है यदि उसे पाने की इच्छा है तो इस संसार रूपी दरिया में प्रतीत होने वाले विषयों से मुख मोड़ कर सतगुरु के बतलाये हुये दृढ़ वैराग्य रूप वृक्ष पर चढ़कर नाम का अभ्यास करके उसे ढूँढो तभी तुम्हें उसकी प्राप्ति होगी। इसलिये महापुरुष फरमाते हैं कि अगर जीव को सच्ची खुशी प्राप्त करना है तो उसे चाहिये कि संसार के पदार्थों में तलाश करने की बजाए परमात्मा की तरफ अपना रूख मोड़े सतगुरु की भक्ति में चित जोड़े जो सुख और शान्ति के व आनन्द के भण्डार हैं।

''सतगुरु सुख सागर जग अन्तर होर थाईं सुख नाहीं''।

सन्त महापुरुषों को संसार की दुःखित अवस्था को देखकर खेद होता है जीवों को सच्ची खुशी प्रदान करने के लिये अपने आनन्द और शान्ति के धाम को छोड़कर इस संसार में आते हैं और जीवों को सुख रूप बनाने के लिये सरल और सहज साधन बना देते हैं वो साधन हैं श्री आरती पूजा, नाम सुमिरण,ध्यान,सत्संग,सेवा व सतपुरुषों के दर्शन।वह जीव खुशकिस्मत है वह गुरुमुख भाग्यशाली हैं जिन्हें सन्तों महापुरुषों की संगत और उनसे प्रभु नाम की प्राप्ति हो गई है और वह सच्ची खुशी को हासिल करते हैं जो महापुरुषों के बताये हुये रास्ते पर चलते हैं और उनके द्वारा बनाये सुख के साधनों को प्रयोग में लाते हैं। इसलिये वही जीव सच्ची खुशी को हासिल करता है वह परिवार खुशियों से भरपूर रहता है जिसमें मालिक की भक्ति, प्रभु का गुणगान,सुबह शाम नितप्रति श्रीआरती पूजा,सत्संग,नाम कासुमिरण भजन कीर्तन होता रहता है। आप सब गुरुमुख सौभाग्यशाली हैं जिन्हें सन्तों की संगत प्राप्त होने से समझ आ गई है कि सच्ची खुशी मालिक की भक्ति में है इसलिये गुरुमुखों का कर्तव्य है कि संसार के कार्य व्यवहार करते हुये महापुरुषों के बताये रास्ते पर चलते हुये उनके द्वारा बनाये खुशी के साधनों को अपनाते हुये सच्ची खुशी को हासिल करके मनुष्य जन्म को सफल बनायें और परलोक सँवार लें।

सच्चा सुख (2)

संसार में जीवन व्यतीत करते हुये हर व्यक्ति की हार्दिक कामना या दिली ख्वाहिश क्या होती है?उसके लिये सतपुरुषअपनी वाणी में वर्णन करते हैं:-

है ख्वाहिश हर इन्सान के दिल में मिले खुशी आनन्द अपार हरदम।
पड़े कभी न दुःख की छाँव काली रहें दूर सब गम अज़ार हरदम।
कहें सन्त सुख की चाह अच्छी बेशक रखो ऊँचे विचार हरदम।
मगर सुख केसाधन भी करना है वाज़िब पूर्ण पूरुष कहें बारबार हरदम।
बिना मालिक की भजन बन्दगी के रहे आत्मा दुःखीऔर खुआर हरदम।
मिले सुख कैसे मिटें दुःख क्योंकर जब तक न सिमरे करतार हरदम।।

संसार के हर एक व्यक्ति की ये कामना या ख्वाहिश हुआ करती है कि मुझे हमेशा खुशी और आनन्द प्राप्त हो मेरा जीवन सुख और शान्ति से व्यतीत हो मेरे जीवन पर कभी भी दुःख की काली छाँव न पड़े मैं हमेशा चिन्ता कल्पनाओ व परेशानियों से मुक्त रहूं।शाश्वतआनन्द को प्राप्त करने के लिये दिन रात दौड़ धूप करता है हमेंशा इस बात की तलाश में रहता है कि जीवन में ऐसा क्षण आ जाये विरामआ जाये जिसके बाद कुछ भी पाने को शेष न हो क्योंकि जब तक कुछ भी पाने को शेष है तब तक दुःख चिन्ता कल्पना से छुटकारा पाना असम्भव है।आनन्द उसीअवस्था का नाम है जब कोई व्यक्ति वहाँ पहुँच जाये जहाँ से आगे जाने के लिये कुछ भी शेष न रहे तनाव न रहे।

सन्त महापुरुष कहते हैं कि खुशी और आनन्द की चाह रखना अच्छा है बुरा नहीं। शाश्वत आनन्द को प्राप्त करना जीव का जन्म सिद्ध अधिकार है बल्कि ऐसा कहना चाहिये कि जीवन काअसली मकसद उस सच्ची खुशी और शाश्वत आनन्द को प्राप्त करना ही है। लेकिन उसके लिये ये वाज़िब है,ये भी ज़रूरी है कि जीव उन्हीं साधनों को अपनाये जिनसे सच्ची खुशी और आनन्द प्राप्त हो सके।आम संसारी जीवों की हालत की ओर देखें तो मालूम होता है कि कई प्रकार के यत्न और पुरुषार्थ करने पर भी जीव को

आनन्द प्राप्त नहीं हुआ अगर प्राप्त हो गया होता तो सभी भागदौड़ समाप्त हो गई होती। उल्टा जीव को दुःख ही दुःख प्राप्त हुआ है।

यत्न बहुत सुख के किये दुःख का किया न कोय।
तुलसी यह आश्चर्य है अधिक अधिक दुःख होय।।

जीव अपनी बुद्धि अनुसार जन्म जन्मान्तरों से खुशी प्राप्त करने के लिये हज़ारो तरह के यत्न और उपाय करता रहा है आनन्द मिलना तो दूर उल्टा अधिकाधिक दुःखों का शिकार हुआ है। उसे दुःख ही प्राप्त हुआ है।कारण क्या है इतना परिश्रम करने पर भी आनन्द प्राप्त नहीं होता? इसका सीधा सा उत्तर है कि जिन साधनों से जीव को खुशी प्राप्त हो सकती थी उन साधनों के तो उसने अपनाया नहीं और दूसरे दूसरे ही उपाय करता रहा है। क्योंकि जिस किसी कार्य को सिद्धकरना हो उसके लिये ये ज़रूरी हो जाता है कि उसी कार्य से सम्बन्धित सामग्री और साधन जुटायें जायें तभी वह कार्य पूर्ण हो सकेगा।जैसे किसी को भूख लगी हो तो उस के लिये अनाज, फल,दूध और कोई खाद्य पदार्थ एकत्र करना होगा अगर वह खाने वाले खाद्य पदार्थ एकत्र करने बजाय ईंटें सिमेन्ट गिट्टीआदि एकत्र करता रहे तो उसकी भूख कैसे मिटेगी अगर किसी को मकान बनाना हो तो वह ईटों गिट्टी सिमेन्टआदि सामग्री की बजाय खाद्य पदार्थ एकत्र करता रहे तो कैसे वह मकान बना पायेगा। इसलिये ऐसा ही लगता है कि जीव को अगर कई जन्मों से प्रयत्न करने पर भी आनन्द प्राप्त नहीं हुआ तो ज़रूर कहीं भूल हो रही है।

अब इस पर विचार करना है कि जीव भूल से किन साधनों में खुशी और आनन्द की तलाश कर रहा है। आज सारी दुनियाँ में धन को प्राप्त करने के लिये भागमभाग मची हुई है। धन को ही खुशी और आनन्द का केन्द्र मान रखा है धन कैसे भी आये किसी भी माध्यम से आये इससे कोई मतलब नहीं। मतलब सिर्फ इस बात से है कि धन प्राप्त होना चाहिए। चाहे कोई निर्धन है,मध्यम वर्ग का है या कोई धनवान है। जो निर्धन है वह दो वक्त की रोटी के लिये शारीरिक आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिये थोड़ा धन चाहते हैं।जिनकी थोड़े धन से शारीरिक ज़रूरतें पूरी हो रही हैं वे उससे भी अधिक धन की लालसा रखते हैं ताकि सुविधा और विलासिता के सामान प्राप्त हो सकें। वे मनोरंजन के साधनों को प्राप्त कर लेने में ही खुशी और आनन्द प्राप्त कर लेना चाहते हैं। लेकिन उन्हें ये मालूम होना चाहिए कि धन से मनोरंजन के साधन तो खरीदे जा सकते हैं लेकिन खुशी औरआनन्द को प्राप्त नहीं किया जा सकता।सम्पन्नतम देशों में आस्ट्रेलिया अमेरिका आदि देश जहाँ भुखमरी की समस्या नहीं है सुख सुविधा और सम्पन्नता के भरपूर साधन हैं अधिकांश लोग सम्पन्न हैं उनके पास एक से एक कारें हैं आलीशान घर हैं सड़कें भी चमचमाती हैं खूबसूरत प्राकृतिक नज़ारें हैं फिर भी लोग सुखी नहीं हैं। कुछ वर्ष पहले,अप्रैल 1997 की बात है अमेरिका में निराशा के शिकार हुये हेवेन्स गेट के समूह के 39 लोगों ने आत्महत्या कर ली थी।आध्यात्मिक सुख और शान्ति की खोज के लिये।इन लोगों का मानना था कि उस समय पृथ्वी के निकट से गुजर रहा हेलबॉप पुच्छलतारा उन्हें स्वर्ग के द्वार तक ले जायेगा जहाँ पृथ्वी की तरह दुःख नहीं है वहाँ शान्ति ही शान्ति आनन्द ही आनन्द है। जहाँ जाकर उनका आध्यात्मिक उद्धार होगा।उद्धार हुआ या नहींऔर शाश्वत आनन्द की प्राप्ति हुई या नहीं यह तो कोई नहीं जानता परन्तु इसबात को कोई भी नहीं नकार सकता कि ये सम्पन्न लोग भी आत्मिक सुख और शाश्वत आनन्द की खोज में भटक रहे थे। विलासिता के साधनों से या धन से यदि खुशी और आनन्द प्राप्त किया जा सकता तो इतने सम्पन्न होते हुये उन्हें यह कदम उठाने की आवश्यकता नहीं थी।धन से अगर सुख खरीदा जा सकता तो शायद दुनियां का कोई भी अमीर धनवान व्यक्ति दुःखी नहीं होता परन्तु धन से सुख नहीं खरीदा जा सकता।इसलिये दुनियाँ के सभी अमीरों को सुखी और खुश नहीं कहा जा सकता।

अमेरिका में ही एक बहुत बड़ा धनी व्यक्ति हुआ है जिसका नाम रोकफेलर था उसके पास कई कारखाने थे अपार धन था उसके धन का अन्दाज़ा केवल इसी बात से लगाया जा सकता है कि एकदिन उसके घी के कारखाने में कर्मचारी घी के कनस्तरों का मुँह बन्द करने के लिये टाँका लगा रहा था।टाँका लगाने के लिये जो राँगा लगाया जाता है किसी टीन पर 39 बूंदे टाँका लगता किसी पर40 बूंद। जब उस धनी व्यक्ति ने देखा कि अगर 39बूंदों से टाँका लग सकता है तो40बूंद रांगा खर्च करने की क्या आवश्यकता है। उसने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि 39 बूँदे ही लगाई जायें।एकएक बूंद रांगा बचा लेने से उसे वर्ष भर में साढ़े चार लाख डालर का अतिरिक्त लाभ हुआ। आप अन्दाज़ा लगायें जब एक बूँद रांगा की बचत से उसे साढ़े चार लाख डालर काअतिरिक्त लाभ प्राप्त हुआ तो उसका कितना बड़ा व्यापार था कितना अपार धन उसका होगा।कहने का तात्पर्य ये कि वो अपने समय का सबसे बड़ा धनी व्यक्ति था उसके हज़ारों नौकर थे कई कारखाने थे परिवार था सब ऐशोआराम के साधन थे लेकिन वह भी दुःखी था कारण क्या कि वो शरीर से बहुत मोटा था चार आदमी उसे उठाते बिठाते थे स्वयं ठीक से चल भी नहीं सकता था उसने एक दिन देखा कि एक मज़दूर एक चीनी की बोरी उठाये एक बिल्डिंग की दूसरी मन्ज़िल पर ले गया तो उसे देखकर उसने ठण्डी सांस भर कर दुःख भरी आवाज़ में कहा कि हे ईश्वर कोई मेरी ये सारी अरबों की सम्पत्ति ले लेवे परन्तु मुझे इस मज़दूर जैसी शक्ति और स्वास्थ्य बख्श दे ताकि

मैं सुखी हो जाऊँ। अब बताईये ऐसे धन का,पदार्थों का क्या लाभ। इनसे खुशी कहाँ प्राप्त हुई? आप कहेंगे कि जिसके पास सुख सुविधा और विलासिता के सामान भी हों धन भी हो स्वास्थ्य भी हो तो वह ज़रूर सुखी होगा उसे ज़रूर आनन्द प्राप्त होगा लेकिन ऐसा नहीं है क्योंकि जीवन केअन्दर प्रत्येकव्यक्ति को कोई न कोई अभाव खटकता ही रहता है।धन है तो स्वास्थ्य नहीं है। स्वास्थ्य है,धन है,पर सन्तान का सुख नहीं है वह सन्तान के अभाव में दुःखी है उसने सन्तान की प्राप्ति को ही सुख का केन्द्र मान रखा है सन्तान न होने पर एक निराशा उदासी और सूना सूना सा अनुभव करता है दुःखी है। सन्तान के अभाव में अपने भाग्यों को कोसने लगता है ईश्वर पर दोष आरोपण करता है।सन्तान की प्राप्ति से किसी को खुशीऔर आनन्द प्राप्त हो गया हो इतिहास में ऐसा कोई भी उदाहरण नहीं मिलता रामायण और महाभारत का धर्म ग्रन्थों में उच्च स्थान प्राप्त है इन ग्रन्थों के मनन से यही ज्ञात होता है।महाभारत में धृतराष्ट्र ने कितनी आशा की थी पर एक सौ पुत्र होने पर भी उन्हें आजीवन सुख शान्ति नहीं मिल सकी। उनके पुत्र कौरव गण उनकेआज्ञाकारी नहीं हुये अपनी इच्छा के विरुद्ध भी उनका साथ देना पड़ा। अन्त में कौरवों के संहार से उन्हें घोर कष्ट संताप सहन करना पड़ा। मातृ पितृ भक्ति में श्रेष्ठ श्रवण कुमार का नाम सर्वोच्च है। वे अपने माता पिता के अद्वितीय भक्त थे ऐसा माता पिता का सेवाकारी पुत्र का उदाहरण मिलना कठिन है पर उन्हीं के कारण उनके माता पिता को घोर सन्ताप करना पड़ा। तथा उनकी मृत्यु हुई उनके क्रोध होने पर महाराज दशरथ को शाप हुआ। महाराज दशरथ ने पुत्र प्राप्ति के लिये व्यग्र होकर यज्ञ किया और उन्हें चार पुत्रों की प्राप्ति हुई।भगवान का अवतार था यह मंगलमय था परन्तु व्यवहारिक तौर पर परिणाम क्या हुआ।वृद्धावस्था में जब उन्हें विश्राम की आवश्यकता थी पुत्रों के कारण उन्हें बहुत कष्ट हुआ। पुत्र शोक के कारण ही उनका प्राणान्त हुआ और भी अनेकों उदाहरण दिये जा सकते हैं जिनसे मालूम होता है कि सन्तान प्राप्ति में भी खुशी की आशा रखना निरर्थक है। लेकिन जीव जन्म जन्मान्तरों से ही इन सांसारिक वस्तुओं में खुशी की तलाश करता रहा है मगर दुःख मिटता नहीं आनन्द प्राप्त नहीं होता सब किया गया परिश्रम व्यर्थ चला जाता है। भूल जीव की यहीं हो रही है कि जिन साधनों में खुशी नहीं है उनमें ढूंढता है और जहां से प्राप्त हो सकती है वहाँ तलाश नहीं करता।

एक बुढ़िया की सुई गुम हो गई वह उसे तलाश कर रही थी। एक लड़के ने पूछा माता क्या ढूँढ रही हो? उसने कहा बेटा सुई ढूँढ रही हूँ। लड़के ने पूछा सुई गिरी कहाँ थी? तो वह कहने लगी गिरी तो घर में थी। लड़के ने कहा जब गिरी घर में थी तो बाहर सड़क पर क्यों ढूँढ रही हो? उसे घर में ही तलाश करो। बुढ़िया ने कहा बेटा घर में अन्धेरा था भला अन्धेरे में कैसे मिलेगी बाहर रोशनी देखी इसलिये बाहर ढूँढ रही हूँ।आप बुढ़िया की नादानी पर हँसोगे लेकिन लगभग हम सब की यही अवस्था है। खुशी और आनन्द तो हमारे अन्दर में है ढूँढ रहे हैं बाहर सांसारिक पदार्थों में। घट केअन्दर चूंकि अन्धेरा है बाहर माया की चकाचौंध में खुशी की तलाश कर रहे हैं लेकिन वह मिले कैसे?

वस्तु कहीं ढूँढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।
कहे कबीर तब पाईये जब भेदी लीजै साथ।।

जीव को चाहिये कि बाहर ढूँढने की बजाय किसी भेदी सन्त सतगुरु की राहनुमाई लेकर अपने अन्दर रोशनी करे।अज्ञान काअन्धेरा दूर करके ज्ञान का प्रकाश करे तभी वह खुशी प्राप्त कर सकता है।ज्ञान की रोशनी तभी होगी जब जीव सतगुरु द्वारा बताये शब्द का अभ्यास करेगा नाम व भक्ति की कमाई करेगा।सुख मिले कैसे दुःख मिटे क्योंकर जब तक न जपे करतार हरदम।सतपुरुष श्री गुरु वाणी वचन हैं।

सुख नाहीं बहुते धन खाटे।सुख नाहीं पेखे निरट नाटे।
सुख नाही बहुते देश कमाये।नानक सच्चासुख हरिहर नाम हृदय सद ध्याये।

जीवों की दुःखी अवस्था को देख कर उन्हें सच्चा सुख प्रदान करने के लिये अज्ञान का अन्धकार मिटा कर ज्ञान की प्रकाश करने के लिये ही हर युग में सतपुरुष इस संसार में प्रकट होते हैं।और सच्चे सुख के साधन बना देते हैं।इसी मकसद को लेकर श्री परमहँस दयाल जी ने श्री आनन्दपुर दरबार की रचना की है और उसमें सच्ची खुशी के साधन श्री आरती पूजा, सतसंग,सेवा,सुमरिण और ध्यान जीवों को प्रदान किये हैं जिन पर चल कर जीव सहज ही सच्ची खुशी और आनन्द को प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बना सकता है और परलोक सँवार सकता है।

सच्चा सुख (3)

श्री अमर वचन हैं:-

दुनियाँ का हर इन्सान सुख शान्ति का तलबगार है।
करता है बहुत यत्न मगर रहता बेकरार है।
अपने ख्यालों को छोड़कर जो सन्त शरण में आ गया।
नाम भक्ति की कमाई करके भरपूर सुख को पा गया।।

फरमाते हैं किदुनियाँ का हर इन्सानअमीर गरीब,छोटा बड़ा,स्त्री पुरुष संसार का प्रत्येक प्राणी सुखशान्ति को प्राप्त करना चाहता है।सुखशान्ति को प्राप्त करने के लिये ही दिनरात दौड़धूप करता है।अथक परिश्रम करता है अनेक प्रकार के यत्न करता है।अपनी

समझ और बुद्धिअनुसार अपने ख्यालों से हज़ारों प्रकार के साधन जुटाता है। विलासिता की सामग्रियाँ एकत्र करता है लेकिन उसे सुख फिर भी प्राप्त नहीं होता रहता बेकरार है।

आज विज्ञान ने मानव को शरीर के सुख आराम के हर प्रकार के अनेकों साधन उपलब्ध करा दिये हैं लेकिन इतने साधन उपलब्ध होने पर भी जीव अशान्त और दुःखी दिखाई देता है। विश्व में अगर दृष्टिपात करके देखें तो सारे विश्व में ही अशान्ति का साम्राज्य है। हर देश,हर समाज, हर परिवार, दुःखी और अशान्त दिखाई देता है।अनेकों साधन उपलब्ध होने पर भी सुख नहीं मिला तो अब आकाश के पार चाँदऔर मंगल आदि ग्रहों पर सुख की तलाश कर रहा है। स्वर्ग को धरती पर लाने का प्यास जारी है। लेकिन अगर स्वर्ग को भी धरती पर उतार दिया जाये तो भी जीव को स्थाई व सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता।

एह तन कर फल विषय न भाई। स्वर्गउ स्वल्प अन्त दुःखदाई।।

इस तन को प्राप्त करने का फल विषयों की प्राप्ति नहीं क्योंकिअगर जीव को स्वर्ग के सुख भी प्राप्त हो जायें तो वो भी अन्त में दुःख में परिवर्तित हो जाते हैं। कारण क्या है? कारण ये है कि ये जितने भी साधन हैं केवल शरीर के आराम के लिये ही हैं शरीर चूँकि मिट जाने वाला है शरीर केनाश हो जाने पर ये सबसाधन छूट जाते हैं फिर दुःख को ही उपलब्ध होता है।विलासिता के साधनों से शरीर को सुख तो दिया जा सकता है परन्तु यह सुख का भौतिक रूप है जो क्षणिक है। जितने समय तक जिस साधन से आपको सुविधा या सुख मिल रहा है आपको आनन्द प्रतीत हो रहा है तभी तक आप सुखी हैं इस साधन के खत्म होते ही या बन्द होते ही उससे जो सुख प्राप्त हुआ था वह गायब हो जायेगा खत्म हो जायेगा या यह भी हो सकता है आप उससे बोर हो जायें उक्ता जायें। जो स्थाई सुख है वह है आत्मिक सुख।इसलिये संसार के पदार्थों को कितना ही एकत्र कर लो अन्त में मृत्यु के समय सब पागलपन लगता है कि सारा जीवन भागते रहे इन पदार्थों को एकत्र करने मेंअन्त में हाथ पल्ले कुछ भी नहीं आया।पहुँचे कहीं भी नहीं।मानव की येअवस्था कोल्हू के बैल जैसी हो जाती है जो सुबह से शाम तक चलता रहता है सोचता होगा मैंने बहुत सा सफर तय कर लिया होगा।बड़ा शरोगुल भी होता है कोल्हू के पिरने की आवाज़ भी होती है। लेकिन शाम को जब देखता है अपने को वहीं पाता है।

एक व्यक्ति तेली के पास तेल खरीदने के लिये गया।उसने देखा तेली तो दुकान पर बैठा तेल बेच रहा है। बैल अपने आप ही कोल्हू के ईर्द गिर्द चल रहा है।उस व्यक्ति ने तेली से पूछाआपने ये बैल क्या विदेश से खरीदा है? बड़ा समझदार है अपने आप ही चल रहा है। किसी के द्वारा हाँकने की भी ज़रूरत नहीं। उस तेली ने कहा साहिब ये विदेशी नहीं है शुद्ध भारतीय बैल है।मैने इसकीआँखों पर पट्टी बाँध रखी है जिससे ये समझ रहा है कि कोई मेरे पीछे है जब यह रुक जाता है तो मैं इसे यहीं से आवाज़ लगाकर हाँक देता हूंऔर मैंअपना काम करता रहता हूँ।वह व्यक्ति ज़रा तार्किक था। उसने कहा आपको कैसे पता चलता है कि बैल खड़ा हो गया है क्योंकि आप तो अपने काम में व्यस्त होते हैं। उसने कहा आप नहीं देख रहे कि मैंने इसके गले में घन्टी बाँध रखी है जब ये चलता है तो घन्टी की आवाज़ आती रहती है जब ये खड़ा हो जाता है तो घन्टी की आवाज़ बन्द हो जाती है और मुझे मालूम हो जाता है।वह व्यक्ति ज़रा ज्यादा ही तार्किक था कहने लगा कि बैल अगर खड़ा होकर ही सिर हिलाता रहे घन्टी बजती रहे तो आपको कैसे पता चलेगा? वह तेली ज़रा नाराज़ होकर बोला, आप ज्यादा तर्क वितर्क न करें आपको तेल लेना हो तो चुपचाप ले लें नहीं तो हमारे बैल के कान में आपके सुझाव पड़ गये तो हमारा काम चौपट हो जायेगा इसलिये आपने तेल लेना हो तो चुपचाप ले लेंअन्यथा कहीं और से खरीद लें।इसी तरह काल और माया ने भी जीव कीआँखों परअज्ञानता की पट्टी बाँध रखी है जिससे उसे कुछ सूझता ही नहीं सारा जीवन सांसारिक पदार्थों के पीछे चलता रहता हैं क्योंकि इन्हीं पदार्थों में ही सुख समझता है लेकिन उनमें सुख है ही नहीं तो उसे सुख मिलेगा कैसे। जितना भी इसके पीछे भागता रहे।

जेहि सुख को खोजत फिरे भटक भटक भ्रम माहिं।
भूला जीव न जानई सुख गुरु चरणन के माहिं।।

जिस सुख के लिये सारा संसार भटक रहा है भ्रम में पड़ा हुआ है वह सुख सतगुरु के चरण कमलों में है।सतगुरु सुखसागर जग अन्तर होर थाहिं सुख नाहिं।अपने ख्यालों को छोड़कर जो सन्तशरण में आ गया।वही भरपूर सुख को पा सकता है। सन्त महापुरुषों की शरण में आने से ही जीव को सच्चे सुख के भेद का पता चलता है। संसार में भूले भटके जीवों को सही मार्ग पर लाने के लिये, उन्हे सच्चे सुख का रहस्य बतलाने के लिये सुच्चा सुख प्रदान करने के लिये ही सन्त महापुरुषों का संसार में अवतरण होता है।

हमारे इष्टदेव सतगुरु दाता दयाल जी ने जब पहली बार 1976 में विदेश में कृपा फरमाई ईंगलैण्ड की धरती पर पदार्पण किया। लन्दन की व्यस्त सड़कों पर हज़ारों की संख्या में कारों,बसों,और मोटरों को इधर से उधर एक दूसरे के पीछे तेजी से भागते हुए देखा कि कोई पूर्व की तरफ कोई पश्चिम की तरफ कोई उत्तर की तरफ कोई दक्षिण की तरफ तेजी से भागे जा रहे हैं उन्हें इस तरह बेहताशा भागते देखकर श्री गुरुमहाराज जी ने

महात्मा जन जो साथ में थे उनसे पूछा कि ये सब कहाँ भागे जा रहे हैं? कहाँ पहुँचना चाहते हैं?क्यों बड़ी तेज़ी से भागे जा रहें हैं?तो महात्मा जी ने जवाब दिया,हुज़ूर ये सब सुख की तलाश में इधर उधर भटक रहें हैं। अपने ख्यालअनुसार ये समझते हैं कि शायद सुख पूर्व में मिल जायेगा तो पूर्व की तरफ भागते हैं वहाँ सुख नहीं मिलता तो पश्चिम की तरफ भाग पड़ते हैं इसी तरह चारों दिशाओंमें भटकने पर भी इन्हें सुख नहीं मिल रहा इसलिये ये बेचैन हैं बेकरार हैं सुख पाने को। सुखों के सागर श्री गुरुमहाराज जी ने इसीलिये ही अपना अनामी लोक छोड़कर इन्हें सच्चा सुख प्रदान करने के लिये ही यहाँ कृपा फरमाई है। जो सौभाग्य से चरण शरण में आ जायेंगे वे निश्चित ही सच्चे सुख को प्राप्त करके जीवन सफल बनायेंगे ।

श्री वचन हुयेः-वस्तु कहीं ढूँढें कहीं केहि विधि आवे हाथ।

कहें कबीर तब पाईये जब भेदी लीजै साथ।।

वस्तु कहीं हो और ढूँढे कहींऔर तो उसे वह कैसे बिना भेदी को साथ लिये प्राप्त कर सकता है और जिस शख्स को अपनी मन्जिल का पता ही न हो कि कहाँ पहुंचना है वो कैसे अपनी मन्ज़िल पर पहुँच सकता है। भले ही वह दिन रात चलता रहे दौड़ता रहे जन्म जन्मान्तरों तक भी अगर दौड़ता रहे तो वह अपनी मन्ज़िल को प्राप्त नहीं कर सकता। अपने ख्यालों से ही बिना सोचे समझे इधर उधर भाग रहे हैं भागते रहें इसप्रकार से सुख मिलने वाला नहीं।जब तकअपने असली ठिकाने परअपने असली घर नहीं पहुँचता उसे सुख शान्ति प्राप्त नहीं हो सकती। अपने असली घर का पता सन्त महापुरुषों की शरण में आने से ही चलता है ।

चलन चलन सब कोई कहे मोहे अन्देशा और।

साहिब से परिचय नहीं पहुंचेंगे केहि ठौर।।

कुछ व्यक्तियों ने नशा कर लिया।पूर्णिमा की रात थी ।नशे में मदमस्त हुये नदी पर गये उन्हें ख्यालआया कि नौका विहार करें।नाव वहाँ बँधी थी। मछुवे नाव बाँधकर घर जा चुके थे। रात आधी हो गयी थी।वे एक नाव में सवार हो गये। उन्होंने पतवार उठा ली और नाव खेना शुरु कर दिया। फिर वे रात देर तक नाव खेते रहे।सुबह होने के करीब आ गयी।सुबह की ठण्डी हवाओं ने उन्हें सचेत किया।उनका नशा कुछ कम हुआ और उन्होने सोचा कि हम न मालूम कितनी दूर निकल आये हैं।आधी रात से हम नाव चला रहे हैं,न मालूम किनारे और गाँव से कितने दूर आ गये हैं। उनमें से एक न सोचा कि उचित है कि नीचे उतर कर देख लें कि हम किस दिशा में आ गये हैं।लेकिन नशे में जो चलते हैं उन्हें दिशा का कोई भी पता नहीं होता है कि हम कहाँ पहुँच गये हैंऔर किस जगह हैं।उन्होंने सोचा जब तक हम इसे न समझ लें तब तक हम वापिस भी कैसे लौटेंगे।और फिर सुबह होने के करीब है गाँव के लोग चिन्तित होंगे। एक युवक नीचे उतरा और नीचे उतरकर जोर से हँसने लगा दूसरे युवक ने पूछा, हँसते क्यों हो? बात क्या है।उसने कहा,तुम भी नीचे उतर आओ और तुम भी हँसो।वे सारे लोग नीचे उतरे और हँसने लगे।कारण क्या था।कारण ये था कि वे वहीं के वहीं खड़े थे,नाव कहीं भी नहीं गयी थी।असल में वे नाव की जंज़ीर खोलना ही भूल गये थे। नाव की जंजीर किनारे से बँधी थी। उन्होंने बहुत पतवार चलायी थीऔर बहुत श्रम किया था लेकिन सारा श्रम व्यर्थ गया था क्योंकि किनारे से बँधी हुई नावें कोई यात्रा नहीं करतीं। मनुष्य की आत्मा की नाव भी किसी न किसी खूँटी से बँधी है और इसीलिए उसकी आत्मा की नाव कभी परमात्मा तक नहीं पहुँच पाती है वे वहीं खड़े रह जाते हैं जहाँ से यात्रा शुरु होती है।श्रम वे बहुत करते हैं, पतवार वे बहुत चलाते हैं, समय वे बहुत लगाते हैं लेकिन नाव कहीं पहुंचती नहीं है। सारा संसार ही गफलत का नशा पीकर के बेसुध होकर जीवन की नाव चला रहे हैं चला ही नहीं रहे दौड़ रहे हैं सारा जीवन ही भाग दौड़ करते हैं बल्कि जन्म जन्मान्तरों से दौड़ रहें लेकिन अन्त में पाते वहीं के वहीं हैं जहाँ से यात्रा शुरु की थी। जीवन में चलना ही ज़रूरी नहीं है बन्धन को खोलने की भी ज़रूरत है। जीवन की नाव धन के पद के,प्रतिष्ठा के, काम क्रोध,लोभ,मोह,अंहकार के खूँटे से इन्द्रियों के रसों के खूँटों से बँधी पड़ी है जब तक इन खूँटों से खोलेंगे नहीं कुछ भी परिणाम निकलने वाला नहीं।

स्वामी रामकृष्ण परमहँस खाने के बहुत शौकीन थे एक दिन उनकी पत्नी,माँ शारदा ने कहा कि आप इतने बड़े महापुरुष सन्त हैं और बार बार सतसंग छोड़कर रसोई घर में भोजन की बात करने आ जाते हं।ऐसा खाना बनना चाहिए। खाने में ये हो वो हो या आपके मनपसन्द का खाना बन रहा होता है तो सतसंग प्रवचन करते करते ही बीच में छोड़कर रसोई घर में चले आते हैं ये उचित नहीं है।लोग कैसी कैसी बाते करते हैं कि महापुरुष होते हुये भी जीभा पर नियन्त्रण नहीं।तब श्रीरामकृष्ण जी ने बड़ेअनुभव की बात कही कि मेरे जीवन की नाव ब्रह्मज्ञान के सागर में इतनी लहराती है किअगर उसे इस जीभा के खूँटे से छोड़ दूँ तो वह किनारा छोड़कर महा सागर में लीन हो जायेगी। इसलिये स्वाद की आसक्ति रूपी खूँटी से मैंने इसे बाँध रखा है। जिस दिन मेरी यह रूची चली जायेगी उसी दिन समझ लेना कि नाव खूँटी से निकल कर व्यापक सागर में व्याप्त हो जायेगी।फिर तीन दिन से ज्यादा ये नाव नहीं ठहर पायेगी।

एक दिन माँ शारदा थाली में भोजन सजा कर लाईं। श्री परमहँस जी ने खाने से मुँह फेर लिया उनके मनपसन्द का खाना था खाने से रूची खत्म होते देखा तो थाली उनके हाथ से गिर गई।उन्हें यादआ गया कि नाव खूँटी के किनारे से छूट चुकी है। अब ये शरीर रहने वाला नहीं । हुआ भी ऐसा ही। हमारी नाव तो कई खूँटियों से बँधी है।श्री रामकृष्ण जी की तो एक ही खूँटे से बँधी थी वो भी उन्होंने अपनी मौज से बाँध रखी थी संसारी जीवों की नावों को ब्रह्मसागर में मिलाने के लिये।याद रहे श्री परमहँस जी की नाव ब्रह्मसागर के सागर में लहराती थी लेकिन हम जीवों की नाव तो भवसागर में लहरा रही है। हम जीवों की नाव तो एक खूँटे से नहीं कई खूँटों से बँधी है। धन पाने की आसक्ति, पद की आसक्ति, मोह,लोभ जीभा के स्वाद,कान के राग, आँख,कान,मुख,नासिका एक एक इन्द्रियों के रसों के भोगने की आसक्ति रूपी खूटों से बँधी हुई इन सभी खूँटों से खोलकर अपने जीवन की नाव को छोड़ना है तब कहीं पहुँच पायेगा।केवल खूँटों से खोल देने से ही काम नहीं चलेगा अपनी मन्ज़िल पर नहीं पहुँच पायेगा। क्योंकि अपने बूते पर तो जीव भवसागर से पार नहीं हो सकता। किसी कुशल मल्लाह के मज़बूत सहारे की आवश्यकता होगी।

भयानक और गहरा भव समुन्द्र पार करना है।
सहारा ले ले सतगुरु का न अपने पे भरोसा कर।
हज़ारों खाहिशें दुनियाँ की दिल को देती हैं झटके।
गुरु के पाक दामन को ज़रा मज़बूत पकड़ा कर।।

अपनी नाव को इन खूँटों से खोलकर सतगुरु के जहाज से बाँध देना है। सतगुरु जीवों की दशा को देखकर ही अपना नाम जहाज़ को लेकर आते हैं। महापुरुषों के जहाज़ से बाँधना क्या है। बुल्लया रब दी की पाणा।इधरों पुटना ते उधर लाना।जो सन्त शरण में आ गया, भरपूर सुख को पा गया। अर्थात अपना सुरति को संसार से तोड़कर सतगुरु के चरणों से जोड़ना है। आँखों से पावन दर्शन, जीभा से सतगुरु के नाम का जाप, कानों से सतसंग----अन्तर गुरु अराधना जीभा जप गुरु नांउ।नेत्रीं सतगुरु पेखना स्रवणी सुनना गुरु नांउ-------।

अपनी सुरति की तार को संसार से तोड़कर सतगुरु के चरणों कमलों जोड़कर अपने इस जीवन को सुखमयी बनाना है और परलोक भी संवारना है।

कर्म फल

परमात्मा के द्वारा बनाई हुई इस सृष्टि में प्रायः ये दृष्टि गोचर होता है कि संसार में एक व्यक्ति तो इतना धनी है कि उसके पास अपार सम्पत्ति है अपनी ज़मीन जायदाद मकान नौकर चाकर शरीर के सुख आराम के लिये हर प्रकार के सामान उपलब्ध हैं वह हमेशा ही सुख ऐश्वर्य के झूले में झूल रहा है।इसके विपरीत एक व्यक्ति इतना निर्धन है कि दर दर की भीख माँग रहा है रहने को झोंपड़ी तक नहीं है फुटपाथ पर सोता है तन ढाँपने केलिये ढँग से कपड़ा भी नहीं है, दिन रात परिश्रम करके भी दो समय का भोजन भी उसे कठिनाई से प्राप्त होता है।कई तो जन्म से ही विकलाँग,कुरूप, कमज़ोर और मन्दबुद्धि को लेकर उत्पन्न होते हैं।और कई तो जन्म से ही सुन्दर स्वस्थ,हृष्टपुष्ट और कुशाग्र बुद्धि को लेकर उत्पन्न होते हैं।किसी की संसार में बहुत मान प्रतिष्ठा है इज्ज़त है मान सम्मान है तो कोई निरादर और अपमान भरा जीवन व्यतीत कर रहा है।

किसी के एक आँसू पर हज़ारों दिल तड़पते हैं।
किसी का उम्र भर रोना यूँ ही बेकार जाता है।।

किसी को ज़रा सी तकलीफ हो तो उसे देखकर हज़ारों लोग दुःखी होने लगते हैंऔर कोई सारी उम्र भी रोता रहे तो किसी को कुछ परवाह नहीं होती।

एक बाप के दो बेटे किस्मत जुदा जुदा है।
मिट्टी जिस्म की एक है जिससे बने हैं दोनों।।
इक तख्त पर नशीं है। इक दार पर चढ़ा है।
गुल्शन में जाके देखा दो फूल खिल रहे थे।।
इक आग पर चढ़ा है इक ताज़ में जड़ा है।।

एक ही बाप के दो बेटे होते हैं लेकिन उन दोनों की किस्मत अलग अलग है इक तो तख्त पर बैठकर राज्य सुख का भोग करता है लेकिन दूसरा दुर्भाग्यवश फाँसी केफँदे पर झूला दिया जाता है।जैसे बाग में दो फूल खिल रहे थे जब कि दोनों एक ही मिट्टी से पैदा हुये हैं एकही पेड़ की डाली पर खिलते हैं उसमें से एक फूल तो अर्क निकालने के लिये आग पर चढ़ा दिया जाता है दूसरे का भाग्य ये है किवह देवाताओं के गले का हार बन कर या उनके मुकुट पर शोभायमान होता है अपनी अपनी किस्मत है।

संसार में सभी मनुष्यों की अवस्था एक सी क्यों नहीं है?क्या परमात्मा किसी के साथ पक्षपात करता है?नहीं परमात्मा किसी के साथ पक्षपात नहीं करता। जब वह किसी के साथ पक्षपात नहीं करता तो फिर इतना भेदभाव क्यों?इतनी विपरीतता क्यों?इसका सीधाऔर सरल उत्तर ये है कि जीव के द्वारा पिछले जन्मों में किये हुये कर्मों के परिणाम

स्वरूप ही उसे सुख दुःख, हर्ष शोक,यश अपयश,अमीरी गरीबी,प्राप्त हुई है। जो भी उसकी वर्तमान अवस्था है वह उसकेअपने ही द्वारा किये हुये कर्मों का परिणाम है जिसे हम भाग्य कहते हैं। जीव अपने भाग्यों का स्वयं निर्माता है इसमें परमात्मा या प्रकृति या ईश्वर का कोई दखल नहीं है।पिछले जन्मों के किये हुये कर्मों के फलस्वरूप ही हमें आज का जीवन मिला है और आज के किये हुये कर्मों के अनूरूप हमें आगे का जीवन मिलता है।

लिखे गये जो पूर्बले कर्म तेरे ओही बनी तेरी तकदीर प्यारे।
खरे खोटे जेहे कीते आप कीते किसे होर ते दोष न वीर प्यारे।।

पिछले जन्मों में जो कर्म किये हैं चाहे खरे या खोटे अच्छे या बुरे वह स्वयं आप ही किये गये हैं किसी और का उसमें दोष नहीं है उसी के अनुसार ही तकदीर बनी है जो कि अनिवार्य है होनी ही है।

एक बार बादशाह अकबर उसकी रानी जोद्धाबाई और बीरबल नदी के किनारे सैर करने के लिये जा रहे ते सबसे आगे आगे जोद्धाबाई पीछे बीरबल और उसके पीछे बादशाह अकबर जा रहे थे।अकबर को बीरबल के साथ शरारत करने की सूझी।उसने बीरबल को पीछेसे चुटकी काट दी।

बीरबल ने सोचा राजा ने मुझ से शरारत की है इसका जवाब तो देना ही चाहिये।बीरबल ने आगे आगे जाती हुई रानी जोद्धाबाई को चुटकी भर दी रानी ने पलटकर देखाऔर बीरबल के मुँह पर एक चाँटा मार दिया।बीरबल ने पलटकर बादशाह के मुँह पर चाँटा रसीद कर दिया। इस पर बादशाह अकबर ने बिगड़ कर बीरबल से कहा।बीरबल ये क्या हिमाकत है?बीरबल ने उत्तर दिया।जहाँपनाह,बादशाह सलामत गुस्ताखी मुआफ हो ये जो आपने चिट्ठी भेजी थी ये उसका ज़वाब आया है।चिट्ठीअगर चुटकी है तो ज़वाब में चाँटा तो मिलेगा ही उससे जीव बच नहीं सकता। जैसा भी कर्म किया जायेगा उसका प्रतिकार तो मिलकर ही रहेगा ये प्रकृति का अटल विधान है। सन्त तुलसीदास जी कथन करते हैं--

तुलसी काया खेत है मनसा भयो किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं बुये सो लुणे निदान।।

गुरुवाणी का वाक हैः-जेहा बीजे सो लूणे करमां सन्दड़ा खेत।

वर्णन करते हैं कि ये शरीर एक धरती की तरह है मन किसान है पाप और पुण्य कर्म दो तरह के बीज हैं। धरती में जिस प्रकार का बीज बोयेगा वैसा ही फल प्राप्त होना अनिवार्य है जैसे किसान धरती में जिस प्रकार का बीज बोना चाहे बो सकता है चाहे मिर्ची का बीज बोये या गन्ने का।मिर्ची बोने से उसे मिर्ची ही प्राप्त होगी वह भी कई गुणा होकर गन्ना बोने गन्ना ही प्राप्त होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि मिर्ची बो देने से उसे मीठा गन्ना प्राप्त हो जाय। ऐसा होना कतई असम्भव है।

करे बुराई सुख चाहे कैसे पावे कोये।
रोपे बिरखा आक के आम कहाँ से होये।।

जैसा बीज वैसा फल,जैसा कर्म वैसा मर्म,जैसी करनी वैसी भरनी। ये आम कहावत प्रचलित हैं। इन्सान अगर पाप का बीज बोता है तो उसका फल दुःख या बुराई प्राप्त होकर ही रहता है पुण्य का फल सुख या भलाई मिलता ही है। शेष सादी साहिब का कथन हैः-

अज मुकाफाते अमल गाफिल मशौ।गन्दुम अज़ गन्दुम जौ ज़े जौ।।
ऐ मानव तू अपने कर्मों के परिणाम से गाफिल मत रह क्योंकि गेहूँ बोने से गेहूँ और जौं बोने से जौं की फसल ही काटनी पड़ती है।

प्राचीन समय की बात है उन दिनों पशुओं की तरह इन्सान भी बेचे जाते थे उन्हें गुलाम बनाकर उनसे पूरे जीवन भर काम लिया जाता था।एक बार लुकमान हकीम किसी ज़मींदार के पास गुलाम हो गया।लुकमान चूँकि बुद्धिमान था इसलिये उस जमींदार ने लुकमान को बाकी सभी गुलामों का मुखिया बना दिया कि इन गुलामों से काम लिया करे। उस जमीदार का स्वभाव क्रोधी,कठोर और क्रूर था। हमेशा गुलामों को तंग व परेशान और दुःखी किया करता था।एक दिन लुकमान ने विचार किया कि ज़मींदार को सीधे रास्ते पर लगाना चाहिये। एक दिन ज़मींदार ने लुकमान को बुलाकर हुक्म दिया कि खेतों में गैहूँ बो दिये जायें। लुकमान ने गेहूं की बजाय जौं बुवा दिये। दूसरे गुलामों ने लुकमान से कहा भी कि मालिक ने गेहूँ बोने के लिये कहा है आप जौं क्यों बुवा रहे हैं?लुकमान ने कहा जैसे मैं कहता हूँ वैसे ही करो।गेहूँ की बजाय जौं बो दिये गये।किसी ने ज़मींदार से जाकर कहा भी कि खेतों में जौं बो दिये गये हैं।ज़मींदार ने लुकमान को बुलाकर पूछा भी कि खेतों में गेहूँ बो दिये गये हैं?लुकमान ने कहा हुज़ूर,समय आने पर हम गेहूं की फसल ही काटेंगे।जब फसल पककर तैयार हुई तो ज़मीदार फसल देखने गया गेहूँ की जगह जौं की फसल देखकर आग बबूला हो गया। लुकमान से पूछा मैने तो गेहूं बोने के लिये कहा था ये जौं क्यों बो दिये?लुकमान ने संजीदगी से उत्तर दियाहुज़ूर भले ही जौं बोये गये हैं लेकिन हम फसल तो गेहूँ की ही काटेंगे।ज़मींदार क्रोधित होकर कहने लगा तेरा दिमाग तो खराब नहीं हो गया?जब जौं बोये तो जौं ही प्राप्त होंगे गेहूं कैसे प्राप्त कर सकेगा?लुकमान ने उत्तर दिया हुज़ूर इसी प्रकार ही जैसे आप

क्रूर,कठोर,निर्दयी और क्रोधित रहते हुये नित्य पाप कर्म करते हुये भी यही आशा रखते हैं कि जन्नत में,स्वर्ग में जगह मिलेगी।जब आपको पाप कर्मों के फलस्वरूप सुख या स्वर्ग मिल सकता है तो जौं बोने से हमें गेहूँ की फसल प्राप्त करना कौन सी कठिन बात है?तब से उस ज़मींदार की आँखें खुलीं उसने अपना स्वाभाव व कर्म बदल दिये। इन्सान अगर धनी है या निर्धन,सुखी है या दुःखी,अपमानित है या सम्मानित,तो केवल अपने द्वारा किये शुभ या अशुभ कर्मों के कारण ही।हर व्यक्ति हमेशा सुखी और खुश रहना चाहता है दुःखी होना कोई भी पसन्द नहीं करता सन्त महापुरुष फरमाते हैं कि तेरे जीवन में अगर दरिद्रता या दुःख ही दुःख भरा है काँटे ही काँटे बिछे हैं तो भी चिन्ता मत कर। तकदीर को तदबीर से बदला जा सकता है।

जेकर भैड़ी है बन्दे तकदीर तेरी हिम्मत नाल तकदीर दा पलट पासा।
जेहा बनना चाहें संसार अन्दर उहो जेहे ही कर क्रियामाण कर्म दासा।।

आगेअपना जीवन सुन्दर,शानदार,खुशरंग,सुखी और सफल बनाना चाहता है तो अशुभ कर्मों को तो बिल्कुल ही त्याग दे उन्हें सदा के लिये तिलाञ्जली देदे। हमेंशा नेकी की राह चल।शुभ कर्म कर।शुभ कर्म भी करे तो वह भी निष्काम भाव से कर क्योंकि शुभ कर्म भी अगर सकाम भाव से करेगा फल की कामना को सामने रखकर करेगा तो वह भी बन्धन का कारण बन जायेगा।आवागमन के चक्र जन्म मरण के बन्धन का कारण बन जायेगा। क्योंकि कर्म चाहे शुभ हो याअशुभ फल भोगने के लिये शरीर धारण करना पड़ेगा।चौरासी का चक्र तो छूटा नहीं।अगर पाप कर्म से जीव आवागमन के चक्र में बँध जाता है तो फल की कामना से किया गया पुण्य कर्म भी चौरासी में ले जाने वाला बन जाता है।अशुभ कर्म उन्हें कहा जाता है जो शास्त्रों में निषिद्ध कर्म कहे गये हैं।शुभ कर्म क्या हैं। शुभ कर्म है सन्त महापुरुषों की चरण शरण ग्रहण करके मालिक की भक्ति करना,प्रभु के नाम का सुमिरण,अपने इष्टदेव का पूजन अराधन,सतगुरु के श्री चरण कमलों का ध्यान,सेवा सत्संग ये सब शुभ कर्म हैं। प्रभु की भक्ति करने से नाम का सुमिरण वह नाम की कमाई करने से ही जीव ही अर्थों में सच्चा धनी बन सकता है जिससे उसका संसार में जीवन भी सुखरूप बीतता ही है संसार के पदार्थों की भी कुछ कमी नहीं रहती साथ साथ मालिक की दरगाह में भी सच्चा सम्मान प्राप्त करता है जिससे उसका परलोक भी सँवर जाता है।

जिमी सरिता सागर पहिं जाई।यद्यपि ताहि कामना नाहिं।
तिमि सब सम्पत्ति बिनहिं बुलाये।धर्मशील पे जाये सुभाये।।

जिस प्रकार सागर को यद्यपि नदियों के जल की कामना नहीं है फिर भी नदियाँ स्वतः ही सागर में मिल जाती हैं उसी प्रकार ही प्रभु भक्त को यद्यपि किसी वस्तु की कामना नहीं होती फिर भी संसार की सब सम्पत्ति उस के पास बिना यत्न किये ही उसे प्राप्त हो जाती है। गुरुवाणी का भी वाक है।

जे कौ चार पदार्थ माँगै । साध जनां की सेवा लागे।
जे कौ अपने दूख मिटावे हरि हर नाम रिदे सद ध्यावे।।
जे को अपनी सोभा लौरे साध संग में हौं मैं छौरे।
जिनको नित प्रभु दरस प्यासा नानक ताके बल बल जासा।।

अगर कोई चारों पदार्थ(धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष) पाने का इच्छुक है तो चाहिये कि सन्त सतगुरु की सेवा करे जो अपने जन्म जन्मान्तरों के दुःख मिटाना चाहता है सच्चा सुख प्राप्त करना चाहता है तो प्रभु के नाम का सुमिरण करे।जिसे मालिक की दरगाह में इज़्ज़त प्राप्त करनी है तो सन्त महापुरुषों की शरण में रहकर अपना आपाभाव मिटा दे जो नित प्रभु के दर्शनों का अभिलाषी है ऐसे गुरुमुख पर बलिहार जाना चाहिये। सन्त महापुरुषों की शरण संगति में आने से उनके पावन सत्संग से जीव की किस्मत सँवर जाती है।

एक बार दशम पादशाही श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी का दरबार सजा हुआ था कर्म फल के प्रसंग पर पावन वचन हो रहे थे कि जिसकी जो प्रारब्ध है उसे वही प्राप्त होता है कम या अधिक किसी को प्राप्त नहीं होता क्योंकि अपने किये हुये कर्मों का फल जीव को भुगतना ही पड़ता है। वचनों के पश्चात श्री मौज उठी कि जिस किसी को जो वस्तु की आवश्यकता हो वह निःसंकोच होकर माँग सकता है उसे हम आज पूरा करेंगे। एक श्रद्धालु ने हाथ जोड़ कर विनय की कि प्रभो मैं बहुत गरीब हूँ मेरी तमन्ना है कि मेरे पास बहुत सा धन हो जिससे मेरा गुज़ारा भी चल सके और साधु सन्तों की सेवा भी कर सकूँ उसकी भावना को देखकर श्री गुरुमहाराज जी ने शुभ आशीर्वाद दिया कि तुझे लखपति बनाया। दूसरे भक्त ने खड़े होकर हाथ जोड़कर विनय की श्री गुरुमहाराज जी ने पूछा क्यों भई तुम्हें धन की आवश्यकता है? उसने विनय की कि भगवन नहीं मेरे पास आपका दिया हुआ सब कुछ है लेकिन उसको सँभालने वाला नहीं है अर्थात पुत्र नहीं है। आशीर्वाद दिया कि मैं अपने चार कुर्बान कर दूँगा तुझे चार दिये उसी गुरुमुख मण्डली में सत्संग में एक फकीर शाह रायबुलारदीन भी बैठे थे उसकी उत्सुकता को देखकर अन्तर्यामी गुरुदेव ने पूछा राय बुलारदीन आपको भी कुछ आवश्यकता हो तो निसन्देह निसंकोच होकर कहो। उसने हाथ जोड़ कर खड़े होकर विनय की कि प्रभो मुझे तो किसी

भी सांसारिक वस्तु की कामना नहीं है परन्तु मेरे मन में एक सन्देह उत्पन्न हो गया हैअगर आपकी कृपा हो तो मेरा सन्देह दूर कर दें।श्री वचन हुये कि सन्तमहापुरुषों की शरण में आकर जीव के संशय भ्रम दूर नहीं होंगे तो कहाँ होंगे,इसलिये अपना सन्देह हमें बताओ उसे अवश्य दूर करेंगे। वेनती की कि प्रभो अभी अभी आपने वचन फरमाये हैं कि प्रारब्ध से कम या अधिक किसी को नहीं मिलता अपने कर्मों का फल प्रत्येक जीव को भुगतना ही पड़ता है तो मेरे मन में सन्देह हुआ कि अभी जिसे आपने लखपति होने का आशीर्वाद दिया है एक को चार पुत्र प्रदान किये हैं जब इनकी तकदीर में नहीं है तो आपने कहां से दे दिये?श्री गुरुमहाराज अति प्रसन्न हुये फरमाया रायबुलारदीन ये तेरा संशय नहीं है इन सबका संशय है आज सब के संशय भ्रम दूर हो जायेंगे।श्री गुरुमहाराज जी ने सेवक द्वारा एक कोरा कागज़ मोहर वाली स्याही मँगवाई और अपनी अँगुली की छाप(अँगूठी)उतार कर रायबुलारदीन से फरमाया कि बताओ इस अँगूठी के अक्षर उल्टे हैं कि सीधे?उसने उत्तर दिया कि उल्टे हैं सच्चे पादशाह। फिर स्याही में डुबो कर कोरे कागज़ पर मोहर छाप दी।अब पूछा बताओअक्षर उल्टे हुये है कि सीधे।उत्तर दिया कि महाराज अब सीधे हो गये हैं।श्री वचन हुये कि तुम्हारे प्रश्न का तुम्हें उत्तर दे दिया गया है।उसने विनय की भगवन मेरी समझ में कुछ नहींआया।श्री गुरु महाराज जी ने फरमाया जिस प्रकार छाप के अक्षर उल्टे थे लेकिन स्याही लगाने से छापने पर वह सीधे हो गये हैं। इसी तरह ही जिस जीव के भाग्य उल्टे हों और अगर उसके मस्तक पर सन्त सतगुरु के चरण कमल की छाप लग जाये तो उसके भाग्य सीधे हो जाते हैं। सन्त महापुरुषों की शरण में आने से जीव की किस्मत पल्टा खा जाती है।भाग्य सितारा चमक जाता है।कहते हैं ब्रह्मा जी ने चार वेद रचे इसके बाद जो स्याही बच गई वे उसे लेकर भगवान के पास गये उनसे प्रार्थना की कि इस स्याही का क्या करना है? भगवान ने कहा इस स्याही को ले जाकर सन्तों के हवाले कर दो उनकोअधिकार है कि वे लिखें या मिटा दें या जिस की किस्मत में जो लिखना चाहें लिख दें।

इसलिये जो सौभाग्यशाली जीव सतगुरु की चरण शरण में आ जाते हैं सतगुरु के चरणों कोअपने मस्तक पर धारण करते हैं सभी कार्य उनकी आज्ञा मौजानुसार निष्काम भाव से सेवा करते हैं सुमिरण करते हैं निःसन्देह यहाँ भी सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करते हैंऔर कर्म बन्धन से छूटकर आवागमन के चक्र से आज़ाद होकर मालिक के सच्चे धाम को प्राप्त करते हैं।

सच्चा धन

कबीर सब जग निर्धना धनवन्ता नहीं कोये।
धनवन्ता सोई जानिये जाके सतनाम धन होये।।

परमसन्त श्री कबीर साहिब जी फरमाते हैं कि सारा संसार ही निर्धन है।क्या सारा संसार ही निर्धन है? महापुरुषों के वचन तो अटल सत्य हैं। लेकिन हम तो संसार में देखते हैं कि ऐसे अनेकों व्यक्ति हैं जिनके पास करोड़ों की अरबों खरबों की चल अचल सम्पत्ति है क्या वो भी सब गरीब हैं?क्योंकि सारे संसार में सब आ जाते हैं अमीर भी गरीब भी।सांसारिक दृष्टि से चाहे कोई अमीर है या गरीब धनी है या निर्धनअगर उसके पास सतनाम का धन नहीं है प्रभु के सच्चे नाम की पूँजी नहीं है प्रभु के प्रेमऔरभक्ति की सम्पदा नहीं है तो वह गरीब है निर्धन है। जिसके पास सतनाम का धन है वही वास्तव में धनवान है।धनवन्ते सोई जानिये जाके सतनाम धन होये।कारण क्या है?कारण उसका ये है कि संसार के जितने भी धन पदार्थ हैं वो सब यहीं पर ही रह जाने वाले हैं मृत्यु केउपरान्त परलोक में जीव के साथ नहीं जाते।जो धन यहीं पर रह जाने वाला है परलोक में साथ न ले जाया जा सके तो चाहे वह कितना ही एकत्र कर लिया जाये भले ही सारे संसार का धन एकत्र कर लिया जाये उसे प्राप्त कर लेने पर धनी नहीं कहा जा सकता। इसलिये महापुरुष चेतावनी देते हैं कि ऐ जीव वह धन एकत्र कर जो तेरे साथ जाये।

कबीर सो धन संचिये जो आगे को होये।
सीस चढ़ाये गाठड़ी जात न देखा कोये।।

सृष्टि को बने करोड़ों वर्ष हो गये हैं जब से सृष्टि बनी है अनेकों ही बड़े बड़े सेठ साहुकार,धनी,राजे महाराजे इस संसार में हो चुके हैं लेकिन आज तक कोई भी ऐसा उदाहरण नहीं मिलता जो इस सांसारिक धन की गठड़ी सीस पर धर कर ले गया हो न देखा न सुना।इसलिये महापुरुष फरमाते हैं वह धन संचित कर जो परलोक में काम आये। फकीरों का कथन है--

कारूँ जोड़ के चालीह गंज सज्जनों छेकड़ गया चारे पल्लू झाड़ एत्थे।
रावण रत्त चोई ऋषियाँ साधूआं दी आखिर गया लंक उजाड़ एत्थे।।
काहदे वास्ते दगे ते फरेब करने प्यारेया ज़िन्दगी दिहाड़े चार एत्थे।।
जिन्हां सन्तां सतगुरां दे वचन मन्ने गये अपना जन्म सँवार एत्थे ।।

कहते हैं कारूँ बादशाह ने चालीस गंज खज़ाना एकत्र किया था वह भी सारा छोड़ कर चला गया। उस कारूँ बादशाह ने एक बार अपने वज़ीर से कहा कि हमारे पास कितना खज़ाना है हिसाब लगाकर बताओ तो वज़ीर ने हिसाब लगा कर बताया कि बादशाह

सलामतआपके पास इतना धन है कि आपकी बीस पीढ़ीयाँ भी बैठ कर खाती रहें तो आपका धन खत्म न होगा। यह सुनकर राजा का चेहरा उदास हो गया।वज़ीर बादशाह का चेहरा मायूस देखकर कहने लगा इतना धन सुनकर तो आपको प्रसन्न होना चाहिये था किन्तु इसके विपरीत मैं आपके चेहरे पर दुःख और मलाल देख रहा हूँ। बादशाह ने कहा हमारी बीस पीढ़ीयों के लिये तो धन हमारे पास है लेकिन मुझे चिन्ता इस बात की है कि हमारी इक्कीसवीं पीढ़ी क्या खायेगी?वह इतना लोभी था कि कहते हैं फिर उसने नगर में मुनादी करा दी कि जिसके पास जितना भी धन है सब राजकोष में जमा करवा दे अगर किसी ने एक रूपया भी रखा तो उसे सजा दी जायेगी। राजा के भय से सभी ने अपना सारा धन राजकोष में जमा करवा दिया। राजा ने ये परखने के लिये कि कहीं किसी ने धन छुपाकर तो नहीं रख लिया एक मुनादी करा दी कि कोई एक रूपया मेरे पास लेकर आयेगा उसे आधा राज्य दिया जायेगा।एक नव युवक नेअपनी माँ से रूपये के लिये कहा तो मां ने कहा राजा की ये चाल है राजपाट कुछ नहीं मिलेगा।जब लड़का न माना तो माँ ने कहा मेरे पास तो रूपया नहीं है तेरे पिता को दफनाते समय कब्र में एक चाँदी का रूपया रखा गया था कब्र खोद कर वह रूपया निकाल सकता है उस नवयुवक ने कब्र खोद कर रूपया निकाला और राजा के पास ले गया जब राजा को मालूम हुआ कि हमारे देश में कब्रों में बहुत सा धन, गढ़ा हुआ है तो उसने सब कब्रें खुदवा कर चाँदीसोने के सिक्के सब निकलवा लिये इतना लोभी था उसने चालीस गँज खज़ाना इकट्ठा किया था आखिर वो भी छेकड़ गया चारे पल्लू झाड़ ऐत्थे।रावण रत चोई ऋषियाँ साधुआं दी आखिर गया लंक उजाड़ एत्थे। रावण की लंका ही सोने की थी उसकी लंका का गढ़ सारा सोने का था वह धन के लोभ में ऋषियों से कर लेने से भी न चूकालेकिन महापुरुष फरमाते हैं उसे क्या मिला आखिर अपनी सब प्रजा को मरवाकर सारी लंका भी उजाड़ गया।लंका का गढ़ सोने का भया मूर्ख रावण क्या ले गया? विश्वविजय का स्वपन देखने वाला सिकन्दर जब मरने लगा अन्तिम समय में उसने अपनी प्रजा से कहा कि मेरे दोनों हाथ जनाजे से बाहर रखना और मेरा जनाजा गली गली कूचे कूचे में फिरे ताकि लोगों को नसीहत मिल जाये कि विश्वविजेता सिकन्दर धनवानऔर बलवान होते हुये भी दोनों हाथ खाली गया है।यहाँ का धन एकत्र करने की बजाय साथ ले जाने वाला धन एकत्र करें। मुझे मालूम होता कि ये धन साथ नहीं जाता तो मैं वो धन एकत्र करता जो साथ जाता मगर अफसोस कि अब क्या हो सकता है।

सारा संसार ही धोखे में पड़कर सांसारिक धन ही एकत्र करने में अपने अमुल्य जीवन को गँवा रहे हैं ये समझ जीव को कब आयेगी?जब जीव सन्त महापुरुषों की शरण संगत में आयेगा उनसे ज्ञान हासिल करेगा उनके मार्गदर्शन में अपने जीवन को बितायेगा। महापुरुष संसार में आते ही इसीलिये हैं कि जीव को सत असत की परख हो जाये और सत वस्तु नाम के धन की प्राप्ति का यत्न करें।

एक बार श्री गुरु नानक देव जी भ्रमण करते हुये लाहौर में पधारे। उन दिनों लाहौर में सबसे बड़ा धनी व्यक्ति दूनी चन्द रहता था।दूनी चन्द ने जब श्री गुरुनानकदेव जी की महिमा सुनी तो उनके दर्शन के लिये श्रीचरणों में उपस्थित हुआ।विनय की कि महाराज मेरा नाम दुनी चन्द सेठ है।मैं यहाँ का सबसे धनी व्यक्ति हूँ मेरे समान किसी के पास भी धन नहीं है यहाँ कीरीति रिवाज़ के अनुसार जिसके पास एक करोड़ रूपया हो जाता है तो वह अपने मकान पर एक झण्डा लगा देता है।मेरे मकान पर आप देख सकते हैं कि सात झण्डे लगे हुये हैं मैं सात करोड़ का मालिक हूँ। आप मुझे कोई सेवा का अवसर प्रदान करें। श्री गुरु नानकदेव जी ने उसे एक सुई देकर फरमाया कि हमारा एक काम करना ये सुई जब आप मृत्यु के पश्चात परलोक में जायें तो हमें ये सुई वहाँ दे देना। यह एक छोटा सा कार्य कर देना।वह सुई लेकर विचार करने लगा कि ये मेरा शरीर तो यहीं रह जायेगा इस सुई को मैं किस प्रकार ले जा सकूँगा?महापुरुषों से वायदा करके मैं झूठा हो जाऊँगा इसलिये ये सुई इन्हें वापिस कर देनी चाहिये ऐसा विचार करके उसने श्रीगुरुनानकदेव जी से वेनती कि कि महाराज यहाँ तो आपको जितनी सुईयाँ चाहें मैं लाकर दे सकता हूँ लेकिन परलोक में ये सुई मैं न दे सकूँगा क्योंकि मैं इसे साथ कैसे ले जा सकता हूँ?इसलिये आप इसे अपने पास ही रखें और मुझे क्षमा करें।श्री गुरुमहाराज जी ने फरमाया कि भाई जिस प्रकार लाखों करोड़ों की सम्पत्ति जो इकट्ठी कर रखी है जैसे उसे साथ ले जाओगे इसी प्रकार ये सुई भी साथ ले जाना। महापुरुषों की सब कार्यवाही जीवों को सही मार्ग पर लाने के लिये होती है।अब उसकी समझ में आ चुका था कि ये सब धन यहीं छोड़ जाना है साथ नहीं जायेगा।श्री गुरुनानक देव जी ने फरमाया दूनी चन्द तुम सेठ नहीं हो अमीर नहीं हो गरीब हो।क्योंकि तुम्हारे पास साथ ले जाने वाला धन नहीं है,साथ ले जाने वाला जितना जिसके पास है वह केवल उतना ही धनी है अमीर तो वही है जिसके पास साथ ले जाने वाला धन है जो मौत के पार ले जाया जा सके।

समुन्द साह सुल्तान गिरहा सेती मालु धन।
कीड़ी तुलि न होवनी जे तिस मनहु न विसरहि।।

बड़े से बड़ा सम्राट हो जिसके पास समुन्द्र जैसा विशाल धन हो धन के पर्वतों के अम्बार लगे हों वह भी एक छोटी सी चिउंटी का मुकाबला नहीं कर सकता वह चींटी अगर परमात्मा की याद नहीं भूलती परमात्मा की याद अगर उसके दिल में बसी हुई है तो वह सम्राटों से भी बढ़कर है।महान से महान सम्राट भी परमात्मा की याद के धन के बिना दरिद्र है। एक ही दरिद्रता है परमात्मा की याद को भूल जाना एक ही समृद्धि है परमात्मा की याद को उपलब्ध हो जाना।इसलिये तुम अपने बारे में ये मत सोच लेना कि मेरा बैंक में इतना बैंलेंस है।ये धोखा है अपने भीतर के खाते को खोलना और देखना कि कितना नाम का धन एकत्र किया है?श्री गुरुनानकदेव जी के पास कौन सा धन था कौन सा राज्य था पद था?लेकिन बड़े से बड़े राजे महाराजे भी उनके चरणों में लौटते थे उनसे कृपा की भीख माँगते थे।(महात्मा बुद्ध,सन्त रविदास)आदि उदाहरण।

इसलिये संसार में जो कुछ इकट्ठा कर रहे हो वह तभी तक बहुमुल्य है जब तक ज्ञान नहीं हुआ।ज्ञान सन्त महापुरुषों के मार्गदर्शन से उनकी संगत मेंआने से ही प्राप्त होता है जब ज्ञान हो जायेगा तो तुम पाओगे कि मैं कूड़ा कर्कट इकट्ठा कर रहा था।एक छोटा बच्चा कंकड़ पत्थर को एकत्र करके समझता है कि कीमती हैं,काँच की गोलियों को एकत्र करता है अपनी जेबें भरकर रखता है उसे वह बहुमुल्य हीरे जान पड़ते हैं।हीरे जैसे मालूम पड़ते हैं।माँ को समझाना पड़ता कि ये काँच की गोलियाँ क्यो एकत्र कर रखी हैं। उसे बच्चे के खीसे में से निकाल कर फैंकने पड़ते हैं लेकिन वह फिर उठा लाता है लेकिन जब वह बड़ा होगा, प्रोढ़ होगा तो वह भी अपने बच्चों से कहेगा कि ये क्या काँच के टुकड़े इकट्ठे कर रखे हैं?इसे फैकों।इसी तरह जब जीव को सन्त महापुरुषों की संगत में आने से समझ आ जाती है कि ये सब कंकड़ पत्थर हैं तो वह कहता है मैं व्यर्थ ही इन्हें एकत्र कर रहा था। इसीलिये ही कहा कि-- कबीर सो धन संचिये जो आगे को होये। वह धन एकत्र कर जो तेरे साथ जाये क्योंकि परलोक में परमात्मा की दरगाह में ये नहीं पूछा जायेगा कि तेरे पास कितना धन था।तेरी कितनी मान प्रतिष्ठा थी कितना साम्राज्य था?वहां तो ये पूछा जायेगा परमात्मा के नाम की कितनी जमा पूँजी है?प्रभु के प्रेमाभक्ति की कितनी सम्पदा एकत्र करके लाये हो?

आकबत में माँगेगे तुझसे हिसाब, कौड़ी कौड़ी दमड़ा दमड़ा दाम दाम।
जब न कुछ बन आयेगा तुझसे जवाब क्या तू ऐ नादां करेगा इन्तज़ाम।।

महापुरुषों को जीव की इस दशा पर दया आती है लेकिन जीव माया के पीछे अपने अमुल्य जीवन को यूँ ही व्यर्थ खो देता है जो धन साथ में जाने वाला है उसे प्राप्त करने का यत्न नहीं करता जो छोड़ जाने वाला है उसके पीछे परिश्रम और पुरुषार्थ करता है।

रत्न त्याग कौड़ी संग रचे साच छोड़ झूठ संग मचे।
जो चलना सो स्थिर कर माने। जो होवन सो दूर पराने।।
छड़ जाये तिसका स्रम करे जो संग सहाई तिस परहरै।

परमात्मा की भक्तिरूपी मणी को त्याग कर कौड़ियाँ इकटठी कर रहा है जो सत वस्तु है उसे छोड़ झूठ से प्रेम करता हैजो छोड़ जाने वाली है उसको प्राप्त करने का यत्न करता है जो संग सहाई है उसे प्राप्त करने का यतन नहीं करता।एक तरफ तो ऐसे जीव हैं जो माया के पीछे लग करके अपने अमुल्य जीवन गँवा रहे हैं दूसरी तरफ ऐसे भी सौभाग्यशाली जीव हैं जिन्हें सौभाग्य से सन्त महापुरुषों की शरण प्राप्त हो गई हैऔर परलोक की पूँजी बनाने में लग गये हैं।यह माया तो इस लोक की साथी किसी सीमा तक हो सकती है किन्तु परलोक की साथी नहीं हो सकती। इस लोक की पूंजी से इसी लोक के पदार्थ ही प्राप्त किये जा सकते हैं परलोक के नहीं। हाँ अगर कोई परलोक की पूंजी तैयार करना चाहे तो वह इस लोक की माया के बदले प्राप्त कर सकता है।शमशान की भूमि तक जीवात्मा की यात्रा इस लोक की यात्रा है।इसके आगे परलोक की यात्रा की हद शुरू होती है यदि किसी को विदेश जाना पड़े तो मार्ग में ऐसा स्थान होता है वहां यात्री को अपने देश की करन्सी देकर विदेश की करन्सी लेनी पड़ती है क्योंकि उसके देश की करन्सी विदेश में नहीं चलती।उस नियत स्थान पर जो कर्मचारी होते हैं उनका सम्बन्ध दोनों देशों से होता है। ठीक इसी तरह ही माया इस लोक की करन्सी है परलोक में इस करन्सी से काम न चलेगा यदि किसी को परलोक की पूँजी की आवश्यकता है तो उसे चाहिये कि मार्ग में बैठे हुए कर्मचारी सन्त सतगुरु से सम्पर्क जोड़ कर भक्ति रूपी विदेशी करन्सी खरीद कर सकता है वे सन्त सतगुरु दोनों देशों से सम्बन्ध रखते हैं इस लोक से भी परलोक से भी।जिसने माया को सन्त महापुरुषों के दरबार में भेंट करके भक्ति रूपी सच्ची धन राशी खरीद कर ली समझो वह धर्मराज के हिसाब से मुक्त हो गया।

सन्तन संग मेरी लेवा देवी सन्तन स्यों व्यौहारा।
सन्तन स्यों हम लाहा खाटिया हरि भक्ति भरे भण्डारा।।
सन्तन मौकउ पूँजी सौंपी तो उतरया मन का धोखा।।
धर्मराय अब का करेगो जब फाटयो सगलो लेखा।।

पँचम पादशाही श्री गुरु अर्जुन देव जी के समय में जब सरोवर का निर्माण कार्य चल रहा था।सभी श्रद्धालुओं ने अपनीअपनी श्रद्धानुसार धन की सेवा भेंट की-----गरीबू के पास कुछ न था केवल एक दमड़ी उसके पास थी-----भेंट करने के लिये शर्मसार-----उससे स्वंय श्री गुरु महाराज जी ने सेवा वह दमड़ी माँगी----वर दिया--इस हाथ में लोक के

सुख दूसरे में परलोक के--- दोनों में से कोई एक ले सकता है। उसने विनय की लोक माँगता हूँ तो परलोक बिगड़ता है परलोक माँगता हूं तो लोक केसुखों से वंचित होता हूँ।आप अगर दोनों दे देंगे तो आपको कौन पूछने वाला है?---दोनों ही सुख प्रदान कर दिये।

वे जीव बड़े भाग्यशाली हैं जो माया के बदले में भक्ति खरीद करते हैं जिन्हें लोक परलोक से साथी सन्त सतगुरु से सम्पर्क हो गया है जिन्होने सन्तों के साथ लेन देन का व्यवहार जोड़ लिया है उससे परलोक में हिसाब नहीं माँगा जायेगा क्योंकि उन्होने सन्तों के कार्यालय में खाता खोल लिया है यमदूत उनसे हिसाब किताब नहीं माँग सकते। खाता तो एक जगह खोलना ही पड़ेगा यह उसकी अपनी मर्ज़ी है वह सन्तों के कार्यालय में अपना खाता खोले या यमदूतों के कार्यालय में। भाग्यशाली जीव ही सन्त सतगुरु की चरण शरण मेंआते हैं माया देकर भक्ति खरीद करते हैं।प्रभु के सच्चे नाम भक्ति का धन एकत्र करके ये जीवन भी सुखपूर्वक बिताते हैं और अपना लोक परलोक भी सँवार लेते हैं।

महापुरुषों के वचन हैं।

ये दुनियाँ इक ख्वाब है ए दोस्त या अफसाना है।
इसे जो समझे हकीकत वो बड़ा दीवाना है।।
पी के गफलत का नशा बेखबर है अहले जहाँ।
ये दुनियाँ क्या है गाफिलों का इक मयखाना है।।
गौर इस पर भी कभी किया है बैठ कर ।
कि मैं हूँ कौन आया कहाँ से किधर को जाना है।।
रायगाँ है मालिक की बन्दगी बगैर ये ज़िन्दगी।
इसे भूलना मत ये कौले आरिफाना है।।

सन्त महापुरुष संसार की वास्तविकता को दर्शाते हुये वर्णन करते हैं कि ये दुनियाँ इक ख्वाब है,सपना है।संसार की रचना में हमें जो कुछ भी नज़र आता है जो कुछ भी दृष्टिगोचर हो रहा है वह सब सपने की रचना की न्याईं असत्य है उसमें कुछ भी वास्तविकता नहीं है।

ज्यों सपना और पेखना तैसे जग कउ जान।
इनमें कुछ साचो नहीं नानक बिन भगवान।।

नींद में सोया हुआ व्यक्ति कई प्रकार के मनोरम,मनमोहक दृश्य देखता है देखकर प्रसन्न होता है और कभी भयानक या मार्मिक दृश्य देखकर दुःखी भी होता है लेकिन नींद से जाग जाने पर उसकी ये रचना भी कायम नहीं रहती उस रचना से प्राप्त दुःख सुख भी नहीं रहता क्योंकि वह अवस्था तो असत्य थी।

सपनेउं होय भिखारी नृप रंक नाकपति होय।
जागे हानि न लाभ कुछु जिमि प्रपंच तिमि जोय।।

एक भिखारी जो दर दर की भीख माँगने वाला सपने में अगर राजा भी हो जाये और सपने में प्राप्त सुख वैभव को देख कर प्रसन्न होता रहे या कोई राजा सपने में हाथ में भिक्षा पात्र लिये दर दर की भीख माँगता हुआ दुःखी हो रहा हो लेकिन दोनों के नींद से जाग जाने पर कोई अन्तर नहीं पड़ता भिखारी भिखारी ही रहता है राजा राजा ही रहता है उन्हें कुछ भी हानि लाभ नहीं होता है।

एक गरीब व्यक्ति सपने में अमीर हो गया और सपने में ही अपनी कार बेचना चाहता है उस कार का मोल भाव करने लगा खरीदार कह रहा है कि में इसके एक लाख दूँगा लेकिन वह कहता है किडेढ़ लाख लूँगा इसी तकरार में उसकी नींद खुल जाती है देखता

है,न कार है,न खरीदार,न लाख है न डेढ़ लाख।उसने सोचा मैंने बड़ी गल्ती की लाख मिल ही रहा था वह भी गया।दोबारा आँखें बन्द करके कहता है ला एक लाख ही दे दे। न उसे एकलाख ही मिलना है न दो लाख क्योंकि ये तो सपना है।महापुरुष फरमाते हैं कि जो रचना देखने में आती है ये सब सपना है।

मोह निशा जग सोवन हारा। देखहिं स्वपन विविध प्रकारा।।

ये सारा संसार ही मोह की नींद में सो रहा है और विभिन्न प्रकार के स्वपन देख रहा है कोई मान प्रतिष्ठा प्राप्त करने के,कोई सुख ऐश्वर्य के स्वपनदेख रहा है कोई धनी बनने के स्वपन देख रहा है कोई राज्य पदवी को प्राप्त करने के स्वपन देख रहा है। महापुरुष फरमाते हैं कि चाहे कोई झुग्गी झोंपड़ी में रह रहा है या भव्य महलों में, चाहे कोई पैसे पैसे के लिये तरस रहा है या किसी ने धन केअम्बार लगा रखे हों।चाहे कोई कर्ज़दार बनाहुआ है या साहूकार बना हुआ है। हैं ये सब सपने के दृश्य ही।रोज़ाना जो हम नींद करते हैं ये ज़रा सपना छोटा है पाँच छः घन्टे का है आठ नौ घन्टे का है और जो जीवन का सपना है ज़रा लम्बा है पचास साठ वर्ष,अस्सी नब्बे वर्ष का है फर्क इतना ही है बस।हैं दोनों सपने ही।असत्य हैं क्योंकि रोज़ाना की नींद में व्यक्ति जब स्वपन की रचना को देख रहा होता है प्रसन्न या अप्रसन्न हो रहा होता है उस समय ये रचना उसे सत्य प्रतीत होती हैऔर संसार की तरफ से बेखबर होने के कारण दुनियाँ का उसके लिये कोई अस्तित्व नहीं होता वह उसके लिये असत्य होती है और जब इस नींद से जाग कर इन बाहरी नेत्रों से संसार के दृश्य देख रहा है और संसार केकार्य व्यवहार में लग जाता है तो सपने की रचना उसके लिये असत्य हो जाती है लेकिन अन्दर के नेत्र बन्द होने के कारण ये संसार के दृश्य भी सपने ही हैं। इसलिये न ये सत्य है ना वो सत्य है।जीव के पिछले जन्म जो बीत गये हैं क्या वो सपना नही हो गये?इस जन्म के जो वर्ष बीत चुके हैं क्या वो सपना नहीं हो गया?कल जो बीत गया आज वो सपना हो गया है आज जो बीत जायेगा कल सपना हो जायेगा।इसी तरह ये सारे जीवन की कार्यवाही सपना हो जाती है।इसलिये महापुरुष फरमाते हैं कि ये दुनियाँ इकख्वाब है।

एक बार श्री हुज़ूर सतगुरु दाता दयाल जी ने श्री प्रयागधाम में पावन लीला करते हुये ये वचन फरमाये थे।ये सन 1975 की बात है कि श्री गुरु महाराज जी के श्री चरणों में किसी ने एक टोकरे में कुछअसली फल सेब, सन्तरे,आम,अनार आदि और कुछ नकली बनावटी फल भेंट किये।बनावटी फल देखने में बिल्कुल असली प्रतीत होते थे।सत्संग के पश्चात जब लीला करते हुये उन फलों कोअपने प्रेमियों भक्तों की तरफ लुटा रहे थे।संयोगवश वे लगभग सभी फल एक ही प्रेमी के हाथ में आते गये और उन फलों को वह अपनी कमर में लपेटी चादर में रखता गया अन्य प्रेमियों के हाथ में कोई भी फल न आया देखकर श्री गुरुमहाराज जी ने उन प्रेमियों को इशारा कर दिया इशारा पाते ही उन सभी ने मिलकर उससे सभी एकत्रित किये हुये फलों को छीन लिया।तब उस प्रेमी से पूछा कि कुछ हाथ में आया कि नहीं?उसने विनय की कि प्रभो।मिला तो बहुत कुछ था एकत्र भी कर लिया था लेकिन उसे इन सभी ने मुझसे छीन लिया है केवल एक ही फल मेरे पास शेष रह गया है।

महापुरुषों की हर लीला,उनकी हर कार्यवाही जीवों के कल्याण के लिये जीवों को सत्य असत्य का भेद बताने के लिये हुआ करती है। अपनी पावन लीलाओं द्वारा ही जीवों का कल्याण किया करते हैं।उस समय वचन हुये कि प्रेमी जो तूने खा लिया वही तेरा अपना है और जो जोड़ लिया वह सब लोगों का है वो तेरा अपना नहीं हैअर्थात खाने से मतलब ये है कि जो धन(तन,मन,धन) परमार्थ में लगा दे,गुरु सेवा में,भक्ति मे लगा दे वही तेरा अपना है बाकी तो सारा संसार ले ही जायेगा वो तेरा अपना नहीं है।शहद की मक्खी शहद एकत्र करती है जो वह खा लेती है केवल वही उसका है बाकी तो लोग ही तोड़कर ले जाते हैं। उसके हाथ में जो फल बचा था जब उसे उसने खाने का प्रयास किया तो उसे मालूम हुआ के यो तो नकली है मिट्टी का बना हुआ है।उसने विनती की प्रभो जो मेरे पास बचा है वह तो नकली फल है असली नहीं है।श्री वचन हुये अगर ये नकली है तो वो सब भी नकली है वो भी असली नहीं जिन्हें तुमअसली समझ रहे हो वह सारा संसार ही नकली है उसमें कुछ भी हकीकत नहीं है सब ख्वाब है सपना है अफसाना है।जैसे सिनेमा घर में सब तस्वीरें चलती फिरती बोलती खाती पीती गाती नाचती प्रतीत होती हैं उसे देखकर लोग हँसते भी हैं आँखों में आँसू भी भर लेते हैं सुखी दुःखी भी होते हैं क्या वो अफसाना असली होता है?वो केवल अफसाना है उसमें वास्तविकता कुछ भी नहीं होती है इसी प्रकार संसार के जो भी कार्य व्यवहार जीव करता है वह सब असत्य है।पढ़ लिख लेना,कुटुम्ब परिवार बढ़ा लेना,संसार के ऐश्वर्य प्राप्त कर लेना सब कार्यवाही ही असत्य है हर आदमी की ज़िन्दगी एक अफसाना ही होती है। ज्यों सपना और पेखना तैसे जग को जान।

इनमें कुछ साचों नहीं नानक बिन भगवान।।

सत्य है तो केवल भगवान,उसका नाम,परमात्मा की भक्ति,प्रेम,सतपुरुषों की संगत,जो सतगुरु की पावन लीला,उनका ध्यान है वो सत्य है क्योंकि यही ध्यान ही,नाम व सेवा की कमाई ही जीव के परलोक में साथ जाती है। सतगुरु सत्य हैं उनकी संगत सत्य है उनकी

रचना लीला सत्य है बाकी सारा संसार असत्य है मिथ्या है ख्वाब है और जो संसार की रचना को हकीकत समझ लेता है वो बड़ा दीवाना है बे समझ है नादान है गफलत में पड़ा हुआ है,सोया हुआ है जो अफसाना को ही हकीकत समझने लगे उसे दीवाना नहीं कहा जाये तो और क्या कहा जायेगा?

एक बार ग्रामीण व्यक्ति पहली बार सिनेमा देखने के लिये गया उसने कभी पहले सिनेमा देखा नहीं था।सिनेमा में जब जंगल का दृश्य आया उस में हाथी भागते हुये नज़र आ रहे थे उसे देखकर वह व्यक्ति ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगा भागो हाथीआ गये हाथीआ गये,हमें कुचल डालेंगे अन्य दर्शकों ने कहा कि बैठ जाओ ये तो सिनेमा हो रहा है ये हाथी असली हाथी थोड़े ही हैं।उस व्यक्ति ने कहा कि ये तो हमको पता है कि सिनेमा हो रहा है इन हाथियों को क्या पता कि सिनेमा हो रहा है। आप उस ग्रामीण की नादानियों पर हँसेंगे केवल वही नादान नहीं है बड़े बड़े विद्वान बुद्धिमान समझदार भी कभी कभी धोखा खा जाते हैं।

बंगाल के एक बहुत बड़े विद्वान प्रतिष्ठित सज्जन पुरुष हुये हैं जिनका नाम था ईश्वरचन्द्र विद्यासागर।एकबार एक नाटकशाला में वो प्रमुखअतिथी थे।नाटक हो रहा था।ईश्वरचन्द्र जी आगे आगे ही बैठे थे।उस नाटक में एक दृश्य दिखाया जा रहा था कि एक व्यक्ति किसी औरत से गहने छीनने और उसे बेइज्ज़त करने का प्रयत्न कर रहा है और वह औरत अपने बचाव के लिये शोर मचा रही है इस दृश्य को देखकर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जी भूल ही गये कि ये केवल नाटक हो रहा है उन्होने अपने पाँव का एक जूता निकाल कर मंच पर फैंक कर उस व्यक्ति को दे मारा।वह जूता उस व्यक्ति ने अपनी तरफआते हुये देखकर अपने हाथ में ले लिया। इतना ही नहीं ईश्वरचन्द्र जी मंच पर कूद गयेऔर दूसरा जूता निकाल कर उस व्यक्ति को मारने लगे।इतने में और लोग एकत्र हो गये उन लोगों ने उनसे कहा कि ये आप क्या कर रहे हैं?तो उन्होंने जवाब दिया के देख नहीं रहे ये व्यक्ति लूट पाट कर रहा है और ये बेचारी कब से सहायता के लिये शोर मचा रही है इसकी सहायता के लिये कोई भी नहीं आ रहा है।तब उन व्यक्तियों ने कहा ये तो नाटक हो रहा है ये सब सचमुच थोड़े ही है।तब उन्हें चेत हुआ कि अरे ये तो नाटक है हम नाहक ही इसे हकीकत समझ बैठे धोखा खा गये।

जब मानव द्वारा रचाये गये नाटक को देख कर बुद्धिमान,विद्वान पुरुष भी भ्रमित हो जाते हैं उसे सत्य समझने लगते हैं धोखा का जाते हैं तो जो परमात्मा द्वारा रचा हुआ संसार का नाटक है जो देखने में अति सुहावना, मनमोहक दिलकश और लुभावना है उसे देखकरअगर संसारी जीव धोखे और भ्रम का शिकार हो जाये इस संसार को सत्य समझ ले तो इसमें कुछ भी आश्चर्य की बात नहीं है।इसीलिये महापुरुषों ने फरमाया कि पी के गफलत का नशा बेखबर है अहले जहाँ।ये दुनियाँ क्या है गाफिलों का इक मयखाना है। गफलत का नशा पीकर एक नहीं दो नहीं सारा संसार ही बेखबर है।मोह की नींद या गफलत के नशे का अर्थ ये होता है कि जैसे नशा किये हुये व्यक्ति को अपनी सुध बुध नहीं रहती होश नहीं रहती असल नकल की पहचान नहीं होती सचझूठ का भले बुरे का ज्ञान नहीं रहता इसी प्रकार ही सारा संसार ही मोह की नींद में सोये हुये हैं संसार को हकीकत समझे हुये हैं अपने आप की उसे पहचान नहीं,कि मैं कौन हूँ कहाँ से आया हूँ किधर जाना है मेरे जीवन का मकसद क्या है उसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है असल क्या है नकल क्या है सच क्या है झूठ क्या है।संसार को ही अपना समझे हुये है कि मै शरीर हूँ शरीर से सम्बन्धित पदार्थ मेरे हैं इत्यादि।यही गफलत और मोह की नींद है इसी में ही पड़ कर जीव अपना सारा जीवन व्यर्थ गँवा रहे हैं।संसार में अगर कोई जागे हुये हैं तो वे केवल सन्त महापुरुष या उनकी शरण में आये हुये आप जैसे सौभाग्यशाली जीव।

एह जग जामिनि जागिहिं योगी । परमार्थ प्रपंच वियोगी।।
जानिय तबहिं जीव जग जागा।जब सब विषय विलास बैरागा।।
होये विवेक मोह भ्रम भागा।तब रघुनाथ चरण अनुरागा।।
सखा परम परमारथ ऐहु। मन कर्म वचन राम पद नेहू।।

इस संसार में अगर कोई जागा हुआ है तो वह केवल आप जैसे सौभाग्य शाली गुरुमुख जो परमार्थ की लगन रखने वाले या जो संसार से विरक्त हो गये योगी जन हैं।क्योंकि जीव तो तभी जागा हुआ जानना चाहिये जब उसे संसार के सब विषयों से वैराग हो जाये गफलत की नींद का अर्थ ही ये है कि अपने निजी स्वरूप आत्मा को भूलकर या अपने जीवन के असली मकसद को छोड़कर केवल शरीर और शरीर से सम्बन्धित धन पदार्थोंऔर सांसारिक ऐश्वर्यों को अपने जीवन का मकसद समझ लेनाऔर उन्हें प्राप्त करने में ही अपना अनमोल जीवन व्यर्थ गँवा देना ही गफलत और नींद है और जिसे ये विवेक हो जाये कि मेरे जीवन का असली मकसद प्रभु का प्यार प्राप्त करना है और उसे प्राप्त करने के यत्न में लग जाना ही जाग जाना है। क्योंकि कहा है-

सखा परमार्थ ऐहू।मन कर्म वचन राम पद नेहू। सबसे बड़ा परमार्थ यही है कि भगवान के चरणों मे प्रेम हो जाये। जीव को जागृति,विवेक,समझबूझ या ज्ञान तभी प्राप्त हो सकता है जब उसे प्रभु की कृपा से सतपुरुषों की संगत प्राप्त हो जाये उनका सत्संग मिल जाये। बिन सत्संग विवेक न होई। राम कृपा बिन सुलभ न सोई।।सतसंग के बिना जीव को

विवेक नहीं होता और सतसंग की प्राप्ति प्रभु कृपा से ही होती है।हमेंशा से ही हर युग युग में समय समय पर सन्त महापुरुषों काअवतार संसार में मोह की नींद में सोये हुये जीवों को जगाने के लिये ही होता है वे जब जब भी सन्त महापुरुष संसार में आते हैं प्रकट होते हैं जीवों को इस गफलत से जगाते हैं कि उठो सवेरा हो गया है जागो।क्यों नींद में सोये हुये अपने कीमती अनमोल जन्म को व्यर्थ गँवा रहे हो।उठो और अपने कार्य में लग जाओ ऐसा न हो जैसे पहले भी तुम्हारे कई जन्म यूँ ही गफलत में पड़ कर व्यतीत हो चुके हैं ये जन्म भी न यूँ ही व्यर्थ चला जाये।सन्तमहापुरुष जीव को जगायें तभी जीव जाग सकता है क्योंकि सारा संसार तो स्वंय सो रहा है सोया हआ किसी सोये को कैसे जगा सकता है? जागा हुआ ही सोये को जगा सकता है। सन्त महापुरुष जागे हुये होते हैं वे ही जीवों को जगा सकते हैं और जगाते हैं आवाज़ लगाते हैं।जो उनकी आवाज़ को सुनकर जाग जाते हैं वो अपना काम बना लेते हैं।

सन्त दादू दयाल जी के जीवन गाथा में एक प्रसंग मिलता है जब सन्त दादू दयाल जी दूकान का कार्य करते थे एक बार उनके श्री गुरुमहाराज जी दूकान पर आये बाहर से आवाज़ लगाई।दादू।श्री दादूदयाल जी अपने बही खाते में व्यस्त थे।वर्षा हो रही थी वर्षा की आवाज़ की वजह से कुछ कार्य में व्यस्त रहने के कारण गुरुदेव द्वारा दी गई आवाज़ों को श्री दादूदयाल जी ने न सुना। कुछ देर गुरुदेव को इन्तज़ार करते बीत गई तो दादू दयाल जी ने थोड़ी देर बाद निगाह उठाई तो सामने गुरुदेव को पानी में भींगते हुए दुकान के बाहर खड़े पाया तो एकदम उठे दौड़कर दण्डवत वन्दना की। प्रार्थना करके अन्दर ले आये और क्षमा माँगने लगे।विनय की प्रभो आप अन्दर क्यों न आ गये?और न ही आवाज़ लगाई।आपको बाहर इन्तज़ार करना पड़ा आपको कष्ट हुआ इसके लिये क्षमा कर देना। गुरुदेव ने कहा- दादू।मुझे तो थोड़ी देर इन्तज़ार करनी पड़ी है और जो ईश्वर तेरी कईजन्मों से इन्तज़ार कर रहा है कि कब दादू जागे और मेरे पास आये।उस इन्तज़ार का क्या होगा? कहते हैं उसी समय सन्त दादूदयाल जी दुकान का कार्य छोड़कर प्रभु भजन भक्ति में लीन हो गये।जाग गये।सतपुरुष ही अपनी दया से जीवों को जगाते हैं वे जीव आप जैसे सौभाग्यशाली है जो महापुरुषों की शरण में आ गये हैं उनके सतसंग द्वारा उनके वचनों द्वारा जो जाग करके अपने निजी कार्य आत्मा के कल्याण में लग गये हैं और अपना जीवन सफल बना रहे हैं।

हमारा सबका कर्तव्य है कि महापुरुषों के वचनों के अनुसार जो हमारे जीव कल्याण के लिये ये साधन बनाये हैं उनपर चलते हुए मोह की नींद को त्याग कर जागकर अपना काम जो आत्म कल्याण का निजी कार्य है श्री आरती पूजा सतसंग सेवा सुमरिण और भजन ध्यान करते हुये अपने जीवन को सफल बनाना है और परलोक भी सँवारना है।

चार प्रकार के जिज्ञासु

श्री मद्भगवदगीता के सातवें अध्याय के सोलहवें श्लोक में भगवान श्री कृष्ण जी अर्जुन को उपदेश करते हुये वर्णन करते हैं।

याद करते हैं मुझे ये चार बहरे आफियत।
गम रसीदा, तालिबे दुनियां व दीनों मार्फत।।
सादिके आशिक मेरा मुझमें वासिल हो गया।
मैं हूँ उसका प्यारा ऐ अर्जुन वह मेरा प्यारा हो गया।।
सब हैं अच्छे हैं वले आरिफ मेरी रूहे रवाँ।।
मुझमें मिलकर मुझको पाता है बे नामों निशाँ।।

फरमाते हैं कि ऐ अर्जुन चार प्रकार के भक्त मुझे याद करते हैं मेरा सुमिरण करते हैं भजन करते हैं। कौन कौन से चार हैं? वे ये हैं।

1.गम रसीदा, 2.तालिबे दुनियाँ, 3.दीनो मार्फत, 4.आरिफ।अर्थात आर्त, अर्थार्थी,जिज्ञासु और ज्ञानी।गम रसीदा या आर्त भक्त उन्हें कहा जाता है जो किसी शारीरिक या मानसिक सन्ताप या विपत्ति आने पर याद करते हैं। किसी शत्रु भय से,रोग या अपमान के समय या आततायियों या किसी हिंस्र जानवरों से घबरा कर उससे छुटकारा पाने के लिये पूर्ण विश्वास के साथ अटूट श्रद्धा से भगवान को याद करते हैं। भगवान का भजन करते हैं उन्हें गम रसीदा या आर्त भक्त कहा गया है।आर्त भक्तों में गजराज और द्रोपदी का नाम लिया जा सकता है।कहते हैं एक बार गजराज गन्डक नदी में पानी पी रहा था उस समय एक ग्राह ने उसे पकड़ लिया गजराज ने उससे छूटने का भरसक प्रयत्न किया जब वह अपनी पूरी ताकत लगा चुका और ग्राह के पंजे से छूट न पाया आखिरकार दुःखी होकर उसने पानी में से एक कमल का फूल तोड़ कर भगवान की तरफ मुँह करके भगवान को बड़े आर्त स्वर में पुकारा उसकी आर्त पुकार सुनकर भगवान ने ग्राह को मार कर गजराज को उसके पँजे से छुड़ाकर उसे आज़ाद कराया। जब कोरवों की सभा में किसी से भी रक्षा पाने का कोई भी लक्षण नदेखकर द्रोपदी ने अपने को सर्वथा असहाय समझकर जब अपने परमसहायक परमात्मा श्री कृष्ण को पुकारा तो उसकी आर्त पुकार सुनकर कौरवों की दानवी सभा में भगवान का वस्त्रावतार हो गया। इस प्रकार जो किसी रोग या संकट से बचने के लिये दुःखी होकर भगवान को पुकारते हैं वे दुःखी भक्त कहलाते हैं।

दूसरे प्रकार के भक्त होते हैं अर्थाथी।तालिबे दुनियाँ।जो सांसारिक सुखों की कामना से धन,पुत्र,प्रतिष्ठा,राज्य वैभव या इस लोक और परलोक के सुखों या स्वर्ग के सुखों की प्राप्ति के लिये भगवान का भजन करते हैं वे अर्थार्थी भक्त कहलाते हैं।सुग्रीव,विभिषण,सुदामा आदि अर्थार्थी भक्त माने जाते हैं। इनमें प्रधानता से ध्रुव का नाम लिया जा सकता है।स्वयंम्भु मनु के पुत्र राजा उत्तानपाद थे। राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं सुनिति व सुरुचि।सुनीति से ध्रुव का जन्म हुआ सुरुचि से उत्तम का।उत्तानपाद सुरुचि से अधिक प्रेम रखते थे।बालक ध्रुव जब अपने पिता की गोद में बैठने लगा तब सुरुचि ने उसका तिरस्कार करके उसे उतार दिया और कहा तूअभागा है जो तेरा जन्म सुनिति की कोख से हुआ है राज्य सिंहासन पर बैठना होता तो मेरी कोख से जन्म लेता।जा श्रीहरि की अराधना कर तभी तेरा मनोरथ सिद्ध होगा।विमाता केभर्त्सना पूर्ण वचन सुनकर(व्यवहार से)उसे बड़ा दुःख हुआ।वह अपनी माता के पास गया जा कर सारा हाल कह सुनाया। सुनिति ने कहा बेटा तेरी माता सुरुचि ने ठीक ही कहा है।भगवान की आराधना से ही तेरा मनोरथ पूर्ण होगा। माता की बात सुनकर राज्य प्राप्ति के उद्देश्य से बालक ध्रुव भगवान का भजन करने के लिये वन की तरफ निकल पड़ा। रास्ते में उन्हें नारद जी मिले।नारद जी ने उन्हें बहुत समझाया।राज्य दिलाने की बात कही वापिस लौटाने की बहुत चेष्टा की परन्तु वह अपने निश्चय पर अटल रहा। तब नारद जी ने उसे ''ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय'' इस द्वादसाक्षर मन्त्र का और चतुर्भुज भगवान के ध्यान का उपदेश देकर उसे आशीर्वाद दिया।नारद जी से आशीर्वाद प्राप्त कर बालक ध्रुव कठोर साधनामें लीन हो गये। उसकी कठोर तपस्या साधना से प्रसन्न होकर भगवान ने उन्हे अपने दर्शन देकर उन्हें कृतार्थ कियाऔर राज्य प्राप्ति का वरदान दिया ये अर्थार्थी भक्त कहे जाते हैं।

तीसरे प्रकार के भक्त जिज्ञासु कहलाते हैं जो धन पदार्थों की,सांसारिक वस्तुओं और प्रतिष्ठा आदि की कामना नहीं करते और न ही किसी रोग व संकट से घबराते हैं वह केवल भगवान को तत्व से जानना चाहते हैंअर्थात मोक्ष की कामना करते हैं। इसलिये वे जिज्ञासु भक्त कहलाते हैं। जिज्ञासु भक्तों में परीक्षित आदि का नाम गिना जाता है। उनमें से उद्धव का नाम प्रधानता से लिया जा सकता है। श्री मद्भागवत के एकादश सकन्ध के अध्याय सात से तीस तक भगवान श्री कृष्ण ने उद्धव जी को बड़ा ही ज्ञान का उपदेश दिया है जो उद्धव गीता के नाम से प्रसिद्ध है।चौथे प्रकार के भक्त ज्ञानी,आरिफ अर्थात सादिके आशिक,अनन्य प्रेमी भक्त कहलाते हैं। आरिफ मेरी रूहे रवां। अनन्य भक्त वो हैं जो परमात्मा को तत्व से जान चुके हैं जिसकी दृष्टि में एक परमात्मा ही रह गये हैं परमात्मा के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं और इस प्रकार से परमात्मा को प्राप्त कर लेने से जिनकी समस्त कामनायें समाप्त हो चुकी हैंऔर वह सहज भाव से निरन्तर भजन करते हैं वे ज्ञानी भक्त हैं। ज्ञानियों में शुकदेव जी,सनकादि,नारदादि प्रसिद्ध हैं।बालक प्रह्लाद भी ज्ञानी भक्त कहे जाते हैं।जिन्हें माता के गर्भ में ही देवर्षि नारद जी द्वारा उपदेश प्राप्त हो गया था। ये दैत्यराज हिरण्यकशिपु के पुत्र थे। हिरण्यकशिपु भगवान विष्णु से द्वेष रखता था और प्रह्लाद भगवान के भक्त थे। इससे हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को बहुत सताया था, साँपों से डसवाया,समुन्द्र में फिंकवाया,परन्तु भगवान इन्हें बचाते रहे। इनके लिये भगवान ने नरसिंह रूप धारण कियाऔर हिरण्यकशिपु का वध किया। किसी भी भय से न डरना और जलते खम्भे में भी भगवान की अनुभूति करना बालक प्रह्लाद की ज्ञान की स्थिति का ही सूचक है।

भगवान श्री कृष्ण फरमाते हैं कि मुझपर दृढ़ विश्वास करके किसी भी प्रकार से मेरा भजन करने वाले यद्यपि सारे ही उत्तम हैं तथापि अर्थार्थी से आर्त उत्तम हैं आर्त की अपेक्षा जिज्ञासु और जिज्ञासु की अपेक्षा ज्ञानी उत्तम हैं। क्योंकि अर्थार्थी सांसारिक भोगों में सुख समझकर उनकी कामना से भगवान का भजन करते हैं वे भगवान के प्रभाव को पूर्णतया नहीं जानते इसी से भगवान में उनका प्रेम पूर्ण नहीं।अर्थार्थी से आर्त इसलिये श्रेष्ठ हैं कि सुख भोग के लिये वे भगवान से कुछ नहीं माँगते।उनका प्रेम शरीर के सुख और मान बड़ाई में कुछ बँटा हुआ है।इसलिये वे घोर संकट पड़ने पर ही भगवान को पुकारते हैं।जिज्ञासु इनसे श्रेष्ठ इसलिये हैं कि जिज्ञासु न तो सांसारिक सुखों की कामना करता है ना ही किसी लौकिक विपत्ति से घबराता है वो तो केवल भगवान को तत्व से जानना चाहता है। संसार के भोगों में उसकी आसक्ति नहीं है।परन्तु मोक्ष की कामना बनी हुई है।इसलिये जिज्ञासु का प्रेम आर्त औरअर्थार्थी से कुछ विलक्षण है।परन्तु ज्ञानी से कुछ न्यून। ज्ञानी सबसे उत्तम इसलिये है कि भगवान को तत्व से जानते हैं और बिना किसी अपेक्षा के निरन्तर भजन में लीन रहते हैं। इसलिये वे सबसे उत्तम हैं।भगवान कहते हैं कि ये सभी अपनी अपनी जगह पर उत्तम हैं मुझे प्रिय हैं लेकिन जो मेरा अनन्य प्रेमी है सादिके आशिक है वहाँ तक इनकी पहुँच नहीं है क्योंकि वह मुझे अत्यन्त प्रिय है। अनन्य प्रेमी को सर्वोत्तम बतलाते हुये भगवान श्री कृष्ण उद्धव को फरमाते हैं।

उद्धव प्रेमी प्राण हमारे।।
तैसे प्रिय ब्रह्मा नहीं शंकर जैसे प्रेमी प्यारे।।
बलदाऊ सम अति प्रिय भ्राता। लक्ष्मी मम अर्धांगी।

तिनते अधिक प्रेमी मोहे भाये जो मम पद अनुरागी।।
हीन कामना प्रेमी का चित सब ठाईं मोहे देखे।
न काहू से वैर न प्रीति सब में मोहे कर लेखे।।
जिन्हे भरोसा सदा हमारा , संग रहौं नित तिन के।।
पीछे पीछे फिरूँ हमेशा उद्धव मैं निज प्रेमिन के।।
सब विधी मोहे अर्पण प्रेमी सब विधी मोहे अपनावे।।
सत्य कहूँ उत्तम ब्रह्म सुख को दास हमारो पावे।।

उद्धव जिज्ञासु भक्त हैं भगवान को तत्व से जानना चाहते हैं लेकिन भगवान उन्हें प्रेमा भक्ति की श्रेष्ठता और उत्तमता बतलाते हैं कि उद्धव प्रेमी भक्त जो हैं वो मेरे प्राण हैं। ब्रह्मा और शंकर,बलदाऊ जैसे अतिप्रिय भ्राताः और लक्ष्मी भी मुझे इतनी प्रिय नहीं जितने मुझे प्रेमी प्यारे हैं क्योंकि उन्हें केवल मेरा ही भरोसा और सहारा है संसार की कामनाओं से वह सर्वथा मुक्त है सब में वह मुझे ही देखता है किसी से वैर या मोह नहीं रखता। सब प्रकार से ही प्रेमी मुझे अर्पित है सत्य कहता हूँ उद्धव जो उत्तम ब्रह्म सुख है वह मेरा दास ही प्राप्त करता है प्रेमी भक्त सदा मुझमें समाया रहता है। सदा उनके अंग संग रहता हूं। मैं ऐसे प्रेमी भक्त के पीछे पीछे फिरा करता हूँ।

कबीर मन निर्मल भया जैसे गंगा नीर।
पाछे लागा हरि फिरे कहत कबीर कबीर।।

प्रेमी भक्तों में बाबा फरीद जी,महाप्रभु चैतन्य,मीरां,शबरी का नाम लिया जा सकता है।बाबा फरीद जी एक बार भजन में लीन थे कमरे में उन्होंने एकाएक प्रकाश देखा और वहाँ एक फरिश्ता प्रकट हुआ उस फरिश्ते के हाथ में एक पुस्तक थी। उस फरिश्ते के दर्शन करके बाबा फरीद जी ने पूछा कि आप कौन हैं और मुझे आपने दर्शन देने की किसलिये कृपा की है आप के हाथ में ये पुस्तक कैसी है?उस फरिश्ते ने कहा कि परमात्मा के हुक्म से संसार में विचरण करता हूँ और जो भगवान के प्यारे प्रेमी भक्त हैं उनका इस पुस्तक में नाम लिखा करता हूँ।बाबा फरीद जी ने कहा कि इस पुस्तक में मेरा भी नाम लिखा है या नहीं?उस फरिश्ते ने कहा कि आपका इस पुस्तक में नाम नहीं है तो बाबा फरीद जी ने कहा कि परमात्मा से पूछना कि मेरा नाम अपने भक्तों की सूचि में क्यों नहीं लिखा?मैं भी तो आपका भजन करता हूँ।कृप्या ये पूछ कर मुझे बताना।अगले दिन फरिश्ता फिर प्रकट हुआ तो उसने कहा जो भगवान का भजन करते हैं उन भक्तों के नाम इस पुस्तक में हैं उसमें आपका नाम नहीं है लेकिन जो आज पुस्तक मेरे पास है ये वो पुस्तक है इसमें उन भक्तों के नाम हैं परमात्मा स्वयं जिनके नाम की माला जपता है।इस पुस्तक में आपका नाम सर्वोपरि है जिसमें परमात्मा आपके नाम का भजन करते हैं।

इसलिये भगवान फरमाते हैं सादिके आशिक मेरा मुझमें वासिल हो गया चारों प्रकार के भक्तों में श्रेष्ठ उत्तम प्रेमी भक्त को कहा गया है क्योंकि प्रेमी भक्त भगवान से न तो सांसारिक पदार्थ माँगता है न विपत्तियों से घबराता है ना ही उसे मोक्ष की कामना है नाही तत्व से जानना चाहता है वह तो केवल भगवान से भगवान को ही माँगता है।

जिन्हों को इश्क सादिक है वो कब फरियाद करते हैं।
लबों पर मोहरे खामोशी दिलों में याद करते हैं।।

पहली बात तो सादिके आशिक अर्थात अनन्य प्रेमी भगवान से कुछ भी फरियाद नहीं करते अगर करते भी हैं तो केवल भगवान से भगवान की ही माँग करते हैं अगर वह प्रार्थना या विनय करता भी है केवल यही कि कोई तुझसे मालो ज़र माँगता है। बड़ा रूतबा कोई बशर माँगता है।।
कोई उमदा रहने को घर मांगता है।कोई राज पदवी का वर माँगता है।।
मगर मैं तुम से तुझको ही माँगता हूँ।फक्त नज़रे रहमत तेरी माँगता हूं।।

एक बार हमारे परम आराध्यदेव,करूणा और दया के सागर सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले श्री परमहँस दयाल जी श्री प्रथम पादशाही जी महाराज टेरी में विराजमान थे। गुरुमुख प्रेमी और श्रद्धालु जन श्री चरणों में बैठकर श्री दर्शन के अमृत रस का पान कर रहेथे।एक प्रेमी ने बड़ी श्रद्धा प्रेम से आत्म विभोर होकर श्री गुरुमहाराज जी की स्तुति में भजन गाया। सभी प्रेमी भी साथ साथ गाकर मस्ती में झूम रहे थे।

ऐ मुजस्सम पाक उल्फत ऐ मुजस्सम रोशनी।
ऐ मुजस्सम मेहरो बख्शिश ऐ मुजस्सम बरतरी।।
लगा रहता है लाखों का मजमा आस्ताने पर तेरे।
हैं अकीदतमन्द आते सिर झुकाने के लिये।।
कुछ सवाली बन के अपने दिल में कुछ खाहिश लिये।।
माँगते तुझसे मुरादें सबको मुँह माँगी मिलें।।
जाहो हशमत दुनियां की तुझसे है कोई माँगता।
ताजो तख्तो मुल्को इज्ज़त और कोई चाहता।।

और कोई इल्मो हुनर का रहता है तालिब सदा।
दूसरा कोई है जो दौलत की देवी पर फिदा।।
कोई कुछ चाहता और कोई कुछ है माँगता।
सब के दिल में खाहिशों का एक तूफाँ है बपा।।
हाजतें सब की मिटाता है तू है हाजत रवा।
आरजूएं सब की तेरे दर से होती है बरा।।

श्रद्धा भाव से प्रेम से भरे इस शब्द को सुनकर एकाएक मेहरऔर बख्शिश के समुन्द्र में लहरें उठने लगीं।श्री गुरुमहाराज जी अतिप्रसन्न होकर फरमाने लगे।

माँगो प्रेमी क्या माँगते हो। जो माँगना हो सो माँग ही लो।
वरदान देने हम आये हैं जो लेना हो सो शीघ्र कहो।।
हाँ माँग लो जिस वस्तु की इच्छा हो अब बिल्कुल न संकोच करो।
अभिलाषा पूरी कर देंगे जो भी मन में अभिलाषा हो।
अब माँग करो सो पाओगे कोई चाह न बाकी रहने दो।
मन वाँछित वर देते हैं लो वान्छा न बाकी रहने दो।।

फरमाने लगे जिस किसी को जिस जिस वस्तु की इच्छा हो कतार में खड़े हो जाओ बारी बारी से सबको मनोवांछित वर देंगे।सब ने देखा कि कृपा के सागर में लहरें उठ रही हैं। भगवान अति प्रसन्न हैं वर देने को स्वयं फरमा रहे हैं तो सभी अपनी अपनी भावना व इच्छानुसार वर माँगने लगे। आज तक तो यही सुना था कि जिस किसी ने किसी देवी देवता की कठिन साधना की और उन्हें प्रसन्न किया तो उस देवी देवता ने उसे मनवाँछित वर दिया। केवल उसे ही एक वरदान दिया। ऐसा उदाहरण आज तक नहीं सुना या पढ़ा कि सबको कतार में खड़े करके बारी बारी से सभी को मनवाँछित वरदान दिया हो।

किसी ने सांसारिक सुखों की कामना की किसी ने धन की किसी ने सन्तान की प्राप्ति का वर माँगा किसी नेअनहद शब्द सुनने की किसी ने अजपाजाप की सिद्धी की किसी ने घट में परमात्मा के दर्शन की अभिलाषा ज़ाहिर की सभी को श्री गुरुमहाराज जी तथास्तु करते रहे और सबको आशीर्वाद देकर सभी की झोलियाँ भर दी।जब सब अपना अपना मनभावन वर प्राप्त कर चुके तो हमारे आराध्यदेव श्री दूसरी पातशाही जी महाराज उस समय एक कौने में विराजमान इस पावन लीला का आनन्द ले रहे थे। श्री गुरुमहाराज जी ने फरमाया आप भी कुछ माँगिये। आप क्यों नहीं मांगते हैं? श्री दूसरी पातशाही जी महाराज जी ने हाथ जोड़ कर विनय की।अपना उद्धेश्य प्रकट करने के लिये यह रूबाई पढ़ी।

न जाहो - जलाले - किब्रिया मे ख्वाहेम।
न दर्द तुरा हेच दवा में ख्वाहेम ।।
हरकस ज़ोरे तो मतलबे में ख्वाहेद।।
मा खस्ता दिलां अज़ तो तुरा में ख्वाहेम।।

अर्थ-हम न वैभव चाहते हैं,नही मान-सम्मान एवं उच्च पद चाहते हैं तथा न ही हम आपसे किसी दर्द की दवा चाहते हैं।प्रत्येक व्यक्ति तो आपसे कोई न कोई स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है, परन्तु हम प्रेमी आपसे केवल आपको ही चाहते हैं।श्री महाराज जी यह सुन कर मुस्कराये और फरमाया अच्छी बात है। वस्तुतः भक्ति-परमार्थ में सबसे उत्तम एवं श्रेष्ठ माँग भी यही है और सच्चे प्रेमी की ऐसी ही भावना हुआ करती है और होनी भी चाहिये। जिस की जैसी भावना होती है उसी के अनूरूप उसे फल की प्राप्ति होती है।इन श्री वचनों को श्रवण कर तथा श्री परमहँस दयाल जी के दिव्य ज्योतिर्मय स्वरूप के दर्शन करते हुये उन्होने अपने घट में एक दिव्य तेज आलोकित होते हुये पाया।

जो सच्चा प्रेमी होता है उसे संसार की किसी भी वस्तु की इच्छा अथवा कामना नहीं होती। उसे वस्तुतः सही मार्ग का पता चल जाता है, इसलिये वह मालिक से केवल मालिक को ही माँगता है क्योंकि जब मालिक ही उसका अपना बन गया तो उसकी दासियाँ(ऋद्धि,सिद्धिआदि) स्वयमेव उस सच्चे प्रेमी की सेवा करने लगती हैं।जिस हृदय में मालिक का निवास हो गया, वहाँ कमी किस बात की रह गई?ध्यान,समाधि, साधन,संयम आदि सब उसी में समा गये।

हम अति सौभाग्यशाली है जो हमें, सबकी मुँह माँगी मुरादें पूरी करने वाले श्री परमहँस दयाल जी की चरण शरण और ये श्री आनन्दपुर दरबार मिला जहाँ जो भी सवाली आया उसकी मुरादें पूरी होती हैं।

खुदा की रहमत के तो चन्द औकात होते हैं।।
मगर ये वो दर है जहाँ हर वक्त रहमत बरसती है।।

सतगुरु का दर ये वो दर है जहाँ हर वक्त बख्शिश के भण्डार खुले हुये हैं केवल माँगने का सलीका होना चाहिये।

दर्रे करीम से क्या नहीं मिलता बन्दों को।
लेकिन माँगने का सलीका तो हो।।

माँगने का सलीका यही है कि हमें मालिक सतगुरु से संसार की वस्तुओं की कामना नहीं करनी है और ना ही किसी विपत्ति में घबरा कर उन्हें कष्ट देना है यहाँ तक कि मोक्ष की कामना भी नहीं होना चाहिये हमें तो केवल भगवान से भगवान को ही माँगना है। उनके चरणों की प्रेमाभक्ति की माँग करनी है ताकि हमारा भी नाम उनके प्रेमी भक्तों की सूची में आ जाये।जिस से ये जन्म भी सुधर जाये और परलोक भी सँवर जाये।

मृत्यु अवश्यंभावी है

महापुरुषों के पावन वचन है।

हमेशा के लिये रहना नहीं इस दारे फानी में।।
कुछ अच्छे काम कर जा चार दिन की ज़िन्दगानी में।।
बहा ले जायेगा इक दिन दरिया-ए-फना सबको।
रुकावट आ नहीं सकती इसकी रवानी में।।
क्याम इस जा नहीं सब कूच कर जायेंगे दुनियाँ से।
कोई बचपन कोई पीरी कोई एहदे जवानी में।।

सन्त महापुरुष इस नश्वर संसार की वास्तविकता को समझाते हुये फरमाते हैं इस नाशवान संसार में जीव को सदा नहीं रहना है। इसलिये इन्सान का कर्तव्य है कि जितने दिन की ज़िन्दगानी मिली है उसमें कुछ नेक कर्म कर ले क्योंकि मौत के दरिया ने इक दिन सबको बहा ले जाना है ये मौत का दरिया दिन रात चौबीस घन्टे अनवरत बह रहा है यह कभी थमता नहींऔर नाही कभी थमेगा इसलिये इस दुनियाँ में किसी को भी क्याम नहीं है कायम नहीं रहना है फिर जीव का यहां से कूच करने का कोई समय भी निश्चित नहीं है कि जीव बुढ़ापे में ही या पूरी ज़िन्दगी गुज़ार कर ही इस संसार से जायेगा। नहीं मौत के लिये कोई भी समय नहीं है। मौत उमर नहीं देखती। हम अपनी आँखों से सदा देख रहे हैं कि कोई बचपन में ही यहाँ से चला गया कोई जवानी में और कोई बुढ़ापे में इस संसार से कूच कर गया।मौत केलिये छोटा,बड़ा,जवान,बूढ़ा सब बराबर है मौत कब देखती है वक्त पीरी और जवानी का।सन्त धनी धर्मदास जी भी शरीर की क्षणभंगुरता के विषय में फरमाते हैं कि--टूटे घड़े दे पानी वांगों उमर बन्दे दी फानी।।

नदी किनारे दा रुख जैसा झट पल दी ज़िन्दगानी।।
बन्दा आखे मैं नित जीसाँ फिरदा मस्त अभिमानी।।
धर्मदास रहना नही इस जा ए नगरी बेगानी।।

फरमाते हैं कि ये मानव शरीर उसी प्रकार क्षणभंगुर है जिस प्रकार टूटे हुये घड़े में पानी अधिक देर तक नहीं ठहर सकताऔर नदी के किनारे पर उगा हुआ वृक्ष कुछ ही पल का मेहमान होता है न जाने कब बाढ़ आ जाये और वृक्ष को उखाड़ कर फैंक दे।इसी प्रकार यह जीवन भी पानी के बुलबुले की न्याईं कुछ ही घड़ी का है। परन्तु मनुष्य नासमझी के कारण व गफलत के कारण यही समझता है कि मै हमेंशा जीवित रहूँगा। सन्त धर्म दास जी ये फरमाते हैं कि ये तेरी भूल है इस जगत में सदा नहीं रहना है क्योंकि ये नगरी बेगानी है इस बेगानी नगरी से कभी न कभी जाना ही पड़ेगा।इस नश्वर संसार में जिसने भी जन्म लिया उसकी मृत्यु अवश्य है हर एकखिले हुये पुष्प को मुरझाना ही है मृत्यु केचंगुल से न कोई बचा है न बचसकेगा। इस सृष्टि में हज़ारों क्या लाखों करोड़ों एकसे एक बढ़कर प्रतिष्ठानवान ऐश्वर्यशाली,धनवान हुये कितने ही प्रसिद्ध महान व्यक्ति हुये कितने ही बलवान रावण और सिकन्दर जैसे शूरवीर हुये जिन्होने अपने बाहुबल की धाक विश्व भर में जमा दी थी परन्तु कुदरत केअटल नियम के आगे सब को झुकना पड़ा।जो जन्मा है वह मरेगाअवश्य चाहे अभी चाहे कल या दस साल बाद बीस साल बाद या सौ साल बाद।यह भौतिक शरीर तो जायेगा ही संसार रूपी सराय में अपना स्थाईआवास मान बैठना सख्त गलती और नादानी है।जब अन्त में खाक में मिलना ही है तो जीव फिर निरर्थक ही गर्व गुमान करता है इन्सान अपने जीवन काल में अनेक प्रकार के मनसूबे बाँधता है ज़मीनआसमान एक करने की कोशिश करता है।सांसारिक पदार्थों को प्राप्त करने में,धन दौलत एकत्र करने में,मान इज़्ज़त के पीछे दिन रात एक कर देता है लेकिन जब अन्त काल आता है तो उसका सारा धन सारी प्रतिष्ठा धरी की धरी रह जाती है सारा जीवन जो इन वस्तुओं को प्राप्त करने लगाया था उनमें से कोई भी वस्तु साथ नहीं जाती।

न दौलत साथ जायेगी न इज़्ज़त साथ जायेगी।।
न शौकत साथ जायेगी न हशमत साथ जायेगी।।
अगर कुछ साथ जायेंगे तो वो अफआल हैं तेरे।।
जो तेरे काम आयेंगे वो नेक आमाल हैं तेरे।।

जीव के साथ केवल किये हुये नेक व शुभ कर्म ही साथ जाते हैं। मालिक की दरगाह में वही काम आते हैं।नेक कर्म क्या हैं।मालिक की भक्ति, नाम का सुमिरण, अपने इष्टदेव सन्त सतगुरु का ध्यान उनके पावन चरणों का निश्चल प्यार। ये जीव का साथ निभाने वाले हैं। अन्त मता साः गता। के नियम अनुसार जीव अपने जीवन काल में जैसे कर्म करता है जिस जिस का सुमिरण करता है। जिस संगत सोहबत में रहता है अन्तिम समय

में उसी का ध्यान आता है। उसी ध्यान के फलस्वरूप उस की गति होती है। अगर जीव का ध्यान अन्तिम समय में सांसारिक पदार्थों का रहा तो उसे नीच योनियों का शिकार होना पड़ता है लेकिन जो सौभाग्यशाली जीवअपने जीवन में नाम की कमाई,सेवा सुमिरण ध्यान इन सत्कर्मों में समय बिताते हैं उन्हे अन्तिम समय में भी अपने इष्टदेव का ध्यान आता है जिसके फल स्वरूप वह सीधे अपने मालिक प्रभु के धाम में समा जाते हैं।शाश्वतआनन्द को प्राप्त करते हैं सही अर्थों में अपने जीवन को सकार्थ करते हैं।

जिन्ही नाम ध्याया गये मसकत घाल।नानक ते मुख उजले केति छुटि नाल।

सतपुरुष श्री गुरुनानक देव जी फरमाते हैं कि जिस जिस ने भी मालिक के नाम की कमाई की नाम से लिव लगाई वे मालिक के दरबार में उज्जवल मुख हो कर जाते हैं।संसार से जाना तो सभी को है केवल जाने जाने में अन्तर होता है कोई तो अपनेअशुभ कर्मों के कारण चौरासी में ढकेल दिये जाते हैं और कोई भाग्यशाली मालिक की भक्ति करके मालिक के दरबार में सुर्खुरू होकर जाते हैं वहाँ मान इज़्ज़त पाते हैं।सेवक पावे दरगाह मान।-(आज)इसलिये हम सबका कर्तव्य है कि अपने जीवन के अनमोल समय को संसार के मोह से हटाकर मालिक के चरणों में प्यार बढ़ायें। सांसारिक धन दौलत को एकत्र करने की बजाय भक्ति धन को एकत्र करें और सच्ची मान बड़ाई प्राप्त करके अपने जीवन को सफल बनायें।

मानुष जन्म की विशेषता

हर आदमी की सबसे प्यारी दौलत उसकी अपनी ज़िन्दगी हुआ करती है। निसन्देह आम संसारी जीव का मोह,प्यार व मुहब्बत अपने बच्चों से, घर परिवार से मित्र सम्बन्धियों से होता है।परिश्रम व मेहनत से कमाये हुये धन से भी उसका बहुत लगाव होता है। लेकिन इन सभी पदार्थों की तुलना में उसे अपना जीवन अधिक प्रिय होता है।उदाहरण के तौर पर दुर्भाग्य वश किसी के घर को आग लग जाये या भूकम्प आ रहा हो तो सबसे पहले इन्सान अपने प्राणों को बचाने का प्रयास करता है। घर में रखा हुआ साजो सामान,मित्र सम्बन्धियों इत्यादि को बचाने का विचार उसे बाद में आता है। इसका मतलब यही हुआ कि वह इन सभी पदार्थों की तुलना मेंअपने जीवन को अधिक महत्व देता है अधिक कीमती समझता है। यूँ तो कहने को तो लोग कह देते हैं कि मेरा पुत्र, मेरा अमुक मित्र मुझे प्राणों से भी प्यारा है। लेकिन गहराई से विचार करें तो मालूम होता है कि अपने प्राणों से अधिक कोई भी प्यारा नहीं होता क्योंकि जब अपने ही प्राणों पर बन आती है तो वह पहले अपने जीवन को ही बचाने का प्रयास करता है। जैसे कहते हैं बन्दरिया को अपने बच्चे से इतना मोह होता है कि वह अपने मरे हुये बच्चे को कई दिन तक छाती से चिपटाये फिरती है किन्तु अगर वही बन्दरिया गर्मियों के दिनों में रेगिस्तान में जा रही होऔर थककर उसे बैठने काविचार हो जाये तो वह उस गर्म रेत पर बच्चे को बिठाकर उस बच्चे के ऊपर बैठ जाती है पहले बच्चा उसे प्रिय था लेकिन जब अपने प्राणों पर बन आई तो बच्चे की परवाह किये बगैर अपना जीवन बचाया। इससे सिद्ध होता है कि अपने जीवन से बढ़कर कोई प्रिय नहीं।अपना जीवन कीमती हुआ।

किसी व्यक्ति ने अपने जीवन में लाखों करोड़ों रूपया कमाया हो। दुर्भाग्यवश उसका शरीर किसी भयंकर रोग से ग्रसित हो जाये तो वह स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिये,शरीर को निरोग करने के लिये सारा का सारा धन भी खर्च करके शरीर को निरोग रखना चाहेगा।लाखों करोड़ों रूपयों से भी जीवन को अधिक कीमती समझता है। एक व्यक्ति ने अपने जीवन में करोड़ों रूपया कमाया जब मृत्यु का देवता उसे लेने के लिये आया तो उसे देखकर बहुत घबराया। गिड़गिड़ा कर कहने लगा कि मैने इतना धन कमाया है उसका उपभोग तो मैं कर नहीं पाया मुझे उसका उपभोग तो कर लेने दो। लेकिन मृत्यु के देवता ने कहा कि आपकी आयु पूरी हो चुकी है।अब आपको एक क्षण भी नहीं मिल सकता। जैसे यहां इस दुनियां में रिश्वत देकर कार्य निकाल लिया जाता है उस व्यक्ति ने सोचा इसे करोड़ दो करोड़ की रिश्वत दे देता हूँ शायद मान जाये।उसने मृत्यु केदेवता से कहा किआप मुझसे करोड़ दो करोड़ पाँच करोड़ रूपया ले लें और मुझे केवल 24 घन्टे का समय ही दे दें ताकि मैं ये धन शुभ कार्य में खर्च कर सकूँ उसने सारा का सारा धन भी देना चाहा लेकिन मृत्यु का देवता न माना। उसने कहा कि ये धन तो इसी लोक का साथी है परलोक में इन करोड़ों की कीमत दो कौड़ी की भी नहीं वहाँ किसी काम का नहीं। आखिर वह संसार से खाली हाथ कूच कर गया।कहने का तात्पर्य केवल यही हैकि जीवन को बचाने के लिये करोड़ों रूपया तो क्या विश्व का राज्य भी कुर्बान करना पड़े तो भी वह अपने जीवन को बचाने का प्रयास करता है।इन सभी बातों से सिद्ध होता है कि इस मानव शरीर की तुलना में संसार की कोई भी वस्तु क्या सभी वस्तुयें मिलकर भी कीमती नहीं हो सकतीं। इसलिये महापुरुषों ने इस मानव जीवन को बेशकीमत कहा है। सुरदुर्लभ कहा है।

बड़े भाग मानुष तन पावा। सुरदुर्लभ सदग्रन्थन गावा।

कहता हूँ कहे जात हूँ कहा बजाठऊँ ढोल।
श्वांसा खाली जात है तीन लोक का मोल।।
मोल चतुरदश भुवन का एक स्वाँस है तोये।
ऐसे धन रघुनाथ को तुलसी वृथा न खोये।।

महापुरुषों ने एक एक स्वांस की कीमत तीन लोक चौदह भुवन बतलाई। इन्सान दिन रात के चौबीस घन्टों में 21600 स्वांस लेता है एक स्वांस तीन लोक चौदह भूवन का हुआ तो एक दिन के स्वांसों की कीमत फिर पूरे जीवन की कितनी कीमत हुई? कुछ अन्दाज़ा नही लगाया जा सकता। इतना बेशकीमती ये मानव शरीर है।मगर अफसोस और खेद की बात तो ये है कि सन्तमहापुरुषऔर सदशास्त्र सभी इस मानुष जीवन को बेशकीमती कहते हैं मनुष्य स्वयं भी अपने जीवन को इतना महत्व देता हुआ इतना कीमती समझता हुआ भी फिर अज्ञानता वश उन्हीं तुच्छ पदार्थों, सांसारिक धन को एकत्र करने में, सम्बन्धियों की मोह ममता में अपने अनमोल और कीमती जीवन को कुर्बान कर देता है। ये अज्ञानता नहीं तो और क्या है? जीव की बुद्धिमानी तो इसी में थी कि जितना कीमती ये जीवन है उसके बदले में उतने ही कीमत या उससे भी अधिक कीमत की वस्तु प्राप्त करने का यत्न करता।ये समझ ये ज्ञान जीव को कहाँ से प्राप्त होगा?गफलत की नींद से कौन जगायेगा?उसकी ये अज्ञानता दूर कैसे होगी?आम संसारियों की संगत से तो जीव की अज्ञानता दूर नहीं हो सकती। सौभाग्य से जीव यदि सतपुरुषों की संगत में आ जाये उनकी शरण में आने से उनके वचनों को श्रवण करने से सतसंग से ही समझ आ सकती है कि इस कीमती जीवन से कौन सी कीमती वस्तु प्राप्त करनी चाहिए। सतपुरुषों के वचन हैं

नर तन पाये यत्न कर ऐसा जिससे वो करतार मिले।
ऐसी उत्तम जून पदार्थ फिर नहीं बारम्बार मिले।।

इस नर तन को प्राप्त करके ऐसा यत्न कर ऐसा पुरुषार्थ कर शरीर से वह कार्य ले जिससे कि तू परमात्मा को प्राप्त कर सके।चौरासी के चक्रसे छूट कर अपने मालिक से मिल सके।वह यत्न और पुरुषार्थ क्या है? मालिक की भक्ति का धन,सतगुरु का प्रेम,सतपुरुषों की संगत में आकर नाम की कमाई करने का यत्न कर।यही मालिक की भक्ति ही कीमती वस्तु है जो जीव के साथ जाने वाली परमात्मा से मिलाने वाली है। एक तरफ संसार का झूठा धन है जो यहीं रह जाने वाला है संसार का मोह प्यार है जो चौरासी मे ले जाने वाला है दूसरी तरफ मालिक के नाम व भक्ति का धन है जो लोक परलोक में साथ निभाने वाला है सतगुरु का प्रेम चौरासी से छुड़ाकर परमात्मा से मिलाने वाला है।इसलिये सबसे अनमोल और कीमती वस्तु मालिक की भक्ति प्राप्त करने का यत्न कर उसी में जीवन लगा।ऐसी उत्तम जूनि पदार्थ फिर नहीं बारम्बार मिले।चूँकि ये शरीर इन्सान कोचौरासी लाख योनियों के भटकने के बाद कई वर्षों तक याचना करने के बाद प्राप्त हुआ ये चूंकि एक ही बारऔर निश्चित अवधि के लिये मिला है इसलिये इससे लाभ उठा लेना चाहिये ताकि आखरी वक्त पछताना न पड़े। ये कार्य इसी मानव शरीर द्वारा ही हो सकता है अन्य योनियों में ये कार्य नहीं हो सकता अपना जीवन अपने प्राण तो कीड़े मकोड़े पशु पक्षी जानवर इत्यादि योनियों को भी प्रिय होते हैं लेकिन वह उन शरीरों से कीमती वस्तु मालिक की भक्ति नहीं प्राप्त कर सकते।क्योंकि वह कर्ता नहीं है केवल भोक्ता हैं। मानव अपनी कीमती ज़िन्दगी से भी अधिक कीमती वस्तु प्राप्त कर सकता है क्योंकि वह भोक्ता के साथ साथ कर्ता भी है।

(श्री दूसरी पातशाही जी के वचन बैल का उदाहरण देकर मानुष जन्म की विशेषता दर्शाना)इसे खाने की समझ है ये पेट भर सकता है ये मोह कर सकता है लेकिन भजन बन्दगी नहीं कर सकता।क्या ये पदमासन सिद्धासन लगा कर प्राणायाम योग साधन आदि कर सकता है? क्या ये कह सकता है कि प्राणायाम की लहरें मेरे मन भायें।क्या ये कानों में अँगुलियों रख कर अनहद शब्द सुनने का आनन्द ले सकता है? क्या ये सहज समाधी अजपा जाप कर सकता है?कैसे करेगा। उसका शरीर इस योग्य ही नहीं। केवल मानव शरीर ही है जिसमें ये साधन हो सकते हैं। इसलिये महापुरुषों ने इस मानव शरीर को सर्वश्रेष्ठ और बेशकीमत कहा है।

अब प्रश्न ये है भक्ति की प्राप्ति कैसे होगी। परमात्मा से मिलने के साधन कहाँ से उपलब्ध होंगे?आम संसार में भक्ति के साधन नहीं मिल सकते।सन्त महापुरुषों की शरण में आने से उनके सतसंग से ही जीव को मानुष जन्म की श्रेष्ठता व कीमत का पता चलता है और उस कीमती वस्तु मालिक की भक्ति को प्राप्त करने के साधन मिलते हैं जिनपर चलकर जीव सहज ही अपने जीवन को सफल बना सकता है।इसीलिये ही इस युग के अन्दर श्री परमहँस दयाल जी ने श्री आनन्दपुर दरबार की रचना की है और उसमें भक्ति के सुगम साधन जीवों को उपलब्ध करा दिये हैं। नितप्रति श्री आरती में भी हम महिमा गायन करते हैं-

सहज समाधि अनाहद ध्वनि जप अजपा बतलायें।
प्राणायाम की लहरें मेरे मन भायें।।

ये वो साधन हैं जो श्री आनन्दपुर दरबार में बतलाये जाते हैं जिनको अपना करके जीव सहज ही अपनी आत्मा को परमात्मा से मिला कर सच्चेआनन्द को प्राप्त कर सकता है।आप हम सब गुरुमुखों को इसलिये सौभाग्यशाली कहा जाता है कि सर्वप्रथम ईश्वर कृपा से मानुष जन्म मिला,सन्त महापुरुषों की शरण मिली।उनके सतसंग में आने से समझ आ गई कि मानव जीवन अति श्रेष्ठ और कीमती है और इससे कीमती वस्तु मालिक की भक्ति प्राप्त करनी है और भक्ति को प्राप्त करने के सरलऔर सुगम साधन भी उपलब्ध हो गये हैं हमारा कर्तव्य है इन नियमों व साधनों को अपनाते हुये अपने मानव जन्म की कदर करनी है इससे पूरा पूरा लाभ उठा करके अपने जीवन को सफल बनाना है।

इन्सानी ज़िन्दगी का मकसद

भेजे गये हैं इस कर्म भूमि पर किसी खास मकसद के तहत हैं।
है खुशकिस्मत इन्सान जो मकसद को जान ले।।

सन्त महापुरुष फरमाते हैं कि जीव का इस संसार में आने का और मानुष तन प्राप्त करने का कोई खास मकसद है वह मकसद क्या है उसे केवल खुशकिस्मत इन्सान ही जान पाते हैं। इसका मतलब तो ये हुआ कि संसार में जितने भी व्यक्ति हैं उन्हें अपनी ज़िन्दगी के सही और असली मकसद का पता नहीं है तभी तो महापुरुषों ने फरमाया है कि विरले विरले सौभाग्य शाली जीवों को ही इसका ज्ञान होता है और वो अपने असली मकसद को प्राप्त करते हैं।अब देखना ये है कि वह ज़िन्दगी का मकसद क्या है वो कौन खुशकिस्मत इन्सान है जिन्हें उसका ज्ञान हैऔर उस मकसद को प्राप्त करते हैं। आमतौर पर संसार में मानुष्य यही समझ लेते हैं कि ये ज़िन्दगी केवल खाने पीने के लिये,ऐशोआराम के लिये,नफसानी ख्वाहिशात को पूरा करने के लिये,कुटुम्भ परिवार के पालन पोषण के लिये या दुनियां के धन्धे करने के लिये मिली है।लेकिन क्या ये ही ज़िन्दगी का असली मकसद है? नहीं। इसमें शक नहीं है कि ये ज़िन्दगी को कायम लखने के लिये ज़िन्दगी की आवश्यकतायें हैं इनके बिना संसार में रहकर इन्सान का कार्य नहींचल सकता लेकिन इन ज़रूरतों को ही ज़िन्दगी का मकसद समझ लेना ये तो गलती और नादानी है गुमराही है ये सब ज़िन्दगी को कायम रखने के लिये साधन है मकसद नहीं. साधन एक अलग चीज़ है मकसद अलग बात है। ज़िन्दगी की ज़रूरियात में बेशक इन्सान बरते लेकिन आवश्यकताओं को अवश्यकताओं की जगह ही रहने दे मकसद को अपनी जगह।

अगर किस व्यक्ति से पूछें कि तुम दुनियाँ के कार्य व्यवहार किसलिये करते हो तो कहेगा रोटी कमाने के लिये,रोटी किसलिये कमाते हो?जीने के लिये।जीना रोटी के लिये,रोटी जीने के लिये इसमें मकसद क्या हुआ?सुबह उठे चल दिये दुकान पर,नौकरी पर या दफतर रोटी कमाने के लिये,साँझ घर आये खाया पिया,सो गये। प्रातः सांय करते करते इसी तरह रोज़ रोज़ करके जब मृत्यु का समय आया तो क्या उपलब्धि हुई?इसमें प्राप्त क्या हुआ? कुछ भी नहीं।मकसद क्या हुआ?केवल सारी उम्र रोटी कमाते रहे। जीवन से कुछ भी हासिल नही किया।इसलिये महापुरुषों ने फरमाया कि आम संसार में किसी को अपने जीवन के इसली मकसद का पता नहीं है जिन्हें मालूम है वो खुशकिस्मत हैं। हाँ कुछ व्यक्ति ऐसे होते हैं जो अपनी अपनी बुद्धि अनुसार कोई न कोई लक्ष्य या मकसद निर्धारित कर लेते हैं। जैसे कोई ये लक्ष्य बना लेता है कि मैं संसार में सबसे अधिक धनी व्यक्ति बनूँगा।अरबपति कहलाऊँ इतना धन कमाऊँ कि मेरे बराबर किसी के पास भी धन न हो।अब वह धन कमाने के लिये दिन रात एक कर देता है सारी ज़िन्दगी दाँव पर लगा देता है चाहे जैसे भी हो अच्छे तरीके गलत तरीके से काले से सफेद से जैसा भी छल कपट इत्यादि करके भी धन प्राप्त करना चाहेगा।धन मिलना चाहियेअरबपति बनना है।पहली बात तो ये है कि संसार में हर व्यक्ति इतना धन कमा नहीं पाता अगर कोई अपनी बुद्धि से चतुराई से परिश्रम से धन कमा भी लेता है तो इस धन को कमाते कमाते उसकी 50-60 वर्ण की आयु समाप्त हो चुकी होती है।आजकल वर्तमान समय में मनुष्य की आयु 60वर्ष औसतन गिनी गई है अगर कोई उसके बाद दस बीस बरस और जी भी लिया आखिरकार तो संसार छोड़ कर जाना पड़ेगा जब संसार से विदा होने लगेगा तो क्या ये धन साथ ले जा सकेगा?आज तक तो किसी को ले जाते देखा नहीं गया कोई भी उदाहरण नहीं मिलता जो साथ ले गया हो।

कबीर सो धन संचिये जो आगे को होये।
सीस चढ़ाये गाठड़ी जात न देखा कोये।।

जितना बैंक बैलेंस बनाया था वह बैंक में पड़ा रह गया जो ज़मीन में दबा दिया था वह ज़मीन में दबा रह गया। मान लिया कि बाद में उसके बच्चों के काम आयेगा। क्योंकि आमतौर पर व्यक्ति भी ये धारणा होती है कि इतना धन कमाऊं कि सात पीढ़ीयाँ तक बैठे खाती रहें। सात पीढ़ीयों की चिन्ता लगी रहती है लेकिन उसे सोचना चाहिये कि पूत सपूत तो का धन संचै?पूत कपूत तो का धन संचै?कि अगर पुत्र

सपूत है तो वह स्वयं ही धन कमा लेगा उसके लिये जोड़ने की क्या ज़रूरत है?अगर पुत्र कपूत है तो वह धन का अपव्यय करेगा उसके लिये कमाने की क्या ज़रूरत है? इसलिये ये धन इन्सान बच्चों के लिये कमाने का विचार रखे भी तो उसके अपने काम तो कुछ भी न आया तो यहीं छोड़ गया। ब्लकि महापुरुषों के वचन हैं इस धन में सुरति फंसाने के कारण सर्प की योनि में जा गिरा। मान लिया कि वह सर्प की योनि में न गया किसी पुण्य कर्म के प्रताप से मनुष्य शरीर धारण कर भी लिया तो क्या पिछले जन्म के कमाये हुये धन में से ले सकता है?क्या उसे याद रहेगा?उसके काम आयेगा? परलोक में मालिक की दरगाह में वह धन साथ निभायेगा?नहीं।फिर ये धन कमाना ही ज़िन्दगी का मकसद कहां हुआ?लेकिन जीव इसी धन से तिजौरी भरने के लिये सारा कीमती जीवन दाँव पर लगा देता है।कई व्यक्ति अपने जीवन का लक्ष्य बना लेते हैं कि मैं संसार में बड़ा रूतबा हासिल करूँगा। ऊंची पदवी प्राप्त करूंगा।कि उच्च पद को प्राप्त करूं मेरे हुक्म के तले हज़ारों आदमी कार्य करें। गहराई से वचार करें क्या ये ऊँची पदवियां रूतबा मान इज़्ज़त ज़िन्दगी का मकसद हैं? नहीं।क्योंकि ये पदवियाँ सदा नहीं रहतीं।हम देखते हैं कि व्यक्ति चाहे जितनी बड़ी ऊंची से ऊंची पदवी पर पहुँच जाये तो भी वह पदवी उससे जीते जी ही छूट जाती है जब जीते जी ही ये पदवीयां छूट जाती हैं तो मरने के बाद उसका साथ जाने का सवाल ही पैदा नहीं होता। इसलिये ये रूतबा मान इज्ज़त ज़िन्दगी का मकसद नहीं है। कुछ व्यक्ति दृढ़ संकल्पी होते हैं वह अपनी ज़िन्दगी का मकसद बना लेंगे कि मैं हिमालय पर्वत पर चढ़ूंगा,या कोई कैसा आश्चर्यजनक कार्य करूँ कि मेरा नाम गिनी आफ बुक में आ जाये सब मेरा नाम जानने लगें मेरा नाम रोशन हो।संसार में मेरे नाम का सबको पता चल जाये। हिमालय पर चढ़ेंगे एक बार नहीं कई कई बार चढ़ने का प्रयत्न करेंगें जान को जोखिम में डाल कर भी। सात समुन्द्रों को तैर कर पार करने का संकल्प कर लेंगे और भी पता नहीं क्या क्या खफीफ सी बातों के लिये अपनी ज़िन्दगी दाँव पर लगा देंगे।ये भी कोई ज़िन्दगी का मकसद है कि गिनी आफ बुक में नाम आ जाये।गिनीज़ आफ बुक में नाम लिख भी दिया जाये तो उससे क्या होगा?

एक व्यक्ति को अपना नाम सब दुनियां को बताने की धुन सवार हुई थी।उसने पहले रेत की टीले पर बड़े बड़े अक्षरों में अपना नाम लिख दिया लेकिन हवा आई रेत के टीले का कुछ अता पता न चला नाम भी गायब। उसने सोचा किसी पहाड़ पर ही बड़े बड़े अक्षरों में नाम लिख दिया जाये अपने जीवन का बहुत बड़ा भाग उस पहाड़ पर गोदने में लगा दिया लेकिन जलजला आया उस पहाड़ का अता पता ही नहीं कहाँ गया। जब इतने बड़े पहाड़ों का भी अस्तित्व कायम नहीं तो वो गिनिज़ आफ बुक की क्या हैसियत।इसलिये महापुरुष फरमाते हैं किये सब ज़िनन्दगी के मकसद नहीं। ये सब मकसद विभिन्न व्यक्तियों ने अपनीअपनी बुद्धि अनुसार बना रखे हैं। महापुरुष क्या इन विभिन्न मकसदों को प्राप्त करने के लिये फरमा रहें। नहीं ज़िन्दगी का मकसद सभी जीवों का एक ही होना चाहिये तभी तो महापुरुषों ने फरमाया कि खुशकिस्मत हैं जो मकसद को जान ले।हर एक के लिये ही तो कहा है किसी खास व्यक्ति के लिये तो कहा नहीं इसलिये वह मकसद धन,मान,इत्यादि नहीं वह कुछ और ही है। लेकिन सारा संसार ही अज्ञानता के कारण एक दूसरे के देखा देखी इन्ही चीज़ों को प्राप्त करने के लिये ज़िन्दगी व्यतीत कर रहे हैं।उन्हें कौन बताये कि ज़िन्दगी की असलीमकसद क्या है?कुएं भाँग पड़ी है। लेकिन ये समझ, अपने मकसद की पहचान केवल सन्त महापुरुषों की संगत से ही प्राप्त हो सकती है उनके नित प्रति सतसंग से,वचन श्रवण करने से ही ज्ञान हो सकता है सतपुरुषों की वाणियों से ही पता चलता है कि ज़िन्दगी का मकसद क्या है।

गुरु वाणी का वाक है।

भई परापत मानुख देहुरिया । गोबिन्द मिलन की ऐहि तेरी बरिया।।
अवर काज तेरे किते न काम। मिल साध संगत भज केवल नाम।।
सरंजाम लाग भव जल तरन के। जन्म जात वृथा रंग माया के।।

फरमाते हैं कि ये मानुष जन्म मिला है ये परमात्मा से मिलने की बारी है इसलिये सन्त महापुरुषों की शरण ग्रहण कर,उनसे नाम की प्राप्ति करऔर नाम की कमाई कर यही तेरा असली काम है बाकीऔर जो दुनियां केकार्य व्यवहार तेरे किसी काम आने वाले नहीं हैं।इसलिये मालिक की बन्दगी करना ही भक्ति का धन एकत्र करना ही ज़िन्दगी का असली मकसद है। महापुरुषों के वचन हैं।

मिली है ज़िन्दगी इन्सान को बन्दगी के लिये।।
है ये लाज़िमी फर्ज़ हर एक आदमी के लिये।।
पता यह चलता है सतगुरु के फैज़ से लेकिन।
कि बन्दगी है ज़िन्दगी की बेहतरी के लिये।।

खुदा को भटके हुये जीवों पर जब रहम आया।
गुरु के रूप में आया वो राहबरी के लिये।।
है दुनियाँ भटक रही ज़ुलमो जहालत में।।
फकत गुरु की सोहबत है रोशनी के लिये।।

सर चश्मा रहमों करम का है सतगुरु जग में।
खुला हुआ है दर उनका हर किसी के लिये।।

नाचीज़ दास पर रहमत हो इतनी सी सतगुरु।।
हो हरइक काम मेरा आपकी खुशी के लिये।।

फरमाते हैं कि ये ज़िन्दगी इन्सान को बन्दगी के लिये मिली है लेकिन ये पता जीव को सतगुरु की कृपा से ही लगता है सारा संसार ही अज्ञानता में भटक रहा है गुमराह है जब परमात्मा को इन भटके हुये जीवों पर रहम आता है तो वह स्वयं ही सतगुरु के रूप में,सन्त रूप धार कर जीवों को राहे रास्त पर लगाने के लिये संसार की झूठी कार्यवाही से हटाकर सच की कार्यवाही में लगाने के लिये ज़िन्दगी के मकसद को बताने के लिये भक्ति की दात वितरित करने के लिये आता है। मालिक की बन्दगी करना ही जीव काअसली मकसद है भक्ति का धन एकत्र से ही संसार के भी सभी कार्य पूरे जाते हैं क्योंकि मालिक की भक्ति का धन एकत्र करके मालिककी दरगाह में सच्ची इज़्ज़त और मान मिलता है ।

जिन्हि नाम ध्याइया गये मुसक्त घाल।नानक ते मुख उजले केति छुटि नाल।

इसलिये वही खुशकिस्मत इन्सान है जिन्हें सतपुरुषों की शरण संगति उनके सतसंग व नाम की प्राप्ति हो गई उनके वचनों द्वारा पता चल गया है कि ज़िन्दगी का मकसद मालिक की भक्ति करके अपनी आत्मा को परमात्मा से मिलाना है।सच्चे सुख और आनन्द को हासिल करके ये जीवन भी सुख रूप बनाना है परलोक भी सँवारना है।

सच्चा सौदा

सतपुरुषों के वचन हैं।

वणज करो वणजारियो वखर लयो सँभाल।
तैसी वस्तु वसाहिये जैसी निबहे नाल।।
अगे शाह सुजान है लैसी वस्तु संभाल।
भाई रे राम कहहु चित लाये।।
हरि जस वखरु लै चलो शोह देखे पतियाय।।

सतपुरुषों ने मानव को वणजारा कहा है एक व्यापारी कहके सम्बोधित किया है कि ये जीव एक व्यापारी हैऔर इस संसार रूपी बाज़ार में व्यापार करने के लिये आया है। परमपिता परमात्मा ने इस जीव को स्वाँसो की अनमोल पूँजी देकर इस संसार में खरा या सच्चा सौदा खरीद करने केलिये भेजा है इसलिये महापुरुष जीव को चिताते हैं कि ए जीव अपनी वस्तु की सँभाल कर वही चीज़ खरीद कर, एकत्र कर जो तेरे साथ जाये और खरी वस्तु हो लाभदायक हो जिसे देखकर तेरा मालिक तुझसे प्रसन्न हो जाये। अगे शाह सुजान है। वह मालिक बड़ा चतुर सयाना है वह खरी वस्तु ही स्वीकार करेगा।

परमात्मा के द्वारा बनाई हुई संसार की सारी रचना और उसका विस्तार एक प्रकार का बाज़ार है जहाँ पर हर प्रकार की दुकाने विभिन्न सामानों से सजी हुई हैं। यहाँ पर हर प्रकार का सामान उपलब्ध है खरा भी खोटा भी,असली भी नकली भी,सच्चा भी झूठा भी,आत्मा की उन्नति का,आत्मा को सुख पहुँचाने वाला भी,माया भी भक्ति भी। हर प्रकार का सामान मिलता है। हर मनुष्य हर समय अपने इन अनमोल स्वाँसों के बदले अपनी अपनी पसन्द अपनी अपनी रूची और समझ अनुसार सामान खरीद रहा है।नेकी बदी,सुख दुःख,खुशी गमी,शुभ अशुभ संस्कार अपने मन के गोदाम में एकत्र कर रहा है।मानव जीवन के एक एक स्वाँस की कीमत तीन लोक चौदह भुवन से बढ़कर महापुरुषों ने फरमाई है। सन्त तुलसीदास जी अपनी पवित्र वाणी में वर्णन करते हैं।

मोल चतुरदश भुवन को एक स्वाँस है तोये।
ऐसे धन रघुनाथ को तुलसी वृथा न खोये।।

एक स्वाँस का मोल चौदह भुवन के बराबर है। प्रभु के बख्शे हुये ऐसे कीमती धन को व्यर्थ मत गँवा।परमसन्त श्री कबीर साहिब जी ने भी फरमाया है। कहता हूँ कहे जात हूँ कहा बजाऊँ ढोल।

स्वाँसा खाली जात है तीन लोक का मोल।।

एक चतुर और समझदार व्यापारी उसे ही कहा जाता है जो अपनी पूंजी के बराबर की कीमत की वस्तु या उससे बढ़कर कीमती वस्तु का सौदा करता है चौगुना लाभ प्राप्त करता है।

ये संसार हाट बनिये की सब जग सौदे आया।
चतुर माल चौगुना कीन्हा मूरख मूल गँवाया।।

इसलियेअगर इतनी कीमती स्वाँसों के बदले कीमती वस्तु खरीद की तब तो लाभदायक सौदा किया समझदारी की, सफल व्यापारी कहलाया।अगर उसके बदले में कम कीमत की या घटिया किस्म की वस्तु खरीदी तो जीव का भारी नुकसान हो गयाअपनी पूँजी हाथ से खो दी परमात्मा की नाराज़गी हासिल होगी।

कोई पिता अपने पुत्र को दो हज़ार रूपये देकर गेहूँ खरीदने के लिये भेजे और पुत्र गेहूँ की बजाय ये सोचकर भूसा खरीद लाये कि गेहूँ तो केवल दो -तीन कंवटल ही मिल रहा है और भूसा ट्रक भर कर मिल रहा है।तो क्या भूसे को देखकर पिता उससे प्रसन्न होगा?या पुत्र को परदेस में भेजे कोई व्यापार करने के लिये पुत्र उस धन को रंग तमाशों में,खाने पीने में, मौज मस्ती में खर्च करके खाली हाथ घर लौट आये तो पिता की प्रसन्नता कैसे हासिल कर सकता है।एक समझदार व्यक्ति को इन सब बातों पर विचार

करना आवश्यक है।शोह देखे पतियाय। वही पूँजी एकत्र कर जिससे परमात्मा प्रसन्न हो जाये।महापुरुष फरमाते हैं कि ओ बनजारे--

दुनियाँ में तूने किया सौदा कैसा है माल खरा या खोटा रे।
क्या जिन्स खरीदी है तूने क्या माल लाद लदवाया रे।
क्या नफा कमाया है जग में या कि नुकसान उठाया रे।
क्या हाथ तेरे लगा भाई क्या गाँठ से मूल गँवाया रे।
अपने दिल में सोच ज़रा क्या खोया क्या पाया रे।
क्या साथ यहाँ से लेके चला क्या साथ वहां से लाया रे।।

ऐ जीव इस बात पर विचार कर कि संसार में आकर अब तक जो जीवन के अनमोल स्वाँस तू खर्च कर चुका है उसके बदले में कौन सी वस्तु तूने खरीद की है खरी या खोटी,साथ जाने वाली या यहीं रह जाने वाली।अब तक तेरे हाथ क्या आया,क्या खोया क्या पाया।कभी इसका हिसाब भी लगा कि कितना लाभ प्राप्त हुआ या कि पूँजी भी गँवा कर नुकसान हाथ आया। इस बात विचार कर,अब तक जो तूने एकत्र किया है क्या वह तेरे साथ जायेगा।संसार में आमतौर पर देखने में यहीआता है कि कोई सांसारिक धन दौलत,मान बड़ाई,कोई इज़्ज़त हक़ूमत को प्राप्त करना चाहता है उसकी प्राप्ति में अपने अनमोल जीवन को दाँव पर लगा देता है कोई शारीरिक सुखों के वैभव के अनेकों सामान एकत्र करता है। कोई नफसानी रसों का ग्राहक है तो कोई पुत्र,मकान,जायदाद का तलबगार है लेकिन ये शारीरिक सुख भोग, नफसानी रस,सांसारिक पदार्थ सब बेवफा और नाशवान हैं और इन सब पदार्थों का सम्बन्ध केवल शरीर तक है।जब स्वांसों की पूँजी खत्म हो जाती है आयु पूरी हो जाती है संसार से कूच करने का समय आता है तो ये शरीर भी साथ नहीं जाता जीवन में कमाया हुआ सारा धन,कुटुम्ब परिवार रिश्ते नाते,शारीरिक सुख वैभव के सब सामान यहीं धरे रह जाते हैं इनमें कुछ भी साथ नही जाता।जो जीव के साथ न जाये यहीं रह जाये तो वह खरा सौदा सच्चा सौदा कहाँ हुआ?इसलिये इन पदार्थों को एकत्र करना लाभदायक सौदा नहीं।ब्लकि इन पदार्थों से दिल लगा बैठने से इनकेसंस्कार आत्मा को नीच योनियों में ले जाने का कारण बनते हैं और आत्मा जन्म जन्मान्तरों तक नीच योनियों में भटकती रहती है। इसलिये ये लाभदायक सौदा नहीं।अपनी असली पूँजी भी गँवा बैठा।

अलफ आया सी लाल खरीदने नूँ वणज कौड़ियां दी पल्ले पा बैठा।
तैनूं हुक्म सी कस्तूरी खरीदने दा हिंग अजवायन दी ढेरी ला बैठा।
नफा खटने विच परदेस आयों अपना मूल वी ऐवें गँवा बैठा।
की जवाब देसें उस शाह ताईं जिसदी रकम तू खाक रूला बैठा।

आया सी लाल खरीदने नूं। कौन सा लाल?मालिक की भक्ति रूपी लाल, प्रभु के प्रेम का,नाम के सुमिरण का,ये लाल खरीदने आया था।लेकिन वणज कौड़ियां दी पल्ले पा बैठा। संसार के जितने पदार्थ हैं सब कौडिया हैं। क्योंकि ये सब यहीं छोड़ जाने वाले हैं।किस काम के।तैनूं हुक्म सी कस्तूरी खरीदने दा। प्रभु की प्रेमा भक्ति को कस्तूरी से तुलना की है और संसार के पदार्थों को हींग अजवायन कहा है इसलिये कहा कि कस्तूरी मृग होता है जो बर्फीले पहाड़ों में पाया जाता है उसकी नाभि में कस्तूरी होती है उस कस्तूरी की खुशबू जहाँ हिरणविचरण कर रहा होता है वहाँ से एक दो किलोमीटर के क्षेत्र में उसकी महक फैली होती है जिससे मालूम हो जाताहै कि आसपास कस्तूरी मृग विचरण कर रहा है।हींग अजवायन की इतनी महक नहीं होती।जिसने संसार में बहुत सा धन एकत्र किया बड़ा सेठ कहलाया या मान इज़्ज़त हासिल कर भी ली तो वह वहीं तक सीमित है उसके संसार के कूच करने के पश्चात उसे कोई भी नहीं जानता लेकिन जिसने परमात्मा की भक्ति की नाम का सुमिरण किया उसके शुभ कर्मों की खुशबू उनके जीवन काल में भी चारों तरफ फैली होती है उनके संसार से
औझल होने के पश्चात भी युगों युगों तक उनकी खुशबू से संसार
लाभान्वित होता है।(सिकन्दर की मिसाल)

विरह

प्रीतम प्रेमी का प्राण आधार है। प्रेमी यह कभी सहन नहीं कर सकता कि उसका प्रीतम उससे एक पल भी बिछुड़े। प्रीतम के बिछोड़े के कारण प्रेमी के अन्तर हृदय में जो कुदरती तौर पर तड़प पैदा होती है उसको विरह कहा जाता है। विरह प्रेम की जागृत अवस्था का ही नाम है।

सुमिरण और ध्यान विरह की दशायें हैं। अर्थात सुमिरण और ध्यान से विरह ही पैदा होती है और दो से एक हो जाने की सूरत बनती है।प्रेमी एक पल के लिए भी अपने प्रीतम से अलग नहीं होना चाहता। प्रचलित भाषा में विरह का भाव बिछोड़े से लिया जाता है। बिछोड़े का भाव प्रत्येक जीव में देखने में आता है। जिस तरह शंख समुद्र का एक जीव है लेकिन किसी कारण अपने वास्तविक ठिकाने से अलग होकर उसके बिछोड़े कारण शंख रूप धार कर दिन रात दहाड़ रहा है। परम सन्त श्री कबीर साहिब जी उपरोक्त कहानी को अपने एक श्लोक द्वारा इस तरह वर्णन करते हैं।

कबीर रैनाइर बिछोरिआ रहु रे संख मझूरि। देवल देवल धाहड़ी देसहि उगवत सूर।।

अर्थात समुद्र के जीव ने किसी कारण समुद्र से बिछुड़ कर शंख का रूप धारण कर लिया। अब वह अपने असली ठिकाने पर पहुँचने के लिए दिन रात मन्दिरों में दहाड़ तथा कुरला रहा है।

जिस तरह पपीहे को स्वांति बूंद के मिलने की कितनी तड़प होती है। चाहे प्यास के कारण तड़फते की जान ही क्यों न निकल जाए,परन्तु स्वांति बूंद के बिना छपड़ियों नदियों आदि का पानी पीना पसंद नहीं करता।पपीहे की इस अवस्था का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानकदेव जी अपनी वाणी में फरमाते हैं।

चात्रिक जल बिनु प्रिउ प्रिउ टेरै बिलप करै बिललाई।
घनहर घोर दसौ दिसि बरसै बिनु जल पिआस न जाई।।
कबीर अंबर घनहरु छाइआ बरखि भरे सर ताल।
चात्रिक जिउ तरसत रहै तिन को कउनु हवालु।।

भाव चाहे आसमान में चारों तरफ काली घटायें छाई हुई हों और वर्षा के पानी से तलाब भर जायें, परन्तु पपीहे को भरे तालाबों आदि से क्या मतलब। बिना स्वांति बूंद के वह प्यासा ही रहता है।

इसी तरह कोई विरही आत्मा भी अपने प्रीतम के आगे यही पुकार करती है।

मेरा सज्जण अजे वी आया ना। उस मैनूं मुख दिखलाया ना।
इह कह के मारी ढाह सज्जणा। जद निकल गए मेरे साह सज्जणा।।
फेर आ ते भावें न आ सज्जणा। साडे दिल विच रह गए चा सज्जणा।
तू आके फेरा पा सज्जणा। मैं तत्ती दी धीर बन्धा सज्जणा।।

जिस तरह चकवी अपने प्यारे(सूर्य) से बिछुड़कर रातें जाग जाग कर तथा तड़प तड़प के काटती है, इस आशा में कि दिन चढ़े और मैं अपने प्रीतम का मुखड़ा देखूँ। सूरज निकलने पर वह उसके मिलने के लिए उड़ना शुरू कर देती है।चाहे धूप कितनी तेज है तथा कितनी गर्मी है, परन्तु वह अपनी उड़ान बन्द नहीं करती। वह किसी भी हालत में अपने प्रीतम के पास पहुँचना चाहती है। वह अपने प्यारे के बिछोड़े की आग में सड़ने से इस बाहर की गर्मी को कहीं अधिक सुखदायी समझती है।सूरज के छिप जाने पर चकवी को फिर उसी बिछोड़े की अग्नि में सड़ना पड़ता है। इस तरह एक दिन वह अपने आपको अपने

प्रीतम के बिछोड़े की अग्नि में जला कर राख कर लेती है।अपने प्रीतम को मिलने की तड़प में वह अपनी हस्ती को मिटा देने में बहुत ही आनन्द का अनुभव करती है। चकवी की इस हालत का वर्णन करते हुए श्री गुरु नानक देव जी अपनी वाणी में फरमाते हैं।

चकवी नैन नींद नहि चाहै बिनु पिर नींद न पाई।
सुरु चरहै प्रिउ देखै नैनी निवि निवि लगै पाई।।

भाव चकवी की आँखों में नींद कहाँ है?सूरज चढ़ने पर जब वह अपने प्रीतम को अपनी आँखों से देख लेती है तो वह झुक कर उसको नमस्कार करती है।

कबीर चकई जउ निसि बीछुरै आइ मिलै परभाति।
जो नर बिछुरै राम सिउ ना दिन मिले न राति।।

कबीर साहिब जी का इशारा यह है कि रात की बिछुड़ी हुई चकवी सुबह होने पर अपने प्यारे से मिलाप कर लेती है। परन्तु जो मनुष्य मालिक से बिछुड़ गया वह न तो रात को ही मिल सकता है और न दिन को।

चकोर अपने प्यारे(चाँद) का सुन्दर मुखड़ा देखने के लिए जंगलों, पहाड़ों में भटकता रहता है। माता अपने पुत्र के बिछोड़े को कारण हर समय बेचैन, निराश तथा दुःखी रहती है। उसको न रात को नींद आती है और न ही दिन को सुख चैन तथा आराम मिलता है। स्त्री अपने पति के बिछोड़े में जो अनुभव करती है,केवल वही जानती है।उसका ध्यान हर पल दरवाजे की तरफ जाता है,उसके मन में पल पल यह विचार आता है कि शायद उसका पति कहीं से आ ही जाए। दरवाजा खटखटाने या किसी आहट को सुनकर उसको उसके पति के आने का शक हो जाता है और दरवाजा खोलने के लिए उठ भागती है। जिस तरह मछली पानी से अलग हो गई। पानी के वियोग या पानी के न मिलने के कारण मछली को जो अशांति,दुःख तथा तड़प होती है,वह आप ही जानती है क्योंकि पानी उसका प्राण है।इसी तरह आत्मा अपने मालिक से और प्रेमी अपने प्रीतम से बिछुड़कर हर समय अशांत, बेचैन, निराश और दुःखी रहता है।प्रेमी जो कुछ चाहता है या जो चीज़ आत्मा माँगती है उसकी प्राप्ति न होने के कारण विरह पैदा होती है। प्रेमी का अपने प्रीतम के प्रति रिश्ता बहुत ही गहरा है। प्रेमी के लिए उसका प्रीतम ही सब कुछ है। प्रीतम का वियोग या दूरी प्रेमी के लिए नर्कों के समान है। और नज़दीकी स्वर्ग से बढ़कर है। इस संबन्ध में एक कव्वाली में प्रेमी की हालत के बारे में बताया गया है।

टेक-प्रेम दिआं रोगीआं दा दारू नहीं जहान ते।
रोग टुट जांदे दारू दर्शनां दी खान ते।
1.एक पासे हउके ने ते इक पासे आहीं ने।
नबजां फरोले वैद दुःख दिल माही ने।
गुरु वाली ताँघ रहिंदी दुखड़े सुणान ते। रोग टुट जांदे----

2.दुनियाँ दे किस्से झूठे, झूठिआँ कहाणीआं।
किते ना आराम आवे बिना दिल जानीआं।
गुरु तों बिना लिआउंदे, लफज जबान ते। रोग टुट जांदे-----।
3.हिरन नूं नाद जैसे, कोयल नूं अँब जी। हुन्दा माता नाल जैसे, बच्चे दा संबंध जी।
हुन्दा है मस्त सप्प बीन दे सुनाण ते। रोग टुट जांदे----।
4.प्रेमियाँ दी गुरु बिना की है ज़िन्दगानी जी। तड़फती है मच्छी जैसे, दूर हो के पानी जी।
लगदा नहीं कुछ चंगा, सारे ही जहान ते। रोग टुट जांदे-----।
5.पपीहे दी स्वांति बूंद नाल जिवें प्रीत है। दरशनां नूं तड़फदे ने, आशिकां दी रीत है।
झलदे जुदाई वाला, दुःख प्यारी जान ते। रोग टुट जांदे------।
6.चन्न ते चकोर अते दीवे ते पतंग जी। गुरु नाल प्रेमियाँ दा, ऐसा है संबंध जी।।
हसदा है भौरा जिवें, फुलां दे निशान ते। रोग टुट जांदे------।
7.प्रेम रोग लग्गे दा, ते होर इलाज नाहीं।लग्गी उदासी रहिंदी, होर कम्म काज नाहीं।
होजे बीमारी दूर, गुरु मिल जाण ते। रोग टुट जांदे------।
8.प्रेम दीआँ रोगीआं दी, दवा ही निराली है। बिना गुरु दिस्से उहना, सारा जग खाली है।
आजे आराम उदों, दर्शनां दे पाण ते। रोग टुट जांदे-----।
9.प्रेम वाला रोग जीहनूं होवे यारो लग्गिआ। आउंदी न चैन किते फिरे भज्जिआ भज्जिया।
आवे न आराम किते बैद्य लुकमान ते। रोग टुटु जांदे----।
10.प्रेम वाला रोग,सतनाम जी वी देखिआ।आपणी कुल्ली नूँ हत्थीं अग्ग ला के सेकिआ।
करता हवाले बैद्य शाह मस्तान ते। रोग टुटु जांदे------।
अपने प्रीतम के विरह में तड़फती हुई एक आत्मा उसको एक पत्र में इस तरह पुकार करती हुई लिखती है।
टेक-मेरा हाड़ा सज्जणा आजा वे, चन्न वरगा मुख दिखला जा वे।
इक वारी प्यास बुझा जा वे।।
1.में रो रो देआं दुहाइयां वे, तेरे इश्के मार मुकाइयां वे।
हुण सह ना सकां जुदाइयां वे, सुण मेरे महरम साँइयाँ वे।
मेरे पीड़ करदे जख्मां दे, आके दीद दवाई लाजा वे। मेरा हाड़ा----।
2.मैं झूठ ना सज्जणा बोलां वे, मैं कुफ्र ना सज्जणा तोलां वे।
तेरे इश्के मैनूं फूक दित्ता, दिल सड़ के होया कोला वे।
इह दस्सण वाली गल्ल नहीं, मैं कित्थे पावां रौला वे।
मुड़के इश्के दी अग्ग भखा के ते, कोले नूं सुर्ख बणाजा वे।
3.प्यार पाउण तों पहलों जाणू सै, इह प्यार निभाउणा पैणा है।
इस प्यार विच सज्जणा सुख कित्ते, कुझ कष्ट उठाउणा पैणा है।
हुण पैंडा सज्जणा छुटणा नहीं, तैनूं दीद दखाउणा पैणा है।
दीद बूंद तों प्यासी मर गई जे, पिछों भावें बण घटा आजा वे।
4.जो इश्क तेरे नाल लाया है, नाल जान मेरी दे जावेगा।
इह रोग अवल्लड़ा लगिआ है, जो मैनूं मार मुकावेगा।
इहदी इक्को ही दीद दवाई है, जो तेरे कोल बताई है।
इक पल वी मेरी आस नहीं, तूं समझें रोगी खास नहीं।
फिर पुछेगां तूं सज्जणा वे, इह किसदा है जनाजा वे।
5.जे सज्जणा तूं नहीं आ सकदा, जे मुखड़ा नहीं दिखा सकदा।
खैर प्यार दी जे नहीं पा सकदा, जे कष्ट तूं नहीं उठा सकदा।
मैं कष्ट तैनूं हुण देणा नहीं, बस फिर कदे वी कहणा नहीं।
बस इक्को ही इच्छा मेरी जी, हुण जद वी पाओगे फेरी जी।
इह मेरी सी बस गल्ल इतनी, मेरी कब्र ते तूँ लिखवाजा वे। मेरा हाड़ा सज्ज्णा----।
सुखी सभ संसार है खावे ओर सोवे।
दुखीआ दास कबीर है जागे ओर रोवे।।
सन्त महात्माओं की मालिक के प्रति तड़प व्याकुलता का पता उनके जीवन की परख करने पर ही किया जा सकता है। सारी दुनियाँ खूब खा पी के खूब रंग-रलियाँ मनाती है और रात को निश्चिंत हो कर सोती है, परन्तु सन्त महात्मा संसार के जीवों की हालत को देखकर दुःखी होते हैं। विरह की दशा में अपने मालिक के बिछोड़े में रो रो कर रातें गुजारते हैं तथा भूख, प्यास नींद आदि सब खत्म हो जाते हैं। केवल गम, दुःख आहें और आँसू ही उनके लिए रह जाते हैं। इस तरह विरही आत्मा अपने प्यारे को मिलने की तड़प में रात दिन बिलखती हुई समय बिताती है। वह हर समय इस तड़प में रहती है कि हाय ऋंगार करना आदि सब भूल जाती है। अर्थात प्यारे के बिना और सब कुछ उसके लिए फीका मालूम होता है।
श्री गुरुनानक देव जी वर्णन करते हैं।
मुंध रैणि दुहलेड़ीआ जीउ नींद न आवै।सा धन दुबलीआ जिउ पिर कै हावै।।
धन थीई दुबलि कंत हावै केव नैणी देखए।सीगार मिठ रस भोग सभु जूठु कितै न लेखए।।

भाव, विरह की सताई हुई आत्मा अपने प्रीतम के बिछोड़े में बिलख बिलख के समय व्यतीत करती है। उसकी आँखों से नींद तो बिल्कुल ही उड़ जाती है। वह अपने प्यारे की तड़प में दिन रात आहें भरती रहती है। उसका शरीर सूख कर तिनके जैसा हो जाता है। हाय। यदि कहीं उसका प्रीतम दिख जावे। इस आशा कारण ही वह कितनी उम्र बिता देती है। प्रीतम के बिना शरीर के ऋंगार मीठे भोजन रस भोग आदि झूठे तथा फीके हैं और किसी गिनती में नहीं आते।

बाबा फरीद जी भी उस हालत का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं।

फरीदा तनु सुका पिंजरु थीआ तलीआं खूंडहि काग।अजै सु रबु न बाहुड़िओ देखु बंदे के भाग।कागा करंग ढंढोलिआ सगला खाइआ मासु।ए दुइ नैना मति छुहउ पिर देखन की आस।।

अर्थात प्रीतम के बिछोड़े के कारण विरहन का तन सूख कर केवल हड्डियों का पिंजरा बन गया है। कौवे पाँवों की तलियों में ठूँगे मार मार के मांस खा रहे हैं, परन्तु उनको हटाने की हिम्मत नहीं रही। अभी भी प्रीतम के दर्शन नहीं हुए। इन्सान के कितने मंद भाग्य हैं। हे कौवे। मेरे शरीर के पिंजरे में से चाहे नोच नोच कर सारा मांस का ले, परन्तु मेरी इन आँखों को न छूना, जोकि प्रीतम के इन्तज़ार में तरस रही हैं।

मुझे अभी तक अपने प्यारे प्रीतम को देखने की पूरी आशा है और वह भी ज़रूर आएगा। फरीद साहिब जी फिर फरमातें हैं।

कागा जूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि।
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदूं खाहि।।

भाव जो कौवे चाहे तूने मेरे शरीर का मांस नोच लिया है, अब उडारि मार जा। पिंजरे के जिस हिस्से में मेरा प्रीतम बसता है, उस हिस्से का मांस न खाना।

साँइ सेवत जल गई मास न रहीआ देह।
सांई जब लग सेवीअहि एह तन कहोई न खेह।

श्री कबीर साहिब जी फरमातें हैं प्रीतम की विरह में जल के मैं कोयला हो गई हूँ और शरीर पर मांस भी नहीं रहा, अभी भी मुझे उसके आने की पूरी आशा है। हे मालिक जब तक मैं अपने प्रीतम को आँखों से देख न लूँ मेरे तन की राख न बने। जब तक मैं अपने प्यारे के दर्शन न कर लूँ मेरा शरीर नाश न होवे।

श्री कबीर साहिब जी विरहन आत्मा के प्रति फिर फरमाते हैं।

पीर पुरानी बिरह की पिंजर पीर न जाइ।एक पीर है प्रीति की रही कलेजे छाइ।।
चोट सताये बिरह की सभ तन जाजर होइ।मारन हारा जानही कै तिस लागी सोइ।।
बिरह भवंगम बस नहीं कीआ कलेजे घाव। बिरहन अंग न मोड़ ही जिउ भावे तिउ खाव।।
देखत देखत दिन गया निस भी देखत जाइ।बिरहन पिय पावै नहीं बेकल जीउ घवराइ।।
सो दिन कैसा होइगा गुरु गहेंगे बांह। अपना कर बैठावहीं चरन कवंल की छांह।।

विरह की पीड़ा बहुत पुरानी है, जो विरहन आत्मा के रोम रोम में धंस चुकी है, जिस कारण अब दूर नहीं हो सकती। यह प्रीत की पीड़ा धीरे धीरे कलेजे को खा रही है।विरह की चोट के दुःख के कारण शरीर खोखला सा हो गया है। इस अवस्था को या तो वही जानता है जिसकी ओर से यह दुःख मिला है और या जिको यह पीड़ा लगी हुई है। विरह का नाग उसके बस से बाहर है। इसने अपने डंकों से उसके कलेजे को घायल कर दिया है। विरहन आत्मा अपने शरीर का कोई भी अंग नहीं हिलाना चाहती। जिस तरह दिल करे विरह रूपी नाग उसको खाता जाए। विरहनआत्मा अपने प्रीतम का हर समय इन्तज़ार करती है। दिन भी राह देखते गुज़र जाता है और रात भी इसी तरह बीत जाती है, परन्तु उसका प्रीतम न आया। जिस कारण वह अति व्याकुल बेचैन तथा घबराई हुई है। ऐसा कोई भाग्यशाली दिन हो जिस दिन उसका प्रीतम उसकी बाँह पकड़े और उसको अपना बना के अपने चरण कमलों की छाया में बिठावे।

बिरहन के संदेसड़े सुनों हमारे पीव। जल बिन मछली किउ जीए पानी में का जीव।
बिरह तेज़ तन में तपे अँग सभी अकुलाइ। घट सूना जिव पीव मेंमौत ढूँढ फिर जाइ।।
कबीर सुंदरी यों कहे सुनिओ संत सुजान।बेग मिलोतुम आइ कर नहिं तो तजहूँ प्राण
कै बिरहन को मीच दे कै आपा दिखलाइ। आठ पहर का दाझना मो पै सहा न जाइ।
बिरह कमंडल कर लिए बैरागी दो नैन। मांगे दरस मधूकड़ी छकें रहें दिन रैन।।
एह तन का दिवला करूँ बाती मेलूं जीभ। लोहू सींचूं तेल जिउं कब मुख देखूं पीव।।

विरहन आत्मा अपने प्रीतम को अपने एक संदेश में इस तरह पुकार करती है कि मछली का जीवन पानी ही है। वह पानी का ही जीव है।बताओ फिर वह पानी के बिना कैसे जीवित रह सकती है?विरह की तेज अग्नि के कारण सारा शरीर तप रहा है और रोम रोम व्याकुल है। आत्मा तो प्रीतम में बसी हुई है जिस कारण आत्मा के ना सूने शरीर में से मौक्ष आक्ष्मा को ढूँढ ढूँढ कर वापिस चली जाक्षी है। विरहन आक्ष्मा प्रीक्षम के आगे पुकार करक्षी है कि हे प्रीक्षम। आप मुझे आकर मिलो नहीं तो मैं अपने ्पराण क्ष्याग दूँगी। या तो मुझ विरहन को मौत ही दे दो और या फिर अपने दर्शन तो। यह आठों पहर का सड़ना-बलना अब मेरे से सहन नहीं होता. तेरे विरह के कारण मैने अपने इन दोनों वैरागी नैनों को कमंडलव बना रखा है, जो केवल तेरे दर्शनों की ही भिता मांगते हैं.

केवल दर्शनों की ही प्यारस है।तेरे बिछोड़े में मैं अपने इस तन को दीपक में जीभ को उसकी बत्ती बना रखा है और उसमें तेल की जगह मेरा लहू जल रहा है। हाय. कब अपुने प्रीतम प्यारे का सुन्दर मुखड़ा देखने का अवसर मिले।दसम पातशाह अपनी वाणी द्वारा प्रीतम को अपने एक सन्देश में फरमाते हैं।

मित्तर पिआरे नूं हाल मुरीदां दा कहिणा। तुध बिन रोग रजाईआं दा ओढण नाग निवासां दे रहिणा।

सूल सुराही खंजर पिआला बिंग कसाईआँ दा सहिणा। यारड़े दा सानूं सथर चँगा भठ खेड़ियाँ दा रहिणा।।

भाव, हे प्रीतम प्यारे। तेरे बिना तो हमारा जीना हराम बराबर है। तेरे बिना रजाइओं का ओढ़णा रोग तथा नागों में रहने के समान है। तेरे बिना हम सूलों की सुराही तथा खँजर के प्याले में दुःख दर्द तथा कमों के घूँट पी रहे हैं।और कसाइओं की गुप्त मार का दुःक सहन कर रहे हैं। हे प्यारे। हमें तो तेरा सक्ष्थर(नीचे सोना) अच्छा है तेरे साथ रहते हुए खुशियाँ गाँव के सुख हैं।परन्तु तेरे बिना इन गाँवों में रहना जलती भट्ठी की तरह दुःखदायी लगता है।

मालिक के प्रेम रंग में रंगा हुआ जीव दुनियाँ के हर सुख तथा आराम को भूल जाता है। वह अपने प्रीतम से एक पल के लिए भी दूर रहना सहन नहीं कर सकता। प्रीतम की एक पल की दूरी उसके लिए प्रलय तथा अतयन्त दूभर हो जाती है।अपने दिल के प्रीत के बिना हीर को गाँवों के महल तथा सुख आराम जलती भट्ठी की तरह मालूम होते थे, परन्तु उसका (रांझे का घर) सक्ष्थ तथा घास फूँस की कुल्ली स्वर्ग के सुखों की तरह सुखदायी लगती थी। इसलिए तो कवि ने लिखा है।

कुल्ली यार दी सुरग दा झूटा अग्ग लावां महिलाँ नूं।

शेख फरीद साहिब जी भी स्वयं विरह के हथों शिकार हुए अपने श्लोकों में इस अवस्था का बहुत सुन्दर ढंग से वर्णन करते हैं।

जोबन जांदे न डरां जे सह प्रीति न जाइ। फरीदा किंती जोबन प्रीति बिनु सुकि गए कुमलाइ।

फरीदा चिंत खटोला वाणु दुखु बिरहि विछावण लेफु।एहु हमारा जीवणा तू साहिब सचे वेखु।।

मुजे यौवन(शरीर की सुन्दरता तथा जवानी) के चले जाने का कोई भय तथा दुःक नहीं है। परन्तु प्रीतम की प्रीति नहीं टूटनी चाहिए क्योंकि ऐसी कितनी ही जवानियाँ प्रीत के प्रेम बिना सुख कर कुमला गई हैं।

हे दिल के सच्चे प्रीतम। तेरे बिना तो हमारा जीना धिक्कार योग्य है। तेरे बिछोड़े में मेरी चिन्ता की चारपाई में दुःखों का बाण भरा हुआ है और उसके ऊपर विरह का बिछौना है। तेरी जुदाई में मेरा यह हाल है। इस जीने से तो मरना अच्छा है।

काली कोइल तू कित गुऩ काली। अपने प्रीतम के हउ बिरहै जाली।।

कोयल भी अपने प्रीतम की विरह में जल जल कर ही ितनी काली हो गई है। वरिह गीले गोबर के ऊपल की भांति है, जो न तो तेज भड़कती है और नही बुझती है। धीरे धीरे धुखती रहती है और इस तरह सारे सके सारे ूपलवे जलकर राख हो जाते हैं। ठीक िसी तरह प्रीतम के बिछोड़े की आग भी प्रमी को काला धूत बना देती है। उसके शरीर का सारा खून सूक जाता है और हड्डियों का ढांचा सा रह जाता है। फरीद जी कोयल को देखकर ये प्रश्न कर बैठते हैं।

इसी प्रकार एक विरही आतामा से किसी प्रेमी के उसको पूछने पर वह अपने दुःक के प्ति इस तरह वर्णमन करती है।

मैं तां दुःखां मारी वीरा, न राग मैनूं कोई आवे। तन मन सड़के होया कोला, की राग मैनूं दस भावे।।

जुगां जुगां तों बिछुड़ी बीरा,मेरा सज्जण कोई मिलावे।जंगल-वेले बन बन ढूंढां शायद सज्जण मिल जावे।

रात दिने किते चैन न मैनूं, कोई सज्जण दी दस पावे।ना वीरा कोई मेरा टिकाणा की कोई आहलणा पावे।

जिसदे घर विच सज्जण ही नहीम, उह की घर सदावे। ना कोई वीरा जीउणा मेरा, न खाण-पाण कोई भावे

मैं तां वक्त गुजारा करदी,न मौत वी मैनूं आवे। मर जांदी में कद दी वीरा जिउणा मूल न भावे।।

आस मिलण दी मरण न देंदी, शायद सज्जण मिल जावे।।

मैं निमाणी दे कर्मां विच की, कुदरत लेख लिखाए।इक दीद सज्जण दी खातिर मैं रो रो नीर बहाए।।

कूहू-कूहू न बोली मेरी, न कोई राग अजावां. इह है नाम पीआ मेरे दा, दिने रात पइ गावां।।

प्रीतम के बिछोड़े से पैदा हुए दुःक तथा दर्द विरही किस को बताए?यह कौन सी बताने ेूछने वाली बात है। दुनियां के अधिकतर लोग इस बात से बेखबर हैं इसलिए वे तो पागल कह कर मजाक ही उड़ाते हैं। साईं बुलले शाह तो यहाँ तक कहते हैं कि मुजे

अपने सतगुरु के बिछोड़े ने हाल से बेहाल कर दिया है। मैं यह दुःक किसके पास जा कर रोूं, चुप रहा भी न जाए और कुछ कहा भी न जाए। न तो चुप रहा जाचा है और न हही किसी को दर्द के बारे कुछ कहा जा सकता है।

दर्द विछोड़े दा हाल नी मैं कीहनूुं आखाँ। विरहों पिआ मेरे हाल नीं मैं कीहनूं आखाँ।।

विरही जाव को सोना, जागना, खाना पीना आदि सब कुछ भूल जाता है दिन रात पागलों की तरह उदास परेशशान तथा गुम सुम सा ही रहता है। न तो उसका चित्त किसी से बात करने को करता है और न ही दुनियाँ की कोई चीज़ उसको अच्छी लगती है। हर समय अपने प्रीतम की याद में आँसूं उसकी आँखों से बहते रहते हैं। इस तरह वह अपने तन का माँस खा कर और जिगर का खून पी कर हड्डियों का ढाँचा बन जाता है।दुनियाँ में न क्षो वह जीवित आदमियों में ही गिना जाता है और न मरे हुओं में। इस हालत में समय गुजारते हुए अक्ष्यन्त दुःखी तथा संतप्त हो कर फरीद साहिब अपने एक श्लोक में फरमाते हैं।

फरीदा जि दिहि नाला कपिआ जे गलु कपहि चुख।पवनि न इति मामले सहां न इती दुःख।।

अर्थात जिस दिन मेरे जन्म पर दाई ने मेरा नाडूआ काटा था, कितना अच्छा होता यदि वह मेरा गला भी काट देती, ताकि वियोग के दुःक के कारण यह हालत न होती।।

साईं बुल्ले शाह जी का अधिकतर जीवन अपने सतगुरु की जुदाई में तड़पते और आहें भरते ही गुजरा। अपने गुरु की नाराज़गी के कारम ुसको कई साल लगातार विरह की अग्न में जलना पड़ा था। अब यह वियोग का दुःख सहा भी नहीं जाता। प्यारे को मिलने की लगन भी बहुत लगी हुई है न जीने को ही दिल करता है और न ही मर सकता हूँं इस तरह का वर्णन अपनी वाणी में फरमाते हैं।

अब लगन लगी क्या करीए। ना जी सकीए ना मरीए। तुम सुनों हमारे बैना। मोहि रात दिने नहीं चैना।

हुण पीआ बिन पलक न सरीए। अब लगन लगी क्या करीए।।

एह अगन बिरहु दी जारे।कोी हमारी तपत निवारे। बिन दरशन कैसे तरीए। अब लगन लगी क्या --

बुल्ला बणी मुसीबत भारी। तुम करो हमारी कारी। एह अजर कैसे जरीए अब लगन लगी क्या करीए।

हाफिज साहिब जी कुध विरह के हाथों बे-हाल हुए उस हालत का इस तरह वर्णन करते हैं, हे लोगो भगवान करे। कोई मेरी तरह वरिह के हाथों तड़प तड़प के बे-हाल न होवे। मेरी सारी आयु विरह की अग्नि को सहते सहते ही गुजर गई। हाय। यदि बिछोड़ा मेरे हाथ चढ़ जाचा तो ुसको मालिक के बिछोड़े में फँसा देता। फिर उसको बी मेरे बिछोड़े की सार होती और उसकी आँकों में भी मेरी तरह आँशूओं के बजाए सोज-गुदाज(गम में जले हुए. कर के खून निकलता। लेकिन अफसोस। कि मैं गम-मुजस्स(गम में बना बुत)होने के कारण बिछोड़े को पकड़ नहीं सकता। शायद मेरी मां ने मुझे विरह के लिए ही जन्म दिया था. हे मालिक। तेरे ही प्रेम के कारण मैं बुलबुल की तरह दिन रात खून भरे आँशूं रूलाने वाले बिछोड़े के गीत गाता हूँ।

आप आगे फिर फरमातें हैं, कलम में भी इतनी ताकत नहीं जो बिछोड़े की हालत का वर्णन कर सके। नहीं तो मैं आपको इसका हाल खोलकर बताता।बिछोड़े के अताह समुद्र की लहरें मालिक को मिलने का शौक रखने वालोो के सिरों को पार कर गई और इसी तरह गोते खाते हुए उनकी उम्रो की बेड़ियों डूब गईं। जब मेरे दिल तथा दिमाग को मालिक के प्रेम में फँसा हुआ देखा गया तो आसमान से मरेर सब्र की गर्दन में विरह की रस्सी बाँध दी गई। जिससे न अब मैं जी सकता हूँ और न मर सकता हूं। हे बगवान। फराक तथा हिजर(बिछोड़ा तथा जुदाई) को दुनियाँ में कौन लेकर आया? भगवान करे। इस हिजर का मुँह काला और फराक का खाना खराब होवे।आप एक जगह फिर फरमातें हैंम मेरे दिल में सोज का इतना तेज़ दर्द है कि यदि मैं बोलकर भी बताऊँ तो मेरी जवान जलती है और यदि चुप रहूँ तो हड्डयों के मगज का सड़ जाने का डर है।

पंचम पातशाह श्री गुरु अर्जुनदेव जी भी अपने प्यारे प्रीतम सतगुरु के बिछोड़े में कई साल तड़परते रहे। इसका कारण यह था कि श्री गुरुअर्जुनदेव जी का बड़ा भाई उनको गुरुगद्दी देने के हक में नहीं था। इसलिए उसने अपने पिता चौथे पातशाह श्री गुरुरामदास जी को कह कर किसी बहाने उनको लाहौर भिजवा दिया। उन्होंने अपने प्यारे सतगुरु का हुक्म दिल से माना। उनको अपने सतगुरु के चरण कमलों से दुर होने का बहुत दुःख था, परन्तु इसके सात सात प्रीतम की रज़ा या मर्ज़ी की महानता उनके लिए कहीं बढ़कर थी।अपने सतगुरु के दर्शन करने के लिए वह अक्ष्यन्त व्याकुल हो गएषस परन्तु बिना हुक्म के सतगुरु के चरणों में जाना भी ठीक नहीं समझते थे. प्रीतम के बिछोड़े का दुःख और मिलन की तड़प वे सहन सके। उन्होंने एक पत्र द्वारा सतगुरु महारज(श्री गुरुरामदासा जी) को इच्छा प्रकट की। कुछ दिन इन्तज़ा के पश्चात उनका कोई उत्तर न मिलने पर एक और पत्र द्वारा अपनी दर्शनों की प्रबल इच्छा को दोहराया।इस पत्र का भी उनको कोई उत्तर न मिला। उधर मिलने की तड़प ितनी तेज़ हो गई कि वह पकशी की

तरह उड़कर प्यारे सतगुरु के चरणओं में पहुँचने के लिए व्याकुल हो उठे। उन्होंने एक तीसरा पत्र और लिख कर भेजा जिसमें अपनी लाचारी बे-बसी तथा मिलने की तड़प प्रकट की। शायद उनका यह आखिरी पत्र था। अपने प्यारे शिष्य का पत्र पढ़कर मालूम हुआ कि इससे पहले भी दो पत्र आ चुके हैं। वे दोनों पत्र पिरथी चन्द के हाथ लग गए थे। जो कि उसने गुरु साहिब को नहीं दिए।गुरु साहिब के
पूछने पर पिरथी चन्द को अपनी गलती माननी पड़ी। अपने प्यारे शिष्य की तड़प को देखते हुए गुरु साहिब ने उन्को तुरन्त अपने पास बुला लिया इस तरह बिछुड़ी हुई आक्ष्मा ने अपने मालिक समुद्र में मिलकर अक्ष्याधिक खुशी तथा आनन्द प्राप्त किया।तीनों पत्र शब्द हजारे के रूप में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की पवित्र वाणी में हैं।

मेरा मनु लौचे गुर दरसन ताईं. बिलप करे चात्रिक की निआईं।
त्रिखा न उतरै सांति न आवै बिनु दरसन संत पिआरे जीउ।
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई गुर दरसन संत पिआरे जीउ।
क्ष्तेरा मुखु सुहावा जीउ सहज धुनि बाणी। चिरु होआ देखे सारिंगपाणी।
धंनु सु देसु जहां तूं वसिआ मेरे सजण मीत मुरारे जीउ।
हउ घोली हउ घोलि घुमाई गुर सजण मीत मुरारे जीउ।
इक घड़ी न मिलते ता कलिजुगु होता। हुणि कदि मिलिऐ प्रिअ तुधु भगवंता।
मोहि रैणि न विहावै नींद न आवै बिनु देखे गुर दरबारे जीउ।
हउ घोली जीउ घोलि घुमाई तिसु सचे गुरु दरबारे जीउ।
भागु होआ गुरि संतु मिलाइआ।प्रभु अबिनासी घर माहि पाइआ।
सेव करी पलु चसा न विछुड़ा जन नानक दास तुमारे जीउ।
हउ घोली जीउ गोलि घुमाई जन नानक दास तुमारे जीउ।।

मेरा मन सक्षगुरु प्यारे के दर्शनों के लिए क्षड़प रहा है और चात्रिक की क्षरह अक्ष्यन्त व्याकुल है। जिस तरह स्वांति बूंद के बिना और किसी भी पानी से उसकी प्यास नहीं बुझती। इसी तरह अपने प्यारे संत सतगुरु के दर्शनों के बिना न हृदय की प्यास बुझती है और नही शांति आती है।मैं अपने प्रीतम के ूपर बलिहार जाऊँ और उनके सुन्दर तथा मनोहर दर्शनों पर ्पने आपको बलिहार कर दूँ।हे प्यारे सतगुरु जी. तेरा मुखड़ा सुहावना है मुझ चात्रिक को आप जी के नूरी मुखड़े को देके और स्वांति बूंद रूपी पवित्र तथा अमृत वचनों को सुने हुए बहुत समय बीत चुका है।वह देश वह धरती तथा वह स्थान धन्य कहने के योग्य है, जहाँ कि आप निवास करते हैं. हे मेरे सतगुरु सज्जण तथा मित्र। मैं आप जी से बार बार बलिहार जाऊँ और अपने आप को आप जी पर कुर्बान कर दूँ।यदि आप एक घड़ी भी मुझे न मिलो क्षो मेरे लिए कलयुग बन जाक्षा है। हे प्यारे भगवान. बक्षाओ। अब आप मुझे कब दर्शन दोगे।सक्षगुरु के सच्चे दरबार को देके ेबिना न राक्ष को आराम मिलक्षा है और न ही नींद आक्षी है राक्षें जागते और तारे गिनते ही बीतती हैं। मैं सतगुरु के सच्चे दरबार पर बलिहार जाऊँ और अपने आपको कुर्बान कर दूँ। अन्त में आप फरमाते हैं कि अच्छे तथा ऊँचे भाग्य से सन्त सतगुरु से मिलाप होता है। जिस कारण व ह अळिनाशी प्रभु घर में से ही(अपने अन्दर से ही) मिल गया है। इसलिए हे अरशी मालिक। मरेरी आपके आगे यही प्रार्थना है कि मैं आप जी की सेवा में लगा रहूँ। आप अपने इस तुच्छ दास को अब अपने से एक पल के दसवें हिस्से जितनी देर भी दूर न करना।मैं आप जी का यह तुच्छ दास आप जी पर बलिहार तथा कुर्बान जाता हूँ।

भगवान की भक्तनी मीराबाई अपने प्यारे प्रीतम के विरह के अन्दर बहुत बुरी तरह से घायल हो चुकी थी. उसके चेहरे का रंग पान के पत्ते की तरह पीला हो गया। लोगों ने यह कहना शुरू कर दिया कि मीरा को कोई शारीरिक रोग लगा हुआ है. विरह के रोग का डाक्टर,वैद्य आदि क्या इलाज कर सकते हैं।वे कलेजे की पीड़ा को अनुभव नहीं कर सकते. चाहे वे शारीरिक लोगों का इलाज कर देते हैं, परन्तु विरह की दवाई या इलाज उनके पास कहाँ। मीरा बाई अपनी उस हालत का वर्णन निम्नलिखित शब्द द्वारा इस तरह करती है।

पाना जिउ पीली पड़ी रे लोग कहें पिंड रोग।छाणे लाघण महि कीआ रे राम मिलन के जोग।
बाबल वैद बुलाइआ रे पकड़ दिखाई म्हारी बांह।मूरख वैद मरम नह जाणे करक कलेजे मांह।।
जा वैदा घर आपणे रे म्हारो नाव न लेह। मैं तो दाझी बिरह की रे तू काहे कू दारू देह।।
मांस गल गल छीजिआ रे करक रहीआ गल आह।आंगलीआं की मूँधड़ी म्हारे आवण लागी बाह।
रहि रहि पापी पपीहड़ा रे पिव कउ नाम न लेह।जे कोई बिरहन साहम्ले तउ पिव कारन जिव देह।
काढ़ कलेजो मैं धरूँ रे कागा क्षूं ले जाहि।जह देसा म्हारो पिव बसे ले वै देके क्षूं खाहि।
म्हारे नातो नाम को रे अउर न नातो कोइ।मीरा बिआकुल बिरहनी रे हरि दरसन दीजो मोहि।

विरह रोग के रोगी की दुनियाँ में दवाई हीकोई नहीं है। फिर बेचारा व ैद्य रोग को कैसे पहचाने और क्या इलाज करे। विरही जीव के लिए तो अपने प्यारे प्रीतम के सुन्दर मुखड़े की झलक ही उसके इलाजा के लिए केवल एक दवाई है।अपने प्रीतम का मिलाप प्राप्त करके विरही जीव का पान के पत्ते की तरह पीला हुआ चेहरा एकदम लाल सुर्ख हो जाता है। जीव जो पहले कई जन्मों का रोगी दिखता था, अचानक ही अजीब मस्ती, अकह खुशी तथा सरूर में झूम उठता है, और उसके चेहरे पर नया निखार आ जाता है। एक कव्वाली में प्रेम रोगियों का नक्शा बड़े सुन्दर ढंग से पेश किया गया है।

शाह हुसैन जी भी विरहके असह कष्ट का बड़े सुन्दर ढंग से वर्णन करते हुए फरमाते हैं।

सज्जण बिन रातां होइआं बड्डीआं।
मास झड़े झड़ पिंजर होइआ, कण कण होईआं हड्डीआं।
इश्क छुपाइआं छुपदा नाहीं बिरहुँ तणावां गड्डीआं।
रांझा जोगी मैं जुगिआणी कमली कर कर सद्दीआँ।
कहै हुसैन फकीर साईं दा, दामन तेरे लग्गीआँ।।

विरह की गति ही न्यारी है। इसकी तेज़ भड़क रही अग्नि को ज्ञान के बल के द्वारा शांत नहीं किया जा सकता।गोपियों का श्री कृष्ण जी के प्रति प्रेम इस बात का स्पष्ट प्रमाण है. श्री कृष्ण जी महाराज के बिछोड़े ने गोपियों तथा राधा को पागल तथा सौदाई बना दिया।गोपियां श्री कृष्ण जी के प्रेम रंग में अक्ष्यन्त रंगी हुई थी।श्री कृष्ण जी उनको रोती, करुलाती तथा तड़पती हुई को छोड़ कर मथुरा जी चले गए। अपने प्यारे का बिछोड़ा उन से सहन न हुआ। वे खाना पीना आदि सब कुछ भूल के हर समय कृष्ण कृष्ण ही पुकारती रहती थीं।विरह की अग्नि जब भड़कती है तो उसकी तपश दोनों तरफ एक सी पहुँचती है। चाहे श्री कृष्ण जी गोपियों से केवल शरीर करके ही दूर थे। लेकिन मन तो हर समय गो ोपियों के प्रेम में मग्न रहता था।श्री कृष्ण जी स्वयं फरमाते हैं कि गोपियों का प्रेम प्रशंसा के योग्य है। उनके प्रेम का बदला तो दिय ही नहीं जा सकता. जिस तरह मैं हर गोपी के अन्तर हृदय में समाया हुआ हूँ इसी तरह वे भी मेरे रोम रोम में समाई हुई हैं. जब उनकी याद आती है, तो मेरा रोम रोम रो उठता है।

अपने कृष्ण को मिलने के लिए गोपियां हर समय ुतावली रहती थीं। गोपियों कीि तड़प और मज़बूरी की दशा को देखते हुए एक बार श्री कृष्ण जी ने अपने दूत ऊदो को गोलियों के पास उनको धीरज देने तथा समझाने बुझाने के लिए भेजा।ऊधो के आने का पता चला तो वे सारी की सारी उस से अपने प्रीतम प्यारे(श्रीकृष्ण जी) की बातें सुनने के लिए इकट्ठी हो गईं।गोपियों कगा श्री कृष्ण जी के प्रति प्रेम श्रद्धा तथा तड़प को देखकर ऊदो ो खुद भी भाव विभो ौर हो गया।वह उनके प्रेम तथा विरह से अक्ष्याधिकग प्रभा ित हुआ। फिर भी अपनी जिम्मेवारी निभाते हुए ऊधो ने निराकार ब्रह्म का उपदेस देना आरम्भ कर दिया।गोलियों को यह ज्ञान का व्याख्यान अच्छा न लगा। वे तो केवल कृष्ण जी की दीवानी थीं। कहने लगी हमें तो केवल प्रेम की ही बात सुना, यह रूखा ज्ञान तो किसी और को ही सुनाओ. हमारे तो श्री कृष्ण जी के बिचोड़े के कराण प्राण निकले जा रहे हैं और हमारा रोम रोम उनकी याद में घायल तथा व्याकुल हो रहा है।इस रूखे ज्ञान को छेड़कर तूँ क्यों हमारे जखमों पर नमक छिड़क रहा है। हे ऊदो. तू बिछोड़े की पीड़ा की सार क्या जान सकता है।हमारे तन से पूछ कर देख जो हर समय प्ीतम की याद में तड़फता रहता है।जिस तन लागे सोई जाणै अवर न जाणै पीर पराई।कृष्ण बगतनी मीरा बाई भी अपने एक शब्द में अपनी इस अळस्था का इस तरह वर्णन करती हैं।

हेरी मैं तो प्रेम दीवानी मेरा दर्द न जाने कोइ. सूली ऊपर सेज हमारी, किस बिध सोना होइ।।
घाइल की गति घाइल जानै, कि जिन लागी सोइ। मीरां की प्रभु पीर मिटै जब बैद सांवरीआ होइ।।

केवल वह जीव ही जानता है जिसके तन को इस विरह की अग्नि लगी हुई हैया जिसनें लगाई हो. हमारी हालत बता कर एक बार ज़रूर तथा जल्दी हमारे साँवरिये को यहाँ लेकर आऩा।

श्री कबीर साहिब जी भी इसी तरह फरमाते हैं।

हिरदे अन्दर दौं जले धुवां न परगट होइ।जा के लागी सो लखे कै जिनि लाई सोइ।।
तन भीतर मन मानिआ बाहर कहूं लाग। जाला ते फिर जल भइआ बुझी जलती आग।
लोकीं पूजण रब्ब वे मैं तेरा बिरहड़ा।।

प्रीतम तक तरावट के रास्ते ही पहुँचा जा सकता है।

परमार्थ में अपने प्रीतम के बिछोड़े के कारण उसकी याद में रोने की अक्ष्यन्त आवश्यकता है। इस तरह विरही जीव की आँकों में से गिरे आँसुओं की महानाता तथा उनकी कीमत महान है। मालिक तक आँसुओं के रासेत बहुत ही जलदी पहुँचा जा सकता है। मौलाना रूम साहिब फरमाते हैं।

हे इन्सान यदि तूं कावे पहुंचना है तो तरी(आँसुओं) के रास्ते जा. थल के रास्ते जाने की बजाए समुद्र के रास्ते बहुत जलदी मक्के पहुँचा जा सकता है। खुश्क नमाजें, खुश्क माला खुश्क पाठ जिस में को ी आँसूं न गिरे और न ही दिल बिलखे, एक तरह का थल

के रास्ते मक्के को जाना है. लोग तरी के रपास्ते बहुत जल्दी मक्के पहुँच जाते हैं।शम्स तबरेज़ जी भी इसी तरह फरमाते ेहैं।

वह आँक जो प्रीतम के बिछोड़े में रो रही है, एकदिन अवश्य उसके म िलाप के सन्देश की कुशखबरी सुनेगी. उसके प्रेम में रोना सीढ़ी का काम देता है। प्रीत् म की मेहर का यह जल एक छोर से दुसरे छोर तक फैला हुआ है। कोई भी िससे खाली नहीं हैं. यह हिजर(जुदाई) की आग कच्चों को पकाने के लिए ही है।

प्रीक्षम की याद में रोने के महक्ष्व और इसकी आवश्यकक्षाओं के संबन्ध में मौलाना रूम साहिब फरमाते हैं कि जिस तरह दाईओं का यह नियम है कि जब तक बच्चा नु रोवे वे कम ही उसको दुध पिलाती हैं. क्योंकि यह आम कहावत है कि जब तक बच्चा न रोवे दुध जोश नहीं मारता. इसी तरह यह भी प्राकृतिक नियम है कि जब तक इन्सान रो रो कर दुआ नहीं मांगता, मालिक की रहमत का दिरया जोश में नहीं आता. आगे एक जगह फिर फरमाते हैं।

जिसस तरह सूरज की गर्मी बादलों के आने ओर उनके बरसने का कारण बनती है, जिससे कि दुनियां कायम रहती है। इसी तरह विरह, फराक तथा सोज-गुदाज के सूरज की जलन के कारण मालिक की भरपुूर रहमत का बादल जोश में आकर बरसता है और जीव की ज़िन्दगी को निहाल करता है। दिल का सोज तथा आँखों से रोना दो थंम हैं जिसके रहारे उस जीव की आन्तरिक रसाई होती है।

प्रीतम के विरह में आँकों से आँसुओं क ी झड़ी और दिल की धड़कन उसके आने की पक्की निशानियाँ हैं. उस हालत में मालिक का एक बार नाम लेने और उसके नाम कीएक बार माला फेरने से उसका हज़ारों बार सिमरन तथा हज़ारों माला फेरने जितना असर होता है।

राबिया बसरी भगवान की सच्ची भक्तनी हुई है. एक बार उससे पूछा गया कि तूँ नमाज़ प्रीतम (मालिक रूप सतगुरु) के आने से पहले पढ़ती है या बाद में. राबिया बसरी कहने लगी कि पहले मालिक आता है फिर मैं नमाज़ पढ़ती हूँ। लोगों ने फिर पूछा कि तुझे उसके आने का पता कैसे चलता है?इस पर राबिया बसरी ने बताया कि जब मालिक की याद में तड़प के कारण हृदय में व्याकुलता बे-बसी जागृत हो जाती है तो आँसूं बाढ़ का रूप धारण करके आँकों से बहर निकल पड़ते हैं। वह मेरी आक्ष्मा को अपनी तरफ अक्ष्याधिक आकर्षित करता है. ये सब उसके आने की निशानियाँ हैं. वास्तव में इस हालत कगो वह आप ही पैदा करता है. ऐसी हालत बन जाने पर ही मैं उसकी नमाज़ पढ़ती हूँ।आक्ष्मा का प्रीतम की याद की मस्ती में झम उठना ही नमाज़ है।

विरह की तलवार से कबाब हुओं की भाषा दुनियाँ से अलग ही होती है. उनकी दृष्टि में बाहरी दिखावे की नमाज पढ़ने वाले ऐसे चोर हैं जो मालिक से बेमुख केवल अपने शरीर को ही घेरे हुए हैं। इसीलिए किसी ने सच कहा है, मुल्लां नूं फिक्र नमाज दा ए, आशिकां नूँ तलब दीदार दी ए। प्रीतम तो प्रेमी आशिकों के रोम रोम में बसा हुआ है।इसीलिए जब वह उसके सिजदे के लिए अपना सिर झुकाते हैं तो उनके लिए ूपर उठना अक्ष्यन्त कठिन हो जाता है।

विरह की ऐसी हालत मालिक केप्रति सच्ची तथा पक्की प्रीत होने के कारण ही उपजती है। अपने प्रीतम के स्थूल शरीर के प्रति यह विरह परमार्थ में प्रेमी के लिए बहुत मददगार सिद्ध होती है इसी शरीर के अन्दर नूरी स्वरूप के दर्शन करने और शब्द धुन को सुनने के लिए सतगुरु की देह स्वरूप से सच्ची तथा पक्की प्रीत का होना अति आवश्यक है। सतगुरु का नूरी स्वरूप उसके स्थूल शरीर की ओट में हीहोता है। यदि जीव को सतगुरु के बाहरी स्थूल स्वरूप से सच्ची प्रीति नहीं है तो विरह का पैदा होना सम्भव नहीं होता। प्रेम के आँसुओं का मुल्य--विरह मालिक के प्रक्षि प्रेम के लिए कसौटी का काम करक्षा है।जिस तरह सुनार की कुठाली में पड़कर सोना शुद्ध हो जाता है। इसी तरह विरह की कसौटी ही प्रेम-भक्ति को शुद्ध करती है। प्रीतम के गम या विरह की अग्नि में जलने की आवश्यकता पर जोर देते हुए हाफिज साहिब फरमातें हैं। हे जीव तू अपनी आँकों से आँसुओं के मोती बरसा। शायद इन मोतियों को चुगने के लिए भाव, तुझे मिलने के लिए प्रीतम रूपी राज हंस तेरे प्रेम के समुद्र में आने का इरादा कर ले।

मौलाना रूम साहिब जी भी इसी क्षरह फरमाक्षे हैं, काश. मैं मालिक की प्राप्क्षि के लिए इतना रोता कि आँसुओं का दरिया बहने लग जाता। मेरी आँखों से गिरा हर आँसू परमार्त का मोती बन जाता और उन सारे मोतियों को मैं अपने प्रीतम पर कुर्बान कर देता।

प्रीतम के बिछोड़े में प्रेमी के रोने तथा आँकों से गिरे आँशुओं की कीमत तथा कदर मालिक शहीदों के खून के बराबर गिनता है।एक कव्वाली में आता है।

तेरी अख दे सिप्प दा इक मोती, जे गुर चरनां विच टुल जावे।
तेरी सुत्ती होई किसमत जाग पवे, बूहा तेरी तकदीर दा खुल जावे। ।

अर्थात प्रीतम के चरणों में गिरा एक भी आँसू जीव की किस्मत को पलटा देता है और उसके लिए मालिक का दर सदा के लिए खुल जाता है।

प्रीतम के बना संसार में जीना दधिक्कार है---अपने प्रीतम से पहले ेही मरना अच्छा है। उसके पीछे जीव का संसार में जीना धिक्कार है. दूसरे पातशाह श्री गुरु अंगददेव जीफरमाते हैं।

जिसु पिआरे सिउ नेहु तिसु आगै मरि चलीऐ।ध्रिग जीवणु संसारि ता कै पाछै जीवणा।।

ख्वाज़ा मुहम्मद जी जब अपने मुर्शिद हज़रत ज़रज़री-जर-वख्श जी की कब्र के पास आए तो मुर्शिद की जुदाई के रंज(बिछोड़े का दुःख) को न सह सके। उनकी कब्र के ऊपर गिर पड़े और प्राण क्ष्याग दिये। कब्र पर गिरते समय उनके मुख से ये शब्द निकले। प्राण प्यारे के बिना रह जाने स कब्र में जाना अच्छा है. प्रीतम के बिना संसार में जीने से मर जाना हजार दर्ज़े अच्छा है। प्रीतम की जुदाई के विषय में एक कव्वाली में आता है।

टेक-झल्ली जांदी न जुदाई सोहणे पीर दी, न किसे दा प्यारा बिच्छड़े।
होवे अखिआं तों ओहले सोहणा यार जी, पैण बे-शुमार दुःखड़े।।

4.प्रेम सच्चे दा मैं हाल हाँ सुणावंदा। बिना गुरु दे ना होर कुझ भांवदा।
लग्गे होण ढेर दौलतां हज़ार जी, ना किसे दा प्यारा बिच्छड़े।।

5.दस्सां गुरु दे विछोड़े वाला हाल जी। बिते इक दिन बराबर कई साल जी।
कदी आँवदा ना सबर करार जी, ना किसे दा प्यारा विच्छड़े।।

7.इक पीर बिना सुन्ना दिससे जग्ग जी। लाटां मारदी जुदाई वाली अग्ग जी।
दर्शन गुरु दा सीने नूँ देन्दा ठार जी, न किसे दा प्यारा विच्छड़े।।

8.'सतनाम जी'जुदाई झल्ल सके ना। याद कर 'मस्ताना जी' नूं थके ना।
नालों एस जुदाई देन्दा मार जी, ना किसे दा प्यारा विच्छड़े।।

प्रीतम के बिना और सब कुछ काना पीना, पहनना आदि व्यर्थ है। प्रीतम के ेबिना रेश्मी कपड़ों को आग म ेंं जला देना ही उचित है, परन्तु यदि पास है तो धूल से भरी आक्ष्मा बी अतयन्त सुन्दर तथा शोभायमान लगती है।

धणी विहुणआ पाट पटंबर भाही सेती जाले। धूड़ी विचि लुड़ंदड़ी सोहां नानक तै सह नाले।।

नानक जिसु पिंजर महि बिरहा नहीं सो पिंजरू लै जारि।
फरीदा जितु तनि बिरहु न ऊपजै से तनु जाणु मसानु।।

वह सिर ही फूट जाए जो प्रीतम के चरणों में ही नहीं झुका।।

विरह का प्रभाव-मालिक के प्रति विरह जीव के लिए अक्ष्यन्त लाभकारी होती है. जिस जीव के हृदय में सच्चा विरह जाग पड़े वहां से और सब तरह के पुरे संस्कारों का ना्श हो जाता है। सच्चे विरह में एक प्रबल शक्ति है, जो वरिही जाव को हर समय अपने प्रीतम की ओर आकर्षित किए रखती है। वह शरीर के सजाने और खाने पीिने का ध्यान बिपल्कुल ही भूल जाता है। प्रीतम की ओर हर समय आकर्षित होने के कारण प्रेमी उसका ही रूप बन जाता है।सांसारिक जीव संसार की मान बड़ाई आदि के चाहवान उनके वियोग में दुःखी नज़र आते हैं। ऐसे वरिह के कराण जीव शरीर के बन्धनों से कभी भी मुक्त नहीं हो सकते. न तो वह परमार्थ की तरफ अपना मुँह कर सकते हैं और न ही दुनियां से आज़ाद होने का कोई साधन ही बना सकते हैं।

विरह केवल प्रीक्षम का ही होना चहिए। मालिक के विरह के बिना और सब वैराग व विरह व्यर्थ हैं। संसार के झूठे विरह जीव को सदा भ्रम में रखते हैं। मोह माया में फँसे जीव का मन न तो सन्तों के उपदेस को सुनता है और न ही उसके हृदय में परमार्थ व मालिक के मिलने का शौक जागृत होता है. जीव के मन पर ऐसा प्रभाव पड़ जाता है कि वह किसी भी चीज़ को उसके असली रंग(भाव) को समझ नहीं पाता. चौथे पादशाह श्री गुरु रामदास जी भी इसी तरह फरमाते हैं।

होरु बिरहा सभ धातु है जब लगु साहिब प्रीति न होइ।
इहु मनु माइआ मोहिआ वेखणु सुनणु न होइ।।

विरह की निशानियाँ--- दिल में सच्चे विरह का रोग जागना मालिक के आने की खासनिशानी है. वे जीव बधाई के पात्र हैं जिनके हृदय में मालिक का सच्चा विरह जागृत हो गया है।विरह के कारण दुःख गम या शौक ही पैदा नहीं होते बल्किइस में अनोखा रस भी होता है। इसलिए विरही जीव इस अवस्था को कभी छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। विरही जाव एकदिन अवस्य मालिक से मिलाप का सौभाग्य प्राप्त कर लेता है। परम सनत् कभीर साहिब जी विरह की निशानियों का वर्णन करते हुए फरमाते हैं।

नाम बियोगी बिकल तन ताहि न चीन्हें कोइ। तंबोली के पान जिउ दिन दिन पीला होइ।।

विहही जीव प्रीतम के बिछोड़े में इतना बेचैन तथा व्याकुल हो उठता है कि उसकी हालत को कोई भी नहीं जान सकता।वह दिनों दिन पान केपत्ते की तरह पीला होता जाता है। महाक्ष्मा चरणदास जी भी विरह की निशानियों का वर्णन करते हैं।

मुख पीरउ सूखे अधर आँखें खरी उदास। आह जो निकसे दुःख भरी गहरे लेत उसास।।

विरहन का मुख पीला, होंठ सूखे हुए और आँखें सदा ुदास रहती हैं। वह लम्बे लम्बे साँस लेती है और उसके हृदय में से दुःक भरी आह निकलती है। मौोलाना रूपम साहिब भी इसी तरह फरमाते हैं।यदि दू मुझे नहीं जानता तो तू रातों से पूछ। हाँ। तू मेरे पीले चेहरे और सूखे होठों से पूछ ले कि मेरी क्या हालत है।शम्स तबरेज़ साहिब विरह की निम्नलिखित नौ निशानियां बताते हैं।

1.प्रीतम के विरह में जीव सदा आहें भरता और दुःख भरे ठण्डे साँस लेता रहता है।
2.उसका रंग पीला पड़ जाता है। वह मालिक से मिलाप करने को लोचता है, परन्तु उसके बस की बात नहीं होती. मालिक की याद ाते ही आँखें चम छम रो पड़ती हैं. ुसके दिल में लगी उस तेज़ अग्नि को आँसुओं का जल शांत नहीं कर सकता।
3.उसकी आँखे हर समय आँसुओं से तर रहती हैं।
4.वह कम खाता है.5. वह कम सोता है।6.गहरी तथा निश्चिंत निद्रा उसके लिए हराम हो जाती है।
7.वह आहोजारी है। 8. उसे बेकरारी है।
9.वह कीरने पाता रहता है अर्थात ऊँची आवाज़ में दुहाई देते हुए रोता रहता है।
महाक्ष्मा दादू साहिब भी अपनी वामी द्वारा फरमाते हैं।
दादू बिरहन दुःख कासन कहे कासन दे संदेस।पंथ निहारत पीव का बिरहन पलटे केस।
न वहु मिलै ना मैं सुखी कहु किउं जीवन होइ।जिन मुझ कउ घाइल कीआ मेरा दारू सोइ।।
दीन दुनी सदके करूं टुक देखन को दीदार।तन मन भी छिन छिन करूँ भिसत दोजक भी वार।।
विरहन आक्ष्मा अपना दुःक किस के आगे कहे और किस को अपना सन्देश देवे? प्रीतम के इन्ज़ार में पंथ निहारती के केस भी पलसेटे खा रहे हैं, न तो प्रीतम का मिलाप होता है और न ही मैं सुख अनुभव करती हूँ। यह कैसा जीना है?जिसने मुझे घायल किया है वह ही मेरा इलाज है। अपने प्रीतम के ज़रा दर्शनों के लिए मैं दीन, धर्म तथा दुनियाँ को कुर्बान कर दूँ। अपने तन मन के टुकड़े कर दूँ और स्वर्ग-नरक आदि सब कुछ वार दूँ। खुसरो साहिब जी भी इसी तरह फरमाते हैं. हे अन्जान वैद्य मेरे सिरहाने से उठ जा। क्योंकि हिजर के दर्द का इलाज बिना दर्शनों के और कुछ नहीं है।
विरह के फल या लाभ- सच्चा विरह पैदा होने पर जीव के अन्दर मालिक के आने की स्थिति उक्ष्पन्न हो जाती है। जिससे सच में समाजाता है मालिक से मिलाप कर लेता है। जीवन का यही सब से बड़ा फल और लाभ है। विरह जागृत होने पर शरीर तथा इसके स्वाद सब फीके लगने लगते हैं।

बिरहा आिआ दर्द से कड़वा लागा काम।
काइआ लागी काल होइ मीठा लागा नाम।

प्रेम मालिक का ही रूप है। प्रेम मालिक है और मालिक प्रेम है। प्रेम औओर मालिक का आपसी संबंध इस तरह है जिस तरह सूरज और धूप दो अलग अलग होते हुए भी वास्तव म ेंं एक हैं।
प्रेम हरि को रूप है, तिउं हरि प्रेम सरूप। एक होइ दोइ यूँ बसैं जिउं सूरज और धुप।
इसलिए प्रेम जितना अधिक होगा, जिज्ञासु प्रेमी उतना ही मालिक के अधिक नज़दीक होता जाएगा। सच्चे विरह के जागृत होने से प्रीतम के प्रति सम्मान तथा प्रेम बढ़ता है। दूसरी तरफ भी इसका प्रभाव कोई कम नहीं होता। हृदय में प्रीतम का निवास हो जाने पर उस जीव की कदरक तथा कीमत बढ़ जाती है। विरह के फल बताते हुए भक्त नामदेव जी भी अपनी वाणी में फरमाते हैं।
धोबी धोवै बिरह बिराता। हरि चरन मेरा मनु राता।।
भाव प्रीतम का विरह जीव के सारे ही पुराने ेबुरे संस्कार धोकर उसको इस तरह निर्मल बना देता है, जैसे धोबी कपड़े मे से मैल निकाल कर उसको साफ तथा उज्ज0वल कर देता है। इस तरह निर्मल मन प्रबु के चरण कमलों में जुड़ जाता है। दुनियां का प्रेम जीव के लिए बन्धन का कारण होता है। परन्तु मालिक का प्रेम जीव को बन्धनों सेमुक्त करता है. विरह7 और प्रेम एक ही रूप हैं। प्रेम से ही विरह उपता है और वरिह के जागृत होने पर मालिक के प्रति प्रेम और भी ज्यादा बढ़ता है।
विरह एक भयानक नाग की तरह है। जिस के दिल में इसका निवास हो जाए, वहाँ औओर कोी जन्त्र मन्त्र काम नहीं करते। वह किसी अन्य तरीके से वश में नहीं आता। जब तक कि जीव मालिक या प्रीतम को प्राप्त नहीं कर लेता।
विरह अतयाधिक प्रभावशाली होता है। यह एक प्रबल शक्ति है। विरह केवल मालिक या अपने प्रीतम (सतगुरु) के प्रति होना चाहिए।

वास्तव में प्रीतम के सच्चे विरह के बिना यह मनुष्य जन्म निष्फल है। यदि यह जन्म ही सफल न हुआ तो इस को पाने का क्या लाभ है? प्रीतम के प्रति विरह जीव को मालिक के साथ मिला कर जन्म मरण से मुक्त कर देता है।